प्रसंगवश

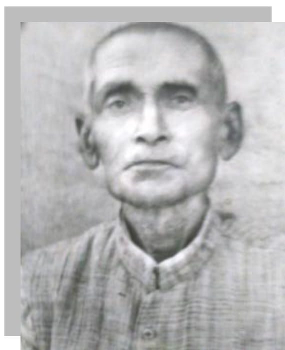
निबंध संग्रह

प्रसंगवश

निवंध संग्रह

रबीन्द्र नारायण मिश्र

समर्पण



पूज्य पिता स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्रक

संस्मरणमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

ISBN : 978-93-5291-124-0

दाम : 250रूपया

पहिल संस्करण : 2017

लेखक एवम् प्रकाशक

House No : C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No : 6 Builders Area Greater Noida
P.O.Gurjinder Vihar(AWHO)
District : Gautam Buddha Nagar
UP : 201315
M:9968502767

भारतमे मुद्रित

PRASANGVSH

Collection of Articles on burning social issues
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

भूमिका

सभ समयमे नीक बेजाए रहबे केलए। आखिर राम रावण युद्ध किएक भेल? महाभारात किएक भेल? नीक के बँचेबाक हेतु अधलाहसँ संघर्ष नितान्त जरुरी थीक। समाजक प्रवुद्ध, संपन्न लोकक दायित्व अछि जे नीक लोकक संग दैक। जँ से नहि होएत तँ स्वभाविक रूपसँ अधलाह लोक नीक पर हाबी भए जाएत,जे विनाशकारी होएत। कानूनो ऐह कय रहल अछि, समाजक पुरोधा लोकनि सेहो एही प्रयास मे लागल रहलाह जे समाजमे शुभ बिचारक विजय हो।

समाज परिवर्तनसँ गुजरि रहल अछि। बहुत रास सामाजिक समस्याक कानूनी समाधानक प्रयास भेल अछि, मुदा जाबे समाज ओहि सभकें सहर्ष स्वीकार नहि करत ताबे उठापटक चलिते रहत। अधिकारसँ बंचित, सामाजिक भेदभावक सिकार, नाना प्राकारक शोषणसँ मुक्ति हेतु प्रयत्नशील रहबे करत ।

सरकार/सरकारी संस्था द्वारा सामाजिक सुधार संभव नहि अछि। एहि हेतु हमरा लोकनिके स्वयं प्रयत्नशील होएब जरुरी अछि। कतेको एहन लोक छथि जे एहि दिशामे प्रयास कए समाजक सम्मुख दृष्टान्त उपस्थित केलाह अछि। सामाजिक समस्या सभसँ जुड़ल एहि प्रकारक घटना सभ प्रसंगवश ध्यानमे अबैत रहल जे एहि पुस्तकक रुपमे अपनेक सम्मुख उपस्थित अछि।

हमर पत्नी श्रीमती आशा मिश्र एहि आलेख सभकें सभसँ

पहिने पढ़लथि। हुनक अमुल्य सुझाव सभसँ ओहिमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरीजीक एहि काजमे निरन्तर मार्गदर्शन ओ सहयोग करैत रहलाह। श्री उमेश मण्डलजी (बेरमा, निर्मली) परिश्रम पूर्वक एहि पुस्तकक हस्तलिखित पाण्डुलिपिक स्वच्छ प्रति प्रस्तुत केलाह। एहि लेल हुनका आशीर्वाद।

आशा अछि जे पाठक एकरा पढ़ि लाभान्वित हेताह।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

१०.११.२०१७

ग्रेटर नोएडा

वरिष्ठ नागरिक

सन् २००७ मे भारतवर्षमे माता-पिता आओर वरिष्ठ नागरिकक भरण-पोषण आओर कल्याण कानून लागू भेल। एहि कानूनमे मूलत: निम्नलिखित चारिटा बिन्दुपर ध्यान राखल गेल अछि-

१. माता-पिता आओर वरिष्ठ नागरिकक आवश्यकताक अनुसार गुजाराक जोगार हेतु उपयुक्त व्यवस्था।

२. वरिष्ठ नागरिक हेतु वेहतर चिकित्साक व्यवस्था।

३. वृद्ध लोकनिक जीवन आओर सम्पत्ति केर रक्षा हेतु संस्थागत व्यवस्था।

४. प्रत्येक जिलामे वृद्धाश्रमक स्थापना।

उपरोक्त कानूनक अनुसार सन्तानक माने वालिग पुत्र, पुत्री, पौत्र, पौत्री अछि। साठि साल वा ओहिसँ अधिकक कोनो व्यक्ति केँ वरिष्ठ नागरिक कहल जाएत। नि:सन्तान वरिष्ठ नागरिकक सम्पत्तिक वारिस वा ओकर सम्पत्तिपर कब्जा रखनिहार वालिग व्यक्ति ओकर सम्बन्धी मानल जेताह। गुजारामे भोजन, वस्त्र, आवास आओर चिकित्साक उचित व्यवस्था सामिल अछि।

प्रश्न अछि जे उपरोक्त कानूनक आवश्यकता किएक भेल? अपन माटि-पानिक संस्कारमे वृद्धकेँ सदैव आदरसँ देखल जाइत छल। परिवारकेँ हुनकर ज्ञान आओर अनुभवक लाभ तँ भेटिते छल, संगहि सेवा सामान्य रूपसँ होइत रहैत छल। कालक्रमे संयुक्त परिवार टुटैत गेल। लोक गाम-घर छोड़ि कए नौकरी-चाकरीक जोगारमे महानागर चल गेल। गाममे वृद्ध असगर भए

गेलाह। सहरी वृद्धक हालत तँ आरो खराप होइत जा रहल अछि, कारण ओहिठाम लोक अलग-थलग रहैत अछि। अड़ोस-पड़ोससँ कोनो मतलब नहि रहैत छैक।

उपरोक्त परिस्थितिमे बुढ़ सभहक हालत खराप होइत गेल। जीवनक अन्तिम वर्ष संघर्षमय आओर दुखद भेल जा रहल अछि। परिवारिक भावात्मक लगाव कम भेल जा रहल अछि। कतेको वृद्ध लोकनिकेँ आमदनीक श्रोत नहि छैक आ परिवार उचित व्यवस्था नहि करैत अछि। जिनका अधिक धिया-पुता अछि ओ सभ एक-दोसरपर फेका-फेकी करैत रहैत छथि। उपरोक्त परिस्थितिसँ निपटक हेतु आओर वृद्धजनक कल्याणक हेतु ई कानून बनल। एहिसँ पूर्व सी.आर.पी.सी.क अधीन राहत हेतु मोकदमा चलि सकैत छल, मुदा ओ बहुत जटिल प्रक्रिया अछि। निपटानमे बहुत समय लागि जाइत अछि।

२००७इस्वीसँ लागू उपरोक्त कानून बहुत असरदार अछि। एहिमे तीनसँ चारि मासमे न्याय भए जाइत अछि। कोनो पक्ष ओकील नहि राखि सकैत अछि। हरेक जिलामे एहि हेतु न्यायाधिकरण अछि। न्यायाधिकरण मामिलाक सार-संक्षेपमे सुनवाइ कए १० हजार रूपैआ मासिक धरिक राहत दिआ सकैत अछि। एहि कानूनमे सभसँ विशेष बात ई अछि जे जँ माता-पिता किंवा वरिष्ठ नागरिकक सम्पत्ति हुनक सन्तान किंवा सम्बन्धी लैत छथि आ हुनकर पालन-पोषणमे कोताही करैत छथिन तँ सम्बन्धित माता-पिता वा वरिष्ठ नागरिक न्यायाधिकरणमे दर्खास्त दए सकैत छथि आ न्यायाधिकरणकेँ ओहन सम्पत्ति हस्तांतरणकेँ निरस्त कए ओहि पर माता-पिता वा वरिष्ठ नागरिकक मालिकाना हक वापस

दिआ सकैत छथि। एहि न्यायाधिकरणक निर्णयक विरूद्ध कोनो सिविल कोर्टमे सुनवाइ नहि भए सकैत अछि। जरूरत पड़लापर जिलाधिकारीक समकक्ष अधिकारीक अध्यक्षतामे गठित अपीलीय न्यायाधिकरण ओहिठाम अपील कएल जा सकैत अछि।

एहि कानूनकेँ लागू भेला पाँच वर्ष भए गेल । तथापि, गामसँ सहर धरि वृद्ध-वृद्धा लोकनिक समस्याक समाधान नहि भए सकल। तकर एकटा प्रमुख कारण ई थिक जे माता-पिता अपने सन्तानक विरूद्ध नहि बजैत छथि। लोक लाजक कारणेँ परिवारिक विषयपर चर्चो नहि करए चाहैत छथि। अपवादिक मामिलामे आसपासक लोककेँ पता लगैत छैक। थाना, पुलिस, कोर्ट, कचहरी के करत? जीवनक संध्यामे एहि तरहक फसाद करब सम्भव नहि बुझाइत अछि।

समस्या मात्र आर्थिक नहि अछि। वयोवृद्ध लोकनिकेँ शारिरिक अक्षमता आओर निर्भरता बढ़ैत जाइत छैक। जँ पैसा बैंकमे अछि तँ आनत के? जँ केओ आनियोँ देलक तँ रोज-रोज वस्तु-जात केना आएत? आबिओ जाएत तँ ओकर मनोनुकूल उपयोग कए सकताह ताहि बातकेँ के सुनिश्चित करत?

जे बात हृदय आओर श्रद्धासँ भए सकैत अछि ओकरा कानून द्वारा लागू केना कएल जाएत? जाहि वृद्ध सभकेँ सन्तान नहि अछि, हुनक समस्या आओर जटिल रहैत अछि कारण निकट सम्बन्धी हुनकर सम्पत्तिपर धपाएल रहैत छथि आ सम्पत्ति कब्जा कए निपत्ता..!

भारतीय संविधानक चारिम भागक ४१म अनुच्छेदमे वृद्ध लोकनिक हित रक्षा करबाक परामर्श अछि। मुदा ई दिशा निर्देश

होएबाक कारणेँ कानूनी अधिकार नहि दैत अछि। हिन्दू दत्तकक ग्रहणसँ भरण-पोषण अधिनियम, १९५६क अधीन पहिल बेर कानूनी तौरपर बेटा आओर बेटीकेँ माता-पिताक पालन-पोषण करबाक जिम्मेदारी देल गेल। अपराधिक प्रक्रिया संहिताक धारा १२५ मे पहिल बेर सन् १९७३ मे व्यवस्था कएल गेल जे आर्थिक रूपसँ सक्षम सन्तानकेँ माता-पिताक भरण-पोषण करबाक कानूनी दायित्व अछि। मुदा एहि कानूनकेँ व्यवस्थाक अनुसार अधिकसँ अधिक ५०० रूपैआ प्रतिमास माता-पिताकेँ भेटि सकैत छैक। उपरोक्त रकम वर्तमान समयमे देखैत हास्यास्पद लगैत अछि। ई कानून सभ धर्मक लोकपर लागू होइत अछि।

वृद्ध लोकनिक भरण-पोषण हेतु सभसँ धारदार कानून माता-पिता आओर वरिष्ठ नागरिकक भरण-पोषण आओर कल्याण अधिनियम २००७ अछि। वरिष्ठ नागरिकक जीवन संध्यामे आर्थिक कष्टक निवारण हेतु रिभर्स मोर्गेज स्कीम २००८ आनल गेल अछि। ओ अपन अर्जित मकानकेँ बैंकक पास बन्धक राखि कए ओहि एवजमे आजन्म मासिक आय प्राप्त कए सकैत छथि, संगहि ओहि मकानमे रहिओ सकैत छथि। हुनकर मृत्युक पश्चात हुनकर उत्तराधिकारी बैंकक ऋृण सूद सहित अदा कए मकान वापस अपना नामे करा सकैत छथि अन्यथा बैंक ओहि मकानकेँ बेचि कर्जक रकम चुकता कए सकैत अछि।

एहनो वृद्ध छथि जिनका सन्तान सम्पत्ति किछु नहि अछि। ओ की करताह? कानूनसँ हुनका कोनो मदति सम्भव नहि? बहुत रास वृद्धक सन्तान परदेशमे नौकरी आ कि व्यवसाय करैत छथिन। एहन बुढ़ सभ मजबूरीमे सहर अपन सन्तान लग चलि जाइत

छथि। मुदा ओहिठाम हुनका मोन नहि लगैत छनि । गाम-घर छुटबाक दरेग हरदम मोनमे कचोटैत रहैत छनि । सारांश जे वृद्धजनक जीवन-यापन आओर समुचित व्यवस्था एकटा गम्भीर समस्या भए गेल अछि चाहे ओ गाम हो, सहर हो, धनीक हो वा गरीब। सभ एहि समस्याक सिकार छथि। सभकेँ एक दिन एहि परिस्थितिसँ गुजरबाक अछि। जे आइ युवक अछि, काल्हि ओहो वृद्ध होएत। समाजिक परिस्थिति क्रमश: बिगड़िते जा रहल अछि। धिया-पुता जे देखत सएह ने आगू करत। ई बात सभ सोचैत अछि, मुदा किछु मजबूरीमे आ किछु लापरवाहीमे घरक बुढ़केँ काहि काटक हेतु विवश छोड़ि दैत छथि।

वृद्धलोकनिसँ जुड़ल एक-सँ-एक घटना नित्यप्रति समाचार पत्र, रेडियो, दुरदर्शनपर अबैत रहैत अछि। एकटा एहने घटना किछु दिन पूर्व दिल्लीमे घटल। एक वृद्ध महिलाक पतिक मृत्यु भए गेल छलनि। दिल्लीमे हुनका आलीशान भवन छलनि। पुत्र अमेरिकामे काज करैत रहथिन। बहुत दिनपर पुत्र दिल्ली अएलाह आ माएकेँ अपना संगे चलबाक प्रस्ताव केलखिन।

बेटाक बातसँ माए बहुत प्रसन्न भेलीह। दिल्लीक एकाकी जीवनसँ ओ तंग भए गेल छलीह। बेटा कहलखिन जे जखन सभ गोटे अमेरिकामे रहब तँ दिल्लीक घरक की होएत? से नहि तँ एकरा बेचि लेनाइए ठीक रहत। माए सहर्ष ई प्रस्ताव मानि लेलथि। दिल्लीक मकान बेचि देल गेल। सभटा टाका बेटाक खातामे जमा भेल। तकर बाद सभ केओ अमेरिकाक यात्राक क्रममे दिल्ली हवाई अड्डा पहुँचलाह। माएकेँ बाहर बैसा देलखिन, ई कहि कए जे टिकट कटा कए आबि रहल छथि। माए बाहर प्रतीक्षा करैत रहलीह आ

ओ किएक वापस अएताह। जखन बहुत समय बीति गेल तँ पुलिस ओहि वृद्धा लग आएल आ ओकर बात बुझलक। तखन पुलिस कहलकैक जे अमेरिकाक जहाज उड़ला तँ घण्टो भए गेलैक। बटा माएकेँ छोड़ि कए अमेरिका चल गेल। बुढ़िआ असगर कनैत रहल...।

ई बात ओकर मकान कीननिहारकेँ सेहो पता लगलैक। बुढ़िआकेँ अपन घरमे एकटा छोटसन कोठरी देलकैक। बेटा घुरि कए कहिओ हाल-चाल लेबए नहि आएल। लोककेँ कतेक धोखा भए सकैत अछि तकर ई उदाहरण अछि।

दिल्ली विश्वविद्यालयक विधि विभागक प्रोफेसर ८७ वर्षीय लोतिका सरकारक खिस्सा जगजाहिर अछि। दिल्लीक K-१/१० हौजखास इनक्लेभमे हुनकर घर छल जकरा हुनकर परिवारिक मित्र हथिया लेने छलाह। घटनाक्रम तेहन भेल जे हुनका अपने घरसँ बाहर होमए पड़ल। तखन हुनकर इष्ट-मित्र सभकेँ एहि बातक जानकारी भेल। प्रो. लोतिका सरकारक तरफसँ समाजिक संगठन वरिष्ठ नागरिक न्यायाधिकरणमे केस केलक।

तमाम पूछ-ताछक पश्चात उपरोक्त न्यायाधिकरण लोतिका सरकार द्वारा कथित उपहारमे देल गेल हुनकर घर हुनका वापस दिओलक। लोतिका सरकारक सम्पत्ति हरपनिहार एक उच्चपदस्थ पुलिस अधिकारी छलाह जे हुनकासँ दोस्तीक नाटक करैत-करैत हुनकर मूल्यवान घरकेँ कब्जा कए लेलाह। जँ दिल्लीक संभ्रान्त समाजक मदति नहि करैत तँ प्रो. लोतिका सरकारक तँ लूटा गेल छल। सेहो एहन व्यक्ति द्वारा जे स्वयं अति शिक्षित उच्च पदस्थ पुलिस अधिकारी छलाह। रक्षको यत्र भक्षकः सिद्ध भए रहल छल।

होमपेज इण्डिया द्वारा कएल गेल एकटा सर्वेक्षणक मुताबिक प्रत्येक तीनमे सँ एक वृद्धकेँ परिवारिक लोक द्वारा प्रतारणाक सामना करए पड़ैत छैक। ५६ प्रतिशत एहन मामिलाक हेतु पुत्र आओर २५ प्रतिशत मामिलामे पुत्रवधु जिम्मेदार होइत छथि। एहिमे सँ आधासँ अधिक वृद्ध एहन घटनाक बारेमे मूलतः परिवारिक प्रतिष्ठाकेँ ध्यानमे रखैत ककरो नहि कहैत छथि। एहन घटना मध्य प्रदेशमे सभसँ अधिक (४७.९२ प्रतिशत) आ राजस्थानमे सभसँ कम (१.६७ प्रतिशत) भेल। अधिकांश वृद्धक धारणा अछि जे वृद्ध लोकनिक दुर्दशा रोकबाक हेतु धिया-पुताकेँ सचेष्ट करब जरूरी अछि। वृद्ध आओर बच्चाकेँ आपसी सिनेह आओर सामंजस्य बढ़ाएब जरूरी अछि। अर्जित आत्मनिर्भरता सेहो जरूरी अछि। वृद्धजनकेँ संयुक्त परिवारमे रहबाक व्यवस्थाकेँ उत्साहित करबाक हेतु राष्ट्रीय नीति बनक चाही आओर ओहन लोक सभकेँ टैक्स आओर सरकारी नौकरीमे विशेष सुविधा देबाक चाही।

एक अन्य प्रतिवेदनक अनुसार सन् २००० सँ २०५० क बीचमे भारतक जनसंख्या ६० प्रतिशत बढ़ि जाएत। एहि अवधिक बीच वरिष्ठ नागरिकक संख्या ३६ प्रतिशत बढ़ि जाएत जे तत्काल आवादीक २० प्रतिशत होएत। ईहो कहल गेल अछि जे विश्वमे २०५० इस्वी धरि महिला वरिष्ठ नागरिकक संख्या पुरुखसँ अधिक भए जाएत। समाजमे महिलाक स्थिति ओहिना संघर्षपूर्ण रहैत अछि। ८० वर्षसँ ऊपर पुरुखक तुलनामे महिला अधिक दिन जीबैत छथि। जाहिमे अधिकांश विधवा भए गेल रहैत छथि। सर्वेक अनुसार ८० वर्षसँ बेसी आयुवर्गमे ७० प्रतिशत विधवा आओर २९ प्रतिशत विधुर छथि।

समाजक उपेक्षा आओर लिंग आधारित भेदभावक कारण विधवा वृद्धाक जीवन अपेक्षाकृत बेसी कष्टकर भए जाइत अछि। शिक्षा आओर जगरुकताक अभावमे ओ सरकारी सहायताक लाभ नीकसँ नहि उठा पबैत छथि। कएक बेर हुनकर सम्पत्तिकेँ हरपि लेल जाइत अछि आओर नाना प्रकारक प्रतारणाक सिकार सेहो होमए पड़ैत अछि।

निरंतर बढ़ैत वृद्धक जनसंख्या आ लड़खड़ाइत परिवारिक संरचना वरिष्ठ नागरिक सभहक समस्याकेँ जटिल केने जा रहल अछि। पूर्वमे किछु कानूनी व्यवस्थाक चर्चा भेल । मुदा समस्या अछि जे अपने सन्तानक विरूद्ध न्यायक मांग कए आगू बढ़एबला हजारमे केओ एक व्यक्ति होइत छथि, शेष लोक यंत्रणापूर्ण जीवन बीतबैत स्वर्ग चलि जाइत छथि।

आइसँ करीब २९ वर्ष पूर्व दिल्लीमे स्कूटरक पाछू एकटा बुढ़केँ उघारे देहे आ एकटा हाथ ऊपर उठेने जाइत देखने रहिऐक। पुछलिअनि जे ई एना किएक छथि? तँ आसपासक लोकसभ कहलक जे किछु साल पूर्व हुनका अपन बेटाक संगे किछु विवाद भए गेल रहनि आ ओ हुनकर अँगा फाड़ि देलखिन । तहिआसँ ओ अँगा पहिरब छोड़ि देलखिन आ विरोध-स्वरूप एकटा हाथ सदिखन आकाश दिस केने रहैत छथि। ..सोचल जा सकैत अछि जे ओहि पिताकेँ कतेक आन्तरिक कष्ट भेलनि जे एहन रूप धए लेलथि ।

समस्या तँ ई अछि जे घर-परिवारसँ अनादृत, उपेक्षित होइतहु वृद्ध लोकनि जाथि तँ कतए जाथि? कोनो दोसर विकल्प नहि बुझाइत अछि? नौकर-चाकरपर निर्भरता कतेको बेर जानलेबा साबित होइत अछि। घरमे असगर रहनिहार बुढ़क समस्या तँ

आओर जटिल भए गेल अछि।

सरकारी आओर गैर-सरकारी संस्था द्वारा वरिष्ठ नागरिकक हेतु आवास सहित आन व्यवस्था सभ सेहो कएल गेल अछि । मुदा ओ अपर्याप्त अछि। दिल्ली, फरीदावाद, नोएडामे एहन कतेको आवास (ओल्ड एज होम) अछि। परन्तु, एहि सभ ठाम रहनिहार वृद्ध लोकनिक हालत कोनो नीक नहि कहल जा सकैत अछि। कलकत्तामे डीगनीटी फाउण्डेसन, प्रोग्राम आदि नामसँ कतेको एहन संस्था सभ एहि क्षेत्रमे काज कए रहल अछि। मुदा वृद्ध लोकनिक संख्या देखैत एहन सुविधा नगण्य अछि। फेर अधिकांश बुढ़ तँ ग्रामीण क्षेत्रमे रहि रहल छथि। जाहिठाम परिवारक अतिरिक्त कोनो प्रकारक सहायताक सम्भावना नहि अछि।

सरकार वरिष्ठ नागरिक लोकनि लेल कएटा सुविधा सभ दैत अछि, जेना- रेल टिकटमे छूट, अस्पतालमे अलग खिड़की, पोस्ट ऑफिस, बैंक आदि सन सार्वजनिक स्थानपर अतिरिक्त सुविधा,मुदा व्यवहारमे ई सुविधा सभ पर्याप्त नहि होइत अछि। सामान्यतः वृद्ध लोकनिकेँ झगड़ा करएपर मजबूर होमए पड़ैत छनि। एहि मामिलामे दिल्लीक मेट्रोमे निश्चय बेहतर व्यवस्था अछि। वरिष्ठ नागरिककेँ आसानीसँ आरक्षित स्थानपर बैसए देल जाइत अछि।

दिल्ली लोदी गार्डेनमे भोरमे टहलएबला लोकसभक हुजुम रहैत अछि। ओहिमे कएटा संगठित समूह बनि गेल अछि, जाहिमे अधिकांश वरिष्ठ नागरिक लोकनि छथि। ओ सभ भोरकेँ टहलै तँ छथिहे संगे आपसमे भेँट-घाँट आ गप्प-सप्प सेहो करैत रहैत छथि। श्री भुरेलाल (सेवा निवृत्त आइ.ए.एस.) क ठाकुरद्वारा ट्रस्ट सेहो

ओहिठाम बहुत सक्रिय अछि। वृहस्पति दिनकेँ नि:शुल्क चाहक व्यवस्था ओतए रहैत अछि। टहलला पश्चात सभ ओतए एकत्र होइत छथि, चाह पीबैत छथि आ आपसमे अपन-अपन नीक-अधलाहक चर्च-बर्च करैत, हाँ-हाँ–हीं-ही करैत सभ केओ घर घुमै छथि।

एहि सम्पर्कक प्रभावसँ कएटा वृद्धकेँ घोर विपत्तिसँ उबड़ैत फेरसँ नव उत्साहक संग जीबैत देखिलहुँ। ठाकुरद्वारा ट्रस्ट एकटा गैर-सरकारी संगठन अछि जे कतेको तरहक सेवा कार्य करैत अछि। कोशीक जखन बाढ़ि आएल छल तँ अहू ट्रस्ट द्वारा ट्रक भरि सहायता-सामग्री लए कए लोकसभ ओतए जरूरतमन्द लोकनिकेँ बीच बितरित केलनि। लोदी गार्डेनमे सेहो समय-समयपर अनेको कार्यक्रम ई सभ आयोजित करैत रहैत छथि।

हौज खास, दिल्ली स्थित डियर पार्कमे सिनियर सिटिजन कॉसिल, दिल्लीक नामक एकटा संस्था अछि जे वरिष्ठ नागरिकक सुख-सुविधा आ मनोरंजनक लेल व्यवस्थामे लागल रहैत अछि। समय-समयपर ओ सभ विदेश भ्रमणपर सेहो जाइत रहैत छथि। भोरमे ७ बजेसँ ८:३० बजे धरि नित्य ‘योग व्यायाम’ सहित अन्यान्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन कएल जाइत अछि। पाँच सएसँ अधिक नागरिक एहि संस्थाक सक्रिय सदस्य छथि। किछु दिन पूर्व केन्द्र सरकार गरीबी रेखासँ नीचाँबला वरिष्ठ नागरिकक हेतु मुफ्तमे छड़ी, चश्मा आ कानमे लगबएबला उपकरण देबाक घोषणा केलक अछि। जिलाक कलक्टरक अधीन गठित एकटा समिति एहन लाभार्थीक पहचान करत। उपरोक्त समिति कानमे लगबएबला मसीन, चश्मा आ नकली दाँत इत्यादि वरिष्ठ

नागरिकक हेतु बनेबाक लेल मूलभूत मेडिकल परीक्षण सेहो कराएत ।

एहि तरहें सरकार ओ समाजसेवी लोकनि वरिष्ठ नागरिकक कल्याण हेतु बहुविध प्रयास कए रहल छथि। मुदा ई समस्त प्रयास मिलिओ कए परिवारक स्थान नहि लए सकैत अछि। अस्तु, जरूरी अछि जे आधुनिकता आओर वैश्वीकरणक प्रवाहमे हमरा लोकनि अपन संस्कारकेँ नहि बिसरी। माता-पिता, आओर अन्य वरिष्ठ नागरिकक प्रति अपन दायित्व निर्वाह आनन्दपूर्वक करी जाहिसँ ओ गर्वसँ जीबथि आ शान्तिसँ अपन जीवनक यात्रा पूर्ण करथि।

समाजमे एहन लोककेँ उत्साहित करक चाही जाहिसँ अधिकांश लोक अपन माता-पिताक सेवा कानूनक भयसँ नहि अपितु, कर्तव्यक भावनासँ करथि। एहि उद्देश्यसँ पटना स्थित आचार्य किशोर कुणालजी द्वारा स्थापित महावीर मन्दिर ट्रस्ट द्वारा श्रवण कुमार पुरस्कार पुत्र द्वारा माता-पिता आ पुतोहु द्वारा ससुरक सेवा केनिहारकेँ देल जाइत अछि। समाजमे वरिष्ठ नागरिकक जीवन सुगम करबामे एहि तरहक प्रयास निश्चय प्रेरणादायी भए सकैत अछि।

अस्तु, समाजमे वृद्ध लोकनिक आदर, सम्मान ओ सेवा बढ़ए से संस्कार बच्चेसँ धिया-पुताकेँ देल जाए, एहिमे सभहक कल्याण अछि।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन:

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विधा यशोवलम्।



इच्छा पत्र

मृत्यु अवश्यंभावी थिक। एक दिन सभ व्यक्ति एहि दुनिआसँ सभ किछु छोड़ि कए चल जाइत अछि। जीवन भरिक स्वअर्जित आओर पैत्रिक सम्पत्ति अही ठाम रहि जाइत अछि। सवाल अछि जे एहि तरहेँ छोड़ल गेल सम्पत्तिक की होएत? ओकर मलिकाना हक ककरा भेटत..?

कतेक बेर एहि प्रश्नक उत्तर तकबामे वर्षो लागि जाइत अछि। लोक आपसेमे लड़ि जाइत अछि। भाए-भाएक दुश्मन भए जाइत अछि। आब तँ भाएक अलाबा बहिनो सभ एहि युद्धमे कुदि जाइत छथि, खास कए तखन जखन सम्पत्तिक मूल्य अधिक हो, सहरी सम्पत्ति किंवा गामो-घरक सड़कक कातक सम्पत्ति सभ फसादक जड़ि भए रहल अछि। कतेको ठाम छोट-छोट विवाद लए कए अहंक टकराव भए जाइत अछि। कोनो पक्ष सुनबाक हेतु तैयार नहि। तखन की होएत? जँ मृत्त व्यक्ति इच्छा पत्र (Will) कए गेल छथि तँ विवाद नहि होएत, नहि तँ सालक-साल मोकदमा चलत, जाहिसँ कोट-कचहरीक चक्कर लगबैत रहू...।

हमरा एकटा नामी ओकील कहलनि- "एकटा छोट सन जमीन–जकर मूल्य ७-८ लाख हेतैक–ताहि पर दू भैयारीमे विवाद छैक, अहंकारवश केओ हटए लेल तैयार नहि। एक भाए सात लाख टका फीसक रूपमे हमरा दए चुकल अछि। एतबे नहि, एक-आध लाख आरो भेटबे करत।"

कहक माने जे सम्पत्तिक जतेक मूल्य होइत से ओकील साहेब ओसूल कए चुकल छथि। तैओ लड़ाकू भैयारीमे सँ केओ

पाछू हटए लेल तैयार नहि अछि! एहि तरहक लड़ाइमे कएकटा पुस्तैनी मकान खण्डहर भए जाइत अछि। अस्तु, ई जरूरी ओ नितान्त आवश्यक अछि जे जिनका कोनो प्रकारक–माने चल वा अचल–सम्पत्ति अछि, से मृत्युक पूर्व इच्छा पत्र बना लेथि, कारण मृत्युक तारिख के जनैत अछि?

जँ कोनो व्यक्ति मृत्युसँ पूर्व इच्छा पत्र (वसीयत) कए जाइत छथि तँ हुनकर सम्पत्तिक हस्तान्तरण स्वत: ओहि व्यक्तिकेँ भए जाएत जकरा सम्बन्धित इच्छा पत्रमे सम्पत्तिक अधिकारी बनाओल गेल रहत। ओ व्यक्ति माता, पिता, पुत्र, पुत्री, भाए, बहिन, भातिज, मित्र वा केओ अन्य भए सकैत छथि। परन्तु, जँ सम्पत्तिक मालिक बिना इच्छा पत्र बनओने मरि जाइत छथि (Intestate) तखन ओहि सम्पत्तिक हस्तान्तरण आ कि बँटबारा कानूनक अनुसार कोर्ट द्वारा होइत अछि।

एहि प्रक्रियामे सालो लागि सकैत अछि। खास कए जखन सम्बन्धित पक्ष परस्पर विरोधी दाबा करैत हो। यदि सम्बन्धित पक्ष समझदार होअए, आपसमे सहमति होइक तखन एहि तरहक सम्पत्तिक निपटान असानीसँ भए जाएत। मुदा कतेको बेर सम्पत्तिकेँ मूल्यवान होएबाक कारणे बहिन वा बेटीक हक नहि देबाक कारण किंवा अहंक टकरावक कारण सम्पत्तिक बँटबारा/हस्तान्तरण परिवारिक कलह केर कारण भए जाइत अछि। अस्तु, उचित ओ आवश्यक थिक जे जँ अहाँकेँ सम्पत्ति अछि तँ तकर मृत्योपरान्त निस्तारण हेतु वसीयत (Will)अबश्य करी। वसीयत कोनो व्यक्ति द्वारा मृत्युक बाद ओकर स्वअर्जित सम्पत्तिक उत्तराधिकारीक बारेमे कानूनी घोषणा अछि जे ओहि

व्यक्तिक जीवनकालमे बदलल वा रद्द कएल जा सकैत अछि। मृत्युक बाद ओ लागू भए जाइत अछि। पैतृक सम्पत्तिक बारेमे वसीयत नहि कएल जा सकैत अछि। अस्तु, वसीयत द्वारा स्वअर्जित सम्पत्तिक उत्तराधिकारी निर्धारित कएल जा सकैत अछि।

भारतीय उत्तराधिकार कानून १९२५क धारा-२ (एच) मे वसीयतक कानूनी व्याख्या कएल गेल अछि। उपरोक्त कानूनक धारा ५ क अनुसार वसीयत वा बिना वसीयतक स्वअर्जित सम्पत्तिक व्यवस्था कएल गेल अछि।

वसीयत केनिहारक बएस कम-सँ-कम २१ वर्ष होएबाक चाही। ओकरा मानसिक रूपसँ स्वस्थ होएबाक चाही तथा बिना कोनो दबाबमे वसीयत करक चाही, एहि सभ बातकेँ ओहिमे उल्लेख करक चाही।

इच्छा पत्र वसीयत केनिहारक जीवन कालमे करवनो ओकरा द्वारा बदलल जा सकैत अछि, संशोधित कएल जा सकैत अछि। मुदा वसीयतकर्त्ताक मृत्युक बाद ओ तुरन्त लागू भए जाइत अछि। वसीयतक हेतु जरूरी अछि जे वसीयतकर्त्ता स्वेच्छासँ वसीयतमे अपन सम्पत्तिक वितरण करए। ओहि व्यक्तिकेँ मानसिक रूपसँ स्वस्थ होएब जरूरी अछि जाहिसँ ओ निर्णय लेबक स्थितिमे हो।

भारतमे इच्छा पत्र तैयार करबाक विधि बहुत असान अछि। सादा कागजपर बिना कोनो स्टाम्प पेपरक इच्छा पत्र टंकित कएल जा सकैत अछि। मुदा हस्तलिखित इच्छा पत्र कतेको कानूनी विवादमे लाभकारी भए सकैत अछि। वसीयतकर्त्ताकेँ इच्छा पत्रक प्रथम अनुच्छेदमे स्पष्ट करक चाही जे ओ स्वेच्छासँ बिना कोनो

दबाबक पूरा होसमे वसीयत कए रहल अछि। तकर बाद समस्त सम्पत्तिक एक-एक कए फराक-फराक वर्णन होएबाक चाही। सम्पत्ति सभहक तत्कालीन मूल्य स्पष्टत: इच्छा पत्रमे लिखबाक चाही। तमाम बहुमूल्य कागजात रखबाक स्थान ओहिमे स्पष्टतासँ लिखल जाए जाहिसँ समयपर ओ भेटि जाए।

वसीयतक भाषा सरल होएबाक चाही। वसीयतकर्त्ताक पूरा नाम लिखबाक चाही। वसीयतक सम्पत्तिक स्पष्ट विवरण होएबाक चाही। प्रस्तावित कानूनी उत्तराधिकारीक पूरा नाम होएबाक चाही। अन्तमे दूटा गवाहक नाम व पताक संग ओकर हस्ताक्षर होएबाक चाही। गवाह सामान्यत: ओहन व्यक्तिकेँ बनाबक चाही जे वसीयतकर्त्तासँ बएसमे छोट होथि। यदि गवाहक मृत्यु पहिने भए जाइत अछि तँ फेरसँ वसीयत बना कए नव गवाहक हस्ताक्षर कराबक चाही।

इच्छा पत्रमे हस्ताक्षरक संग तारिख अबश्य लिखबाक चाही। जँ एकसँ अधिक बेर इच्छा पत्र बनाओल गेल तँ अन्तिम इच्छा पत्र लागू होइत अछि। बढ़िआँ होएत जे अन्तिम इच्छा पत्रमे पूर्व इच्छा पत्र सभकेँ निरस्त करबाक चर्च होइक। इच्छा पत्रकेँ जस-के-तस लागू करबाक हेतु विश्वासपात्र आओर जानकार व्यक्तिकेँ निष्पादक (Executor of will) बनाबक चाही जाहिसँ वसीयतकर्त्ताक मृत्युक बाद वसीयतकेँ बिना लाइ-लपटक अमलीजामा देल जा सकए। वसीयतकर्त्ताकेँ चाही जे ककरो निष्पादक (Executor) नामित करएसँ पूर्व ओकर सहमति लए लेल जाए।

वसीयतकर्त्ताकेँ दूटा गवाहक समक्ष हस्ताक्षर करक चाही।

गवाहक पूरा नाम, पता सहित ओकर हस्ताक्षर जरूरी अछि। गवाह जँ चिकित्सक होइक तँ बढ़िआँ जाहिसँ ओ स्पष्ट करत जे वसीयतकर्त्ता दिमागी रूपसँ स्वस्थ अछि। गवाह ओ निष्पादक अलग-अलग व्यक्ति होएबाक चाही। वसीयतमे सम्पत्तिक हकदार गवाह नहि भए सकैत छथि। वसीयतक प्रत्येक पृष्ठपर संख्या लिखल जेबाक चाही आओर गवाह आओर वसीयतकर्त्ताक स्पष्ट हस्ताक्षर होएबाक चाही। अन्तमे कुल पृष्ठ संख्या लिखल होएबाक चाही। एहि प्रकारसँ तैयार वसीयतकेँ राखी कतए? कारण वसीयतक काज तँ ओहि व्यक्तिक मृत्युक बादे पड़ैत अछि आ तखन ओहि विषयमे किछु कहक स्थितिमे नहि रहैत अछि।

अस्तु, वसीयतक दूटा मूल ओ हस्ताक्षरित प्रति बनाबी तँ बढ़िआँ। एकटा प्रति बैंक लॉकरमे ओ दोसर प्रति निष्पादक वा तेहन विश्वस्त व्यक्तिक संग रहक चाही। असलमे चाही तँ ई जे तमाम चीज, वस्तु, वसीयत, पासवर्ड आदिक जानकारी एकटा डायरीमे लिखि कए छोड़ि दी जाहिसँ मृत्युपरान्त अहाँक वारिसकेँ परेसानीसँ बँचौल जा सकए। एकबेर वसीयत केलाक बाद आवश्यकता भेलापर पूरक वसीयत द्वारा मूल वसीयतमे संधोधन कएल जा सकैत अछि। मुदा बेर-बेर एहन केलासँ वसीयतकेँ बदलि कए नव वसीयत बना लेबाक चाही। वसीयतकेँ निबन्धित कराबक आवश्यकता नहि अछि, मुदा जँ वसीयत द्वारा कोनो समाजसेवी संस्था (Chariable Organisation) केँ धन देबाक हो तखन वसीयतकेँ निबन्धित कराएब जरूरी अछि।

जेना कि पहिने चर्च कए चुकल छी, वसीयत सम्बन्धित वसीयतकर्त्ताक मृत्युक बादे लागू होइत अछि। जँ ओहिमे स्पष्टता

नहि रहत तँ मृत व्यक्ति तकर व्यारव्या करक हेतु घुरि नहि आएत। तेँ वसीयतक भाषा सरल, स्पष्ट ओ बाध्यकारी होएबाक चाही। किन्तु-परन्तुसँ बँचबाक चाही। ओहि परिस्थितिक विचार होएबाक चाही जकर घटित होएबाक सम्भावना जीवनमे बनल रहैत अछि। वसीयत केलाक बादो सम्पत्तिक मालिककेँ मृत्युसँ पूर्व ओकर निपटान करबाक अघिकार बनल रहैत अछि।

कोनो व्यक्ति जे कानूनी रूपसँ सम्पत्ति रखबाक अधिकारी अछि, वसीयतमे सम्पत्ति पाबक अधिकारी भए सकैत अछि। ओ नवालिग, भगवानक मूर्ति, कोनो तरहक कानूनी व्यक्ति (Junstic person) भए सकैत छथि। यदि कोनो नवालिगकेँ वसीयत द्वारा सम्पत्तिक उत्तराधिकारी धोषित कएल जाइत अछि तरवन वसीयतकर्त्ता द्वारा अभिवावक नियुक्ति जरूरी अछि जे एहि तरहेँ देल गेल सम्पत्तिक ओकरा वालिग हेबाकाल धरि बवस्था करताह।

हिन्दू उत्तराधिकार कानून १९५६ क धारा ३०क अनुसार स्वअर्जित चल वा अचल सम्पत्तिक वसीयत द्वारा उत्तराधिकारी निर्धारित कएल जा सकैत अछि। वसीयतकर्त्ताक मृत्युक बाद वसीयतमे उल्लिखित उत्तराधिकारी सम्बन्धित न्यायालय द्वारा प्रोवेटक हेतु प्रार्थना कएल जाएत। प्रोवेट न्यायालय द्वारा आम प्रमाणित वसीयत थिक। प्रोवेट कोनो वसीयतक कानूनी रूपसँ पक्का होएबाक निर्णायक प्रमाण थिक। यदि कोनो उत्तराधिकारी द्वारा वसीयतकेँ कानूनी चुनौती देल जाइत अछि तँ सम्बन्धित पक्षकेँ नोटिस जारी होएत, सभ अपन पक्षमे न्यायालयमे राखि सकैत अछि। आ सभहक बातक विचारक बादे न्यायालय प्रोवेट जारी करत। न्यायालय प्रोवेट जारी करबासँ पूर्व सुनिश्चित करैत

अछि जे वसीयतपर दस्तखत वास्तवमे वसीयतकर्त्ताक अछि ओ गवाह सभ वसीयतक समय मौजूद छल। वसीयत द्वारा हस्तान्तरित सम्पत्तिक मालिकाना हकपर प्रोवेट कोर्ट विचार नहि करैत अछि। ओ तँ मात्र एतबे निर्धारित कए दैत अछि जे वसीयत (इच्छा पत्र) सही अछि कि नहि। वसीयतमे प्राप्त सम्पत्तिक मालिकाना हकपर सिविल न्यायालयमे सम्पत्तिक सम्बन्धित पक्षकार द्वारा चुनौती देल जा सकैत अछि। कहक माने जे जँ वसीयतमे देल गेल सम्पत्तिपर वसीयतकर्त्ता पूर्ण अधिकार नहि अछि, ओ सम्पत्ति ओकर स्वअर्जित नहि अछि आ तखनो ओकरा वसीयत द्वारा दए देल गेल अछि तखन ओकरा सम्बन्धित पक्षकार द्वारा सिविल न्यायालयमे चुनौती देल जा सकैत अछि।

सारांश जे इच्छा पत्र द्वारा सम्पत्तिक हस्तांतरण हेतु जरूरी अछि जे सम्बन्धित सम्पत्ति स्वअर्जित होइक। इच्छा पत्रक भाषामे कोनो ओझर नहि होइक। ताहि लेल बढ़िआँ होएत जे इच्छा पत्र (वसीयत) कोनो योग्य अधिवक्ता द्वारा बनाओल जाए, जाहिसँ इच्छाकर्त्ताक मृत्युक बाद ओहि सम्पत्तिक हस्तांतरणमे कोनो विवाद नहि होइक। विवादसँ बँचबाक लेल तँ इच्छा पत्र बनओले जाइत अछि। तेँ ओकरा स्पष्ट ओ कानूनी रूपसँ पक्का होएब बहुत जरूरी अछि।

समयक कोन ठेकान। भविष्यक झंझट तय कए जाउ। अपन अर्जित सम्पत्तिक वसीयत (इच्छा पत्र) बना कए राखि दिऔक आ चैनक वंशी बजाउ।◌

क्रोध

मनुक्ख भावुक प्राणी होइत अछि। दैहिक आवश्यकताक पूर्तिक संगहि संग ओकर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताक पूर्ति सेहो आवश्यक अछि। जखन केओ ककरो दैहिक वा मानसिक कष्ट दैत अछि तँ ओकरा मोनमे क्रोधक प्रादुर्भाव होइत छैक।

अतएव क्रोधक हेतु आवश्यक थिक जे केओ ककरो कष्ट पहुँचबैक संगहि ईहो आवश्यक जे कष्ट पहुँचेनिहारक पता होइक। अज्ञात व्यक्ति द्वारा उत्पन्न कष्ट किंवा स्वयं अपनेसँ भेल कष्टपर क्रोध नहि होइत अछि। उदाहरणस्वरूप अगर दाढ़ी बनबए-काल गालक चमरी कटि जाए, खून बहि जाए वा हाथक लोढ़ा धोखासँ पैरपर खसि पड़ए आ पैरक आँगुर थकुचा जाए तँ क्रोध नहि होएत। अपितु, पश्चाताप होएत जे एना बेसम्हार दाढ़ी नहि काटक छल वा लोढ़ाकेँ सम्हारि कए रखबाक छल। किंतु जँ केओ आन हमरा पाथरसँ मारए किंवा मारबाक उपक्रमो करए तँ तामस धड़ दए भए जाएत।

क्रोधक भोजन थिक विवेक। विवेके रहलासँ मनुक्ख जानवरसँ फराक अछि। मनुक्ख सोचि सकैत अछि। नीक-बेजाए केर विचार कए सकैत अछि। ई सभ विवेकसँ उत्पन्न होइत अछि। मुदा जाहि मनुक्खक विवेक नष्ट भए जाइत छैक ओ बहुत रास अनुचित कथा बजैत अछि आओर कर्म आ अकर्मक बीच भेदभाव बिसरि जाइत अछि। क्रोध अबिते नीक-सँ-नीक लोकक विवेक मरि जाइत छैक। आकृति बिगैड़ जाइत छैक आओर रक्तचाप बढ़ि जाइत अछि। क्रोधावेगमे मनुक्ख गड़बड़ काज कए लैत अछि।

अर्थ-अनर्थक भेद बिसरि जाइत अछि आ तेँ स्वभाविक रूपेँ विनाश दिस अग्रसर भए जाइत अछि।

क्रोधक प्रवल वेगमे मनुक्ख इहो नहि सोचि पबैत अछि जे ओकरा जे कष्ट पहुँचओलक तकरा एहन अभिप्राय रहैक वा नहि। एहि प्रकारक सभसँ नीक दृष्टान्त चाणक्यक ओहि आचरणमे भेटैत अछि जखन केओ कुश गड़ि जेबाक कारणेँ सभ कुशकेँ उखाड़ि ओकरा जड़िमे घोर देबए लगलाह।

कतेक बेर एहन होइत अछि पाथरसँ चोट लगलासँ लोक पाथरेपर चोट करए लगैत अछि। एहन क्रोधकेँ जड़ क्रोध कहल जाइत अछि। कारण क्रोधीकेँ एतबो अन्दाज नहि रहैत छैक जे ओ गलत स्थानपर गलत रूपेँ क्रोध कए रहल अछि।

क्रोधक जन्म कष्टसँ होइत अछि। स्वभाविक अछि जे जकरामे सहनशीलता जतेक बेसी हेतैक तकरा क्रोध ततेक कम हेतैक। वर्तमान समयमे बढ़ैत महत्वाकांक्षा आओर वैज्ञानिक विकासक कारणेँ पारस्परिक टकरावक सम्भावना सेहो बढ़ि गेल अछि। जखन एक्के वस्तुक हेतु कएक गोटे प्रयत्नशील हेताह तँ संघर्ष अनिवार्य भए जाइत छैक तथा असफल रहनिहार व्यक्तिकेँ क्रोध होएब स्वभाविक।

क्रोधमे लोकक आत्मसंयम समाप्त भए जाइत छैक। एहि अवस्थामे लोक बहुत रास अन्ट-सन्ट बाजि जाइत अछि। परिणामस्वरूप पुरान-सँ-पुरान सम्बन्ध ओ मित्रता नष्ट भए जाइत छैक। तेँ उचित जे तामसमे गुम्म भए जाइत। जँ केओ तमसाएल अछि तँ ओ अन्ट-सन्ट बाजि सकैत अछि, जे सुनि हमहु उत्तेजित भए सकैत छी। परिणामत: मारि-पीट वा एहने कोनो अशुभ काज

भए सकैत अछि। तैँ उचित जे जतए उत्तेजना होइक ताहिठामसँ हटि जाइ जाहिसँ अनुचित कथा ओ काज देखि हमरो उत्तेजना नहि भए जाए।

क्रोधक सीमित ओ संयत प्रयोग लाभकारी भए सकैत अछि। मानि लिअ जे केओ गोटे अहाँक टका रखने अछि आ लाख प्रयासक अछैतो ओ टका वापस नहि कए रहल अछि । तखन क्रोधक प्रयोग केलासँ भए सकैत अछि ओ व्यक्ति टका वापस कए दिए। परन्तु, एहन लाभकारी क्रोध करबामे आत्मसंयमक प्रयोजन होइत अछि कारण क्रोध करैत-करैत जँ सीमोल्लंघन भए गेल, बहुत रास तामस भए गेल तँ परिणाम अनिष्टकारी भए सकैत अछि। टका तँ जेबे करत ऊपरसँ मारिओ लागि सकैत अछि।

क्रोधक प्रयोग प्रतिकारक हेतु सेहो होइत अछि। जँ ट्रेनसँ यात्रा करैत केओ धक्का मारि दैत अछि किंवा ट्रेनसँ धकिया कए नीचाँ खसा दैत अछि तँ ओकरापर कसि कए तामस भए जाइत अछि। परिणामस्वरूप हमहुँ ओकरा दण्ड देबए चाहैत छिऐक। यद्यपि एहि बातक कोनो सम्भावना नहि रहैत छैक जे ओहि आदमीसँ दुबारा कहिओ भेँट होएत वा नहि।

क्रोधक प्रयोग यदा-कदा आत्म रक्षामे सेहो होइत अछि। कारण जँ केओ व्यक्ति अहाँकेँ कोनो प्रकारक क्षति पहुँचा दैत अछि तँ अहाँक स्वभाविक इच्छा रहैत अछि जे दुबारा फेर एहने क्षति नहि हो। तैँ ओहि व्यक्तिपर क्रोधक प्रयोग कए घटनाक पुनरावृत्तिकेँ रोकबाक प्रयास कएल जाइत अछि। एहि प्रकारसँ कएल गेल क्रोधमे आत्म रक्षाक भाव बेसी होइत अछि।

क्रोधक सिकार नीक-सँ-नीक लोक भए जाइत अछि। कोनो

आवश्यक नहि जे अहाँ कोनो गलती केने होइक आ तेँ अहाँकेँ कोपभाजन होमए पड़ल हो। असल बात तँ ई थिक जे क्रोधित मनुक्खक दृष्टिमे जँ अहाँ कोनो प्रकारसँ क्षति पहुँचेबाक चेष्टा कएल अछि तँ ओ क्रोधित भए जाएत। एहन परिस्थितिमे क्रोधसँ बँचबाक एक मात्र साधन सहनशीलता थिक।

क्रोध दुखक चेतन कारणक साक्षात्कार वा परिज्ञानमे होइत अछि। अतएव जतए कार्य कारणक सम्बन्धमे त्रुटि होएतैक ओतए क्रोधमे धोखा भए सकैत अछि। दोसर बात जे क्रोध केनिहार लोक जेमहरसँ क्रोध अबैत छैक तेम्हरे देखैत अछि।

अपना दिस नहि देखैत अछि। क्रोधक ई प्रवल इच्छा होइत छैक जे जे व्यक्ति ओकरा कष्ट देलक अछि ओकर नाश होइक मुदा ओ कखनो ई नहि सोचि सकैत अछि जे ओ जे कए रहल अछि से अनुचित छैक, किंवा तकर की परिणाम हेतैक।

कखनो-कखनो लोक क्रोधमे अपने माथ पटकए लगैत अछि। तकर कारण जे हुनकर एहि काजसँ हुनक निकट सम्बन्धी, जिनकासँ ओ क्रुद्ध रहैत छथि, हुनका कष्ट होइत छनि । तेँ क्रोधमे जँ केओ अपन माथ पटकए किंवा स्वयंकेँ कहुना कष्ट दिअए तँ बुझी जे ओ कोनो अपने व्यक्तिपर कुद्ध अछि।

कोनो बातसँ खौंझाएब क्रोधक एकटा रूप छिऐक। एहन व्यक्ति मानसिक रूपसँ रोगग्रस्त होइत छथि। ओ सामान्यत: छोट-मोट गड़बड़ी भेलासँ खौंझा जाइत छथि। कतेको बूढ़केँ अहाँ कोनो गप्प कहिऔक, सुनिते देरी ओ ठेंगा लए कए दौरि जाएत। क्रोधक ई रूप सामान्यत: वृद्ध वा रोगीमे देखिना जाइत अछि।

चाहे जे हो एतबा तँ निर्विवादे जे क्रोधक परिणाम साइते

नीक होइत अछि। सामान्यत: क्रोधमे समस्याक समाधान होएबाक बदलामे नव-नव समस्याक प्रादुर्भाव भए जाइत अछि। क्रोधक आवेगमे कएल गेल गलती कतेको बेर मरण-पर्यन्त पश्चातापक कारण भए जाइत अछि।

अतएव क्रोध सभहक लेल घातक होइत अछि। एहिसँ अध्यात्मिक प्रगतिमे व्यवधान तँ होइते अछि संगे सांसारिक विकास सेहो अवरूद्ध भए जाइत अछि। अस्तु, क्रोध अवश्य त्याज्य थिक।



आगाँ के देखलक अछि?

जखन मनुक्खक जन्म होइत अछि तखन ओकरा संग 'साँस' रहैत अछि । परन्तु, कोनो 'नाम' नहि, मुदा जखन ओकर मृत्यु होइत छैक तखन ओकरा संग 'नाम' रहैत अछि । परन्तु, 'साँस' नहि। 'साँस' आ 'नाम'क बीचक एहि यात्राक नाम 'जीवन' थिक। आब सबाल अछि जे एहि जिनगीकेँ अहाँ केना जीबैत छी, एकर की उपयोग करैत छी... ।

कतेको गोटे स्वनिर्मित अभावमे जीबैत रहैत छथि आ ताजन्म ओकर प्राप्ति हेतु सफल, असफल चेष्टा करैत रहैत छथि। कतेको गोटे ककरो चेला भए जाइत छथि, ककरो समर्थक किंवा अनुरागी भए जाइत छथि, आ आँखि मुनि कए पाछू-पाछू चलैत रहैत छथि। जाबे होस होइत छैक ताबे बहुत देर भए गेल रहैत अछि।

समस्त जीव-जन्तुकेँ प्रकृतिक वरदान स्वरूप जीवन भेटैत अछि। छोट वा पैघ जिनगी जकर जे छैक से जीवैत अछि आ चलि जाइत अछि। एकटा मनुक्खे अछि जे नाना प्रकारक फसादमे पड़ि जीवनक आनन्दसँ कएक बेर वञ्चित रहि जाइत अछि।

जीवनक प्रादुर्भाव आओर ओकर विकास यात्रा एकटा आश्चर्यजनक प्रक्रिया अछि। छोटसँ छोट मच्छर सँ लए कए हाथी-मगरमच्छ सन-सन विशालकाय जीव सभ एहि निर्माण आओर विकासक प्रक्रियामे सहयोगी होइत अछि। नान्हिटा चुट्टीकेँ देखियौक- अनवरत चलैत रहैत अछि। ओकर रस्तामे व्यवधान करबै तँ, रस्ता बदलि लेत मुदा ठाढ़ नहि होएत। पंक्तिवद्ध हजारक-

हजार चुट्टी चलिते जाइत अछि। कतए जा रहल अछि? प्राय: जीवनक खोजमे निरन्तर प्रयत्नशील रहैत अछि। प्रकृतिमे स्वत: स्वभाविक रूपसँ जीव मात्रक जीवन रक्षा आओर आवश्यकता पूर्तिक वैज्ञानिक व्यवस्था अछि। जाहि जीवकेँ जेहन आवश्यकता अछि, ताहि प्रकारक शरीरक रचना भेल अछि। ककरो पैघ दाँत अछि तँ ककरो पैघ सूढ़। ककरो शरीरपर काँट सन-सन रौंआँ लागल रहैत अछि। प्रकृति माता अपन समस्त सन्तानक जीवन-रक्षाक गजब व्यवस्था केने छथि।

एहि संसारमे निरन्तर किछु-किछु घटित होइत रहैत अछि। सामान्यत: हमरा लोकनि निरपेक्ष रहैत छी। जे होइत छैक से होइत छैक। बात तरखन बदलि जाइत अछि, जखन ओहि घटनाक सम्बन्ध अपनासँ होइत अछि।

नाना प्रकारक जीव-जन्तु जन्मैत अछि, मरैत अछि, मुदा हमरा लेल धन- सन। मुदा जौं परिवारमे खास कए अपन लोककेँ सन्तानक जन्म होइछ तँ लोक उत्साहित भए जाइत अछि। आनन्द मनबए लगैत अछि। नाच-गान करैत अछि। ओएह हाल मृत्युक संगे होइत अछि। दिन-राति लोक मरैत अछि। कोनो चर्चा नहि होइत अछि। जे मरलैक से मरलैक, हम थोड़े मरब। सभकेँ मरितो देखि लोककेँ अपन मृत्युक अन्दाज नहि भए पबैत छैक। ताहि मानसिकताक कारण जँ निकटक व्यक्तिक मृत्यु भए जाइत अछि तँ लोक हतप्रभ भए जाइत अछि। लोक भगवानकेँ दोष देबए लगैत अछि।

एकबेर हम डॉ. सुभद्र झाजीक संगे इलाहावाद पएरे कतहु जाइत रही। रस्तामे पुछलिअनि-

"अहाँक हिसाबे भगवान छथि कि नहि?"

ओ कहलाह-

"हमरा हिसाबे तँ भगवान नहि छथि आ जौं छथि तँ बड़ बड़मान छथि।"

पुछलिअनि-

"से किएक?"

ओ आगू कहलाह-

"पेटमे जे बच्चा मरि जाइत अछि, तकर कोन दोष? आ जँ दोष रहिते छैक तँ ओकर जन्म होबए दितथिन आ तखन ओ अपन कर्मक फल भोगैत। पेटेमे मरि जेबाक की औचित्य?"

मुदा मृत्यु तँ होइते रहैत छैक। ओहिपर ककरो बस नहि रहल।

लोक कतए-सँ आएल, कतए जाएत? ई शाश्वत प्रश्न अछि। लोक नित्य-प्रति उठैत अछि, एहि उमीदमे जे ओ अहिना रहत, मुदा सत्य तँ इएह अछि जे नित्य साँझ धरि जीवनक एक दिन कम भए गेल रहैत अछि।

मृत्यु एक दुखद प्रसंग अछि। निकट सम्बन्धीसँ समाजिक, परिवारिक सम्पर्कक एकाएक पूर्ण विराम लागि जाइत अछि। कएक बेर मृत्युक भयसँ चिन्ता, अवषाद वा निराशाक भाव पसरि जाइत अछि। किछु लोककेँ मृत्युक बाद पूर्व कर्मक अनुसार स्वर्ग वा नर्क जेबाक चिन्ता सेहो ग्रसित केने रहैत अछि।

मृत्युक कारण अनेको भए सकैत अछि। दुर्घटना, विमारी, हत्या, आत्महत्या आ से सभ नहि तँ वृद्धावस्था। बएसक संग-संग

जीवन रक्षक तत्व सभ घटि जाइत अछि। विमारीसँ प्रतिरोधक क्षमता क्षीण भए जाइत अछि। शरीरक अंग प्रत्यंग क्रमशः काज केनाइ छोड़ि दैत अछि, जकर परिणति मृत्युमे भए जाइत अछि।

कहबी छैक जे 'टिटही टेकल पर्वत।' चिड़ै अपन टाँग उन्टा आकाश दिस कए सुतैत अछि, जे जँ आकाश खसत तँ ओ रोकि लेत। इएह हाल मनुक्खक अछि। सौंसे जिनगी अपसियाँत रहैत अछि जे ओकरा बिना दुनिआक काज नहि चलत ओ रहत तखने कोनो काज होएत अन्यथा दुनिआ ठामहि धँसि जाएत। मुदा जीवनक सत्य किछु आओर अछि।

ककरो लेल ई दुनिआ ठाढ़ नहि रहैत अछि। जखन जवाहर लाल नेहरू प्रधान मंत्री छलाह तँ लोकमे चर्चा होइक जे नेहरूजीक बाद देश केना चलत? मुदा ई चिन्ता व्यर्थ साबित भेल। देश चलि रहल अछि।

लोक अबैत अछि, जाइत अछि, परन्तु, संसारक चक्र निरन्तर गतिमान रहैत अछि। समय ककरो प्रतीक्षा नहि करैत अछि। भोर, साँझ, इजोरिया, अन्हरिया अनवरत होइत रहैत अछि। जीवन-यात्राक अन्त तँ भेनाइए अछि। कतेक बेर लोक स्वयं थाकि जाइत छथि, ओ विश्रामक निरन्तरता हेतु स्वतः मृत्युकेँ आलिंगन कए लैत छथि। उदाहरणस्वरूप आ. विनोव भावे अनशन कए प्राणक त्याग कए देलनि स्वामी विवेकानन्द, आदि शंकराचार्य सन-सन महान अध्यात्मिक व्यक्ति सभ कमे बएसमे चलि जाइत रहलाह। महात्मा गाँधी सन त्यागी ओ निष्ठावान व्यक्तिक हत्या कए देल गेल। तीन-तीन गोली लगलाक अछैत ओ 'राम-राम' कहैत प्राणक त्याग केलनि। अस्तु, मृत्यु करवन, ककरा

केना होएत आओर कोन परिस्थितिमे होएत तकर कोनो ठेकान नहि अछि । मुदा ई बात पक्का अछि जे मृत्यु होएत, जखन हो, जेना हो, जतए हो। गीतामे तँ कहल गेल अछि जे मृत्युक समय ओ स्थान पूर्व निर्धारित अछि।

विज्ञान आओर तकनीकीक विकाससँ जीवन आओर मृत्यु सेहो प्रभावित भेल अछि। पहिने मामूली विमारीसँ लोक मरि जाइत छल। सुलबाई, मलेरियाक कोनो इलाज नहि छल। हैजा, तपेदिक सन संक्रामक विमारीसँ गामक-गाम सुडाह भए जाइत छल। क्रमश: तरह-तरह केर दबाइक अविष्कार भेल। लोकक आयुमे इजाफा भेल। लेकिन नव-नव आओर कतेको घातक विमारी सभ बाहर भए गेल, जकर तोड़ विज्ञानक पास नहि अछि।

अस्पतालक सुविधा आओर चिकित्साक बेहतर उपलब्धिसँ लोक कएबेर स्वस्थ भए दीर्घ जीवनकेँ प्राप्त केलक । मुदा कतेको मामिलामे विमार व्यक्ति अस्पतालेमे घिसिओड़ कटैत रहैत छथि। अत्यन्त बेमार व्यक्तिकेँ इच्छा मृत्युक मांगक चर्चा होइत रहैत अछि। कहक मतलब जे विज्ञानक पराकाष्ठा मृत्युक पुरुषार्थकेँ कम नहि कए सकल।

समयक चपेट तेहन निरन्तर ओ प्रवल अछि जे एकर परिणामक कल्पनो नहि कएल जा सकैत अछि। जहिना परमाणु बमसँ विध्वंस होइत, आ गामक-गाम लुप्त भए जाइत, तहिना समयक अचूक आघात/प्रतिघात कोनो बमसँ कम नहि अछि। सौंसे गामसँ घरे-धरे लोक बिला गेल। गनि कए देखल जाए तँ साइते केओ पुरान लोक भेटताह, कतए गेलाह सभ गोटे? मुदा परमाणु बमक विध्वंस मात्र अनिष्टकारी होइत अछि, बाल-बच्चा,

वृद्धमे कोनो विभेद नहि कए पबैत अछि। विनाशक बाद दूर दूर धरि सृजनक सम्भावना नहि रहि जाइत अछि।

प्रकृति प्रदत्त विनाशक संगे सृजन भाए-बहिन जकाँ संगे चलैत अछि। जँ एकटा पात झड़ैत अछि तँ दसटा हरियर कंचन पल्लवसँ गाछ समृद्ध भए जाइत अछि। लोक बीतल बातकेँ बिसरि आगाँक तैयारीमे लागि जाइत अछि।

अद्वैतवादीक अनुसार आस्तित्व केवल अनन्तक अछि, शेष सभ माया थिक। कोनो जड़ वस्तुक यथार्थ व्रह्म छथि, एहि तरहें जीवन रहए नहि रहए, ओकर आस्तित्वपर अन्तर नहि होइत अछि।

समं पश्यन् सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।

न हिनस्त्यात्मनात्यानं ततो याति परांगतिम्।।

(गीता १३/१८)

जे सर्वत्र ईश्वरकेँ सभ भावसँ सर्वत्र अवस्थित देखि ओ आत्मा द्वारा आत्माक हिंसा नहि करैत छथि, से मुक्त भए जाइत छथि।

कहक माने जे मोनेक ऊपर सभ बात निर्भर करैत अछि। घटनासँ बेसी ओहिपर हमर द्दष्टिकोणसँ ओकर महत्व कम बेसी भए जाइत अछि। जीवनमे जहिना तरह-तरहक घटना घटित होइत रहैत अछि, तहिना जन्म ओ मृत्यु सेहो होइते रहैत अछि। समस्या घटनासँ नहि अपितु, घटना विशेषक लगावसँ होइत अछि।

“इहैब तैर्जित सर्गो येषां साम्ये स्थितं मन:

निर्दोष हि समं ब्रह्म तस्मात ब्रह्मणि ते स्थित:”

गीता ५/१९

जिनकर मोन साम्यभावमे अवस्थित अछि, ओ एहि ठाम जीवन मृत्युक संसार चक्रकेँ जीत लेलाह अछि, चूँकि ब्रह्म निर्दोष ओ सर्वत्र सम छथि, अस्तु, ओ ब्रह्ममे अवस्थित छथि। कहक माने जे मोनमे नीक भाव होइत तँ मनुक्खे जीवन-मरणक प्रभावसँ हटि ब्रह्मलीन भए जाइत अछि।

जीवनमे प्रतिपल परिवर्तन होइत रहैत अछि। लोकक सोच समयक संगे बदलैत रहैत अछि। जाहि बातकेँ लोक बच्चाक समयमे नीक कहैत अछि, मुदा पैघ भए ओही बातपर ओकर विचार बदलि जाइत अछि। वृद्धकेँ युवावस्थाक गप्प-सप्प सोचि हँसी लागि जाइत छैक। कहक माने जे मनुक्खक निरन्तर बदलिते रहैत अछि। जँ कोनो उपायसँ मृत्युपर बस चलितए तँ कोनो बड़का आदमी नहि मरैत। धन्ना सेठ सभ अमर बुटी खा-खा कए अमर भए जाइत आ गरीब, गुरबा सभ नहि जीबैत। मुदा मृत्यु एकटा एहन प्रश्न चिन्ह अछि जकर जवाब ककरो लग नहि अछि। राजा, रंक ,फकीर सभ हतप्रभ भए एकरा स्वीकार करैत अछि, कोनो विकल्पो नहि छैक।

हम सभ बच्चामे सुनि -पुरान घर खसे, नव घर उठे। ई फकरा जीवन-मरणक चक्रपर पूर्णतः लागू होइत अछि। जहिना बुढ़-पुरान लोकसभ चलि जाइत छथि, ओहिना किंवा ओहूसँ बेसी तेजीसँ नव जीवनक सृजन होइत अछि। जहिना पतझड़क बाद नव पल्लवसँ गाछ वृक्ष हरियर भए जाइत अछि, ओहिना गाम-घर नवजात शिशुक जन्मसँ हरल-भरल रहैत अछि।

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ। जे

होएबाक छैक से होइत अछि। एहिपर माथा-पच्ची व्यर्थ। केओ जीविते सुसम्पन्न परिवारक अंग भए जाइत अछि, तँ केओ रस्ता कातमे जन्मेसँ समय बितबए लेल मजबूर भए जाइत अछि। रामकृष्ण परमहंश सन महात्मा कैंसरसँ पीड़ित भए असाध्य कष्ट भोगलथि। महात्मा गाँधी सन शान्तिक समर्थक हिंसाक सिकार भए गेलाह आ हत्याराक गोलीसँ हुनक मृत्यु भेल।

ई सभ देखि-सुनि मानए पड़त जे एक्के जन्मक नहि अपितु, अनेकानेक जन्मक कर्मफल मनुक्खे पछोड़ केने रहैत अछि। कतेक मनुक्ख साधारण प्रयास करितहि लक्ष्य प्राप्त कए लैत छथि तँ केओ जीवन भरि कष्टमे रहि कए दुनिआसँ चलि जाइत छथि। ई सभ केना आ किएक होइत अछि, तकर सटीक उत्तर देब कठिन अछि। मुदा भाग्यक कोनो जवाब नहि ।

भाग्यं फलति सर्वत्र, न विद्या न च पौरुषः।

पछिला-अगिला जन्म केओ देखलक नहि, मात्र अनुमाने लगाओल जा सकैत अछि । मुदा वर्तमान जीवनमे जे किछु देखि-सुनि रहल छी से आश्चर्यसँ भरल अछि।

जन्मसँ प्रारम्भ आ मृत्युसँ अन्त होइत एहि जीवन-यात्राक पुनरावृति होएत, नहि होएत...। ताहि पर तरह-तरहक मत अछि। मुदा ई तय अछि जे एहि जीवनमे बहुत किछु देखबा-सुनबामे अबैत अछि, जाहिसँ वर्तमान जीवनकेँ सुखी ओ शान्त कएल जा सकैत अछि। अस्तु, हमर पूर्वज लोकनि शान्तिक हेतु प्रार्थना करैत रहलाह। जे किछु एहि जीवनमे प्राप्त अछि, से अपना आपमे अद्भुत अछि, अद्वितीय अछि। आगाँ के देखलक अछि?



प्रवासी

समाजमे वैषम्य सभ दिन रहल अछि। एकर पाछू कतेको कारण भए सकैत अछि। केओ जनमिते सम्पन्नताक सहभागी भए जाइत छथि तँ केओ आजीवन संघर्ष करैत रहि जाइत छथि। तैओ जस-के-तस...।

एहन उदाहरण गाम-गाम भेटत। कएक गोटा कएक पुस्तसँ मजदूरी कए रहल अछि। ओकर परिस्थितिमे कोनो सुधार नहि भेल। जीवन संघर्षमे बीत जाइत अछि। मुदा किछु मामिलामे परिवर्तन सेहो देखना जाइत अछि। गाम-घरसँ शिक्षित वा अशिक्षित लोक जीविकाक खोजमे बहराएल। मुम्बई, दिल्ली सहित अनेकानेक सहरमे पसरि गेल। बहुत रास मजदूर सभ पंजाब चलि गेल। किसान सभहक नौकर-चाकर भए गेल। गाम-घरमे लोकक ई पलायन सर्वव्यापी भए गेल अछि। जकरे देखू दिल्लीक टिकट कटबैत अछि आ बिदा भए जाइत अछि। परिणामस्वरूप गाम-घरमे नोकर-चाकर नहि भेटैत अछि। पढ़ल-लिखल लोक पहिनहुँसँ नौकरीक खोजमे बाहर चलि जाइत छलाह। आब सभ चल जाइत अछि।

१९७७ ईस्वीमे जखन हम नौकरी करए दिल्ली आएल रही तँ केओ-केओ दिल्ली अबैत छल। बरौनीसँ जयन्ती जनता एक्सप्रेस पकड़ि कए दिल्ली अबैत छलहुँ। मुदा आब गामक गाम उलटि कए दिल्ली चल जाइत अछि। ओहि समयमे सभ कहए जे दिल्ली किएक जा रहल छी? ओहिठाम बहुत खर्चा होइत छैक। पैसा नहि बाँचत। गाम-घरक देख-भाल नहि होएत। तथापि, हम दिल्ली

आबि गेल रही। बाबूजी बहुत अपसियाँत भेल रहथि। हुनका कहुना कए मनओलहुँ । परिवार सहित दिल्ली चल अएलहुँ। ओहि घटनाकेँ आइ ३९ वर्ष भए गेल। जखन उनटि कए देखैत छी तँ ई निर्णए सही बुझाइत अछि।

गाम-घरसँ लोकक सहरक पलायन मूलत: आर्थिक समस्या अछि। जँ गामेमे वा गामक आसपासमे जीविका भेटि जाइक तँ लोक हजारक-हजार माइल दूर किएक जाएत? मुदा से नहि भए पबैत अछि। दुर्भाग्यवश अपन जिला-जवारमे कल-कारखाना नदारद अछि। जे एकाध-टा छलैहो सेहो कालक्रमे बैसि गेल। खेती-बाड़ीसँ उपजा नगण्य भए गेल। पढ़ल-लिखल, मूर्ख, कारीगर सभ दिल्ली, मुम्बई किंवा कोनो आन सहरक रस्ता पकड़ि लेलक। वृद्ध वा बच्चा गाममे रहि गेल। किछु सेवानिवृत्त लोक सेहो गाम वापस अबैत छथि । मुदा कम, सएमे एकाध-टा कहि सकैत छी, अन्यथा जन-बोनिहार, पढ़ल-लिखल, हाकिम, कर्मचारी जे केओ गाम छोड़लक, से जतहि गेल ओ ततहि रहि ओतुक्का बासी भए गेल। आखिर एना भेलैक किएक?

एहिमे कोनो दू मत नहि भए सकैत अछि जे अधिकांश लोक जीविका किंवा बेहतर जीवन-यापनक आकांक्षासँ पैघ सहर चल जाइत छथि। अधिकांश जन-मजदूर अपन सम्बन्धी, ग्रामीण किंवा मित्रक संगे बहराइत छथि। प्रारम्भिक दिनमे ओएह हुनका रहबाक ठौर दैतो छथिन। एहन अधिकांश लोक भवन निर्माण, कृषि कार्य, चौकीदारी इत्यादि अन्य प्रकारक कर्मचारीक काजमे लागि जाइत छथि। किछु लोक परिवार किंवा गाममे अशांतिक कारण सेहो गाम छोड़ि जाइत छथि। सरकारी किंवा बढ़िआँ निजी नौकरीमे नियुक्ति

किंवा स्थानान्तरणक वाद सेहो लोक अपन पैतृक गामकेँ छोड़ि जाइत छथि। गाम-घर छोडएबला अधिकांश मजदूर तबकाक लोककेँ गाममे जमीन किंवा उपार्जनक कोनो श्रोत नहि होइत अछि। स्थायी सरकारी वा निजी नौकरी करएबला सम्भ्रान्त लोक जिनका गाम-घरमे जमीन-जथा अछि सेहो सहर गेलाक बाद ओही ठाम बसि जाइत छथि आओर प्रयास करैत छथि जे गाम-घरक जमीन बिका जानि । मुदा गाम-घरक जमीन उचित मूल्यपर बिकाएब सेहो कठिन समस्या अछि। हमर एकटा मित्र पछिला दस वर्षसँ गामक जमीन बेचए चाहैत छथि, मुदा से नहि भए पाबि रहल छैक, तकर मूल कारण अपने लोकक लालच आ ताहि कारण असहयोग थिक। निरन्तर बाहर रहबाक कारण जिनका गामे-घर छनिहो, सेहो कालक्रमे ढनमना जाइत अछि। खसि पड़ैत अछि, किंवा पड़ोसी सभ ओकर दुरुपयोग करैत रहैत छथि। मिथिलाक अघिकांश लोक मजदूरीक हेतु, नौकरी-चाकरीक हेतु दिल्ली अबैत छथि। पहिने लोक कलकत्ता जाइत छल। मुदा कलकत्ताक स्थिति बहरिआक हेतु अनुकूल नहि रहि गेल। ओतए रोजगार सेहो कम भए गेल। परिणामत: लोकसभ आन-आन ठाम जाए लागल अछि। अस्सीक दसकमे बहुत रास मजदूर वर्ग पंजाबक देहाती क्षेत्रमे जाइत छल। मुदा क्रमश: ओहिठामक स्थिति खराप होइत गेल। आतंकवादक प्रसारक बाद तँ बिहारी मजदूर सभ इएह-ले,ओएह-ले ओहिठामसँ घसकि गेल। दिल्लीक अतिरिक्त मुम्बई सहित अन्यान्य सहर सभमे लोक पसरि गेल। मिथिलासँ एहि तरहेँ पलायन भेल आ भइए रहल अछि।

जखन लोक गाम-घर छोड़लक आ बाहर जा कए बसि गेल तँ स्वभाविक ओकर गाम-घरसँ सम्पर्क कम भए गेल। ओहिठामक

रीति-रिवाज, संस्कार, संस्कृति, भाषा, गीत-नाद आदि सभसँ दूरी बढ़ैत गेलैक। भावक प्रति अनुराग ओहिना अपना सभमे कम छल। जहाँ केओ परदेश बसल कि सभसँ पहिने मैथिली बाजबमे अपराध लागए लगलैक। अपन भाषाकेँ छोड़लक आ हिन्दी, अंगरेजी अबैत नहि रहैक। परिणामत: अपन संस्कृतिकेँ बिसरि तँ जाइते गेल । मुदा आनो ठामक नीक आचार-विचार ग्रहण करबा योग नहि भए सकल। निश्चय ई बात सभपर लागू नहि भए सकैत अछि। किछु लोक उच्च शिक्षा प्राप्त केलाक बाद किंवा उच्च शिक्षा लेबाक हेतु निकललाह आ सरकार किंवा निजी संस्थानमे पैघ-सँ-पैघ स्थान प्राप्त केलाह। हुनका परदेशोमे पूर्ण सम्मान, सत्कार भेलनि। प्रचूर धनोपार्जन केलाह आओर भविष्यक पीढ़ीक हेतु सेहो अनुकूल परिस्थिति बना सकलाह। मुदा अधिकांश लोक एहन भाग्यवान नहि भेलाह।

१५-२० वर्ष पूर्व दिल्लीमे बिहारी सभकेँ बहुत छोट बुझल जाइत छल । अपितु, 'बिहारी' एकटा गारि बुझल जाइत छल। मिथिलाक प्रवल जनसंख्या अछैतो दिल्लीमे एहि वर्गक कोनो अपन विशेष पहिचान नहि छल। अखनो धरि एहिमे कोनो बहुत सुधार नहि कहल जा सकैत अछि, यद्यपि आब समस्त पूर्वांचलक प्रति आदर-भाव बढ़ल अछि। लोकक संख्याक संग राजनैतिक वर्चस्व बढ़ि रहल अछि। छठि पाबनिसँ समस्त पूर्वांचलीकेँ एकटा पहिचान भेटल अछि। मैथिली-भोजपुरीक समन्वित साहित्य अकादमी स्थानीय सरकार बनओलक अछि आ ओहि द्वारा कहिओ-कहिओ मैथिली-भोजपुरीक कार्यक्रम होइत अछि।

दिल्लीमे देशक सभ राज्यक लोक अछि। केरल, तमिलानडू,

आँध्र, बंगाल सभहक अपन-अपन शिक्षा संस्थान छैक, अपन-अपन संस्कृतिक संगठन छैक। मुदा मिथिलाक हित रक्षा करैत कोनो शिक्षण संस्थान नहि अछि! कोनो सुसंगठित, सक्रिय सांस्कृतिक सगठन नहि अछि! किएक? हमर एकटा मित्र कहलाह जे ओ जखन दिल्ली आएल रहथि तँ बहुत प्रयास केलाह जे अपनाठामक लोककेँ एकत्र करी । परन्तु, से सम्भव नहि भेलनि। तकर मूल कारण जे बिहारक लोक जातिसँ बेसी प्रभावित छथि। अन्तर्जातीय समावेशी, सांस्कृतिक परिवेशक रचनाक अनुकूल मानसिकता नहि अछि। दिल्लीओमे लोक जातीय आधार पर गोलबन्द होइत रहैत छथि जे बात आन राज्यक लोक सभमे नहि अछि।

दिल्लीमे वंगाली समाजक कोनो मोहल्ला नहि अछि जतए काली मन्दिर नहि होअए । ओ चाहे गोल मार्केट होइक, चाहे लक्ष्मीवाई नगर होइक आ कि कालकाजी होइक किंवा चितरंजन पार्क होइक। कतेको ठाम बंगाली स्कूल अछि जाहिमे आन विषयक संग बंगाली पढ़ब अनिवार्य अछि।

कहबाक तात्पर्य जे आर्थिक, समाजिक कारणसँ अपन गाम-घर छोड़निहार अपना ओहिठामक लोककेँ उचित सांस्कृतिक, समाजिक परिवेश परदेश जेना दिल्ली, मुम्बईमे नहि भेटैत अछि। परिणामत: लोक तेजीसँ अपन भाषा-साहित्य, अपन पाबनि-तिहार, अपन सोच-विचार सभ बिसरि रहल अछि, बिसरि गेल अछि। बाहर रहनिहार प्रवासी लोकनि अपन धिया-पुताक उपनयन, बिआह आओर अन्यान्य संस्कार ओतहि करए चाहैत छथि। कमे लोक गाम जेबाक साहस कए पबैत छथि। तकर कारण

जे प्रवासी लोकनिक अपन ग्रामीण समाजसँ सम्पर्क क्रमश: क्षीण भए जाइत अछि। गाममे व्यवस्था करब आ कोनो पैघ काज कए लेब दुरुह भए जाइत अछि। स्थानीय लोक गोलबन्द रहैत छथि आ प्रवासीकेँ ओहिमे पैठ बनाएब कठिन भए जाइत छैक।

अपना एहिठाम दरिभंगा महराज बहुत समृद्ध छलाह। सहर-सहरमे हुनक सम्पत्ति छलनि। ओ चाहितथि तँ समस्त मिथिलाक कल्याण भए सकैत छल। शिक्षा लेल नीक-सँ-नीक संस्थान बना सकैत छलाह। लोक आसानीसँ उत्तम शिक्षा ग्रहण करैत। नीक नौकरी होइतैक। कल-कारखाना लगा सकैत छलाह। जँ से सभ भेल रहैत तँ आइ ओहि क्षेत्रमे पलायनक ई दृश्य नहि रहैत। केरलक विकासमे ओहिठामक राजाक गजब योगदान अछि। ओ ओहिठामक लोकक शिक्षाक स्तर आओर जीवन-यापनमे गुणात्मक सुधार अनलाह। मुदा दरभंगा नरेश एहिमे चुकि गेलाह।

गाम घरमे शिक्षाक उत्तम व्यवस्था नहि रहबाक कारण धिया-पुताकेँ शिक्षा प्राप्त करक हेतु बाहर जाए पड़लैक। अधिकांश लोक जे पढ़ए निकलल, ओमहरे नौकरी करए लागल। मुदा गरीब लोकक धिया-पुताकेँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भेटब पराभव भए गेल। पहिने मधुबनी, दरभंगाक कालेजसँ स्तरीय शिक्षा भेटि जाइत छल। मुदा किछु वर्षसँ एकर स्तर ततेक गड़बड़ा गेल जे ई संस्था सभ मात्र डिग्रीक कारखाना बनि कए रहि गेल। जकरे देखू सएह परीक्षामे ८० प्रतिशत नम्बर लए कए घुमि रहल अछि। मुदा ओ सभ जखन दिल्ली, मुम्बई आदि सहर नौकरीक हेतु जाइत छथि तँ अपन अवमूल्यन देखि जरूर सोचैत हेताह जे ई की भेल? कतेको बी.ए.-एम.ए.क सर्टीफीकेट-धारी सभ चौकीदारी करैत छथि। एहि

परिस्थितिक अपवादो भए सकैत अछि । मुदा सामान्य धारणा ई भए गेल अछि जे बिहारक कालेज सभहक स्तर अति निम्न अछि। एहि विषयपर सभकेँ सोचबाक चाही। शिक्षाक स्तरक क्षरण चिकित्सा व्यवस्थाक नगण्यता आओर नौकरी-चाकरीक अभावक कारण केओ ओहि इलाकामे वापस नहि जाइत छथि।

चिकित्सा व्यवस्थाक दुर्गतिक विषयमे जतेक लिखल जाए से थोड़ होएत। बिहारमे डाक्टर सभकेँ निजी प्रैक्टिस सरकारी अनुमति अछि। परिणामत: सरकारी अस्पताल सभ व्यर्थ किंवा जानलेबा भए गेल अछि। दरिभंगा चिकित्साक क्षेत्रमे विख्यात छल। आब ओहिठाम चिकित्साक नामपर शोषण मात्र होइत अछि। परिणामत: जकरे देखू सएह दिल्लीक एम्समे पाँतिमे ठाढ़ भेटत। एम्स दिल्लीक ऑगनमे आ ओकर आसपासमे अपना ओहिठामक लोक पथार लागल रहैत अछि। जँ दरिभंगा मेडिकल कालेजमे पहिने जकाँ इलाज-बात होइत तँ लोक एना दिल्ली किएक जाइत? तात्पर्य जे स्थानीय परिस्थिति सुविधापूर्ण सुरक्षित भविष्यक दृष्टिए अनुकूल नहि अछि।

लाखो लोक प्रतिवर्ष बिहारसँ बाहर जाइत अछि। ओहिमे अधिकांश अकुशल मजदूर रहैत अछि। एहन बात नहि जे बिहारेक लोक बाहर भागि रहल अछि। पंजाव, केरल किंवा आनो-आनो राज्यसँ लोक बाहर भए रहल अछि। पंजावक लोक कनाडा, अमेरिका चलि जाइत अछि। केरलक गामक-गाम महत्वपूर्ण एशियाक देश सभमे चलि जाइत छैक। मुदा एहि सभमे गुणात्मक अन्तर अछि। बिहारमे पलायनक प्रभाव ओहिठामक राजनितिक परिदृश्यपर देखल जा सकैत अछि। अधिकांश पढ़ल-लिखल

लोकक गाम-घर छोड़ि देलाक बाद ओहिठाम गामक-गाम मूर्ख-चपाटक वर्चस्व भए गेल अछि। मतदाता सभमे अधिसंख्यक माफिया राज्य भए गेल अछि। स्वभाविक अछि जे एहन परिस्थितिमे केहन नेतृत्व उभरत...। परिस्थितिमे सुधार होउ ताहि लेल बहरिआ सभकेँ घुरि आबए पड़तनि। संघर्ष द्वारा उचित नेतृत्वक चुनाओ करए पड़तनि, तखने माहौल बदलि सकैत अछि। शिक्षा, चिकित्सा, रोजगारक क्षेत्रमे विकास भए सकैत अछि। मुदा से करवन आ केना होएत?

प्रवासी सभ जतहि-ततहि बसल जा रहल अछि। जँ केओ गाम दिस लौटबाक प्रयासो करैत छथि तँ गामक ओहन स्थित अछि जे हुनकर अपने लोक प्रतिरोध करए लगैत छैक। हुनका होइत छैक जे हिस्सामे बाँट-बखरा करक हेतु आबि रहल अछि। आ तरह-तरहसँ प्रयास कएल जाइत अछि जे प्रवासी वापस गाम नहि आबए। कतेको लोक जे एहि बातक विरोध करैत आगू बढ़ैत छथि, हुनका कएक बेर अप्रत्याशित घात-प्रतिघातक सामना करए पड़ैत अछि। कतेको बेर एहन प्रयास हिंसक भए जाइत अछि।

एकबेर ट्रेनसँ दिल्ली अबैत रही। रस्तामे मुजफ्फरपुरक एकटा सहयात्री भेटलाह। ओ गप्पक क्रममे कहलाह जे गाममे हुनका नीक जमीन-जत्था अछि। कोनो नीक पदसँ सेवानिवृत्त भेल छलाह। मुजफ्फरपुर, पटना आ दिल्लीक आसपास कतेको सम्पत्ति अर्जित केलाह। सेवानिवृत्तिक पश्चात गामक सम्पत्तिक बँटवारा हेतु कएक बेर प्रयास केलनि । मुदा गाममे जे भाए रहैत छलखिन से एहि बातसँ बहुत तमसा गेलखिन । आपसी सम्बन्ध गड़बड़ा गेलनि। मना नहि करथिन, मुदा बात फरिछेबो नहिए करथिन। ई

गाम जाथि तँ ओ उठि कए सासुर चल जाथि। बहरिआ आदमीक समय बान्हल रहैत अछि। जखन हुनकर वापस होएबाक समय होइत तँ ओ गाम लौटि जाथि आ किछु झार-फूक कए समय बिता देथि । पश्चात एकाध बेर झंझैटो भेलनि । मुदा फेर ठामक ठामे, माने ढाकक तीन पात। अत: ओ समय पुरा होइत गामसँ लौट जाथि। सालक-साल इएह क्रम चलैत रहल। अन्ततोगत्वा, ओ गामक बखराक चर्चे करब छोड़ि देलनि । कहलाह जे जहिआसँ से कएल, गामक भाएक स्वभावे बदलि गेल। आव-भगत बढ़ि गेलनि। कहलाह जे आब गाम जाइत छी तँ किछु पैसा हुनका दए दैत छिअनि आ खूब सेवा होइत अछि आ चैनसँ दस-बीस दिन गाममे रहि लैत छी। ई घटना कोनो एक परिवारक आ कि एक व्यक्तिक बीचक मात्र नहि अछि। जे केओ अपन हिस्सा-बखराक चक्करमे पड़लाह, किंवा सेवानिवृत्तिक पश्चात वापस अपन डीह-डाबर दिस लौटलाह तँ हुनकर भगवाने मालिक...। ई परिस्थिति कोनो कम पढ़ल-लिखल लोके धरि सीमित नहि, अपितु नीक, प्रतिष्ठित परिवार, शिक्षित ओ सम्पन्न लोकमे सेहो ई बिमारी गाम-गाममे पसरि गेल अछि।

"अहाँ तँ बाहर रहलहुँ, ऐश-मौज केलहुँ। हम तँ गामे धेने रहलहुँ। सभ दिन कष्ट केलहुँ। दियाद सभसँ झगड़ा करैत घर-घराड़ीक रक्षा केलहुँ। अहाँ की केलहुँ?" एहि यक्ष प्रश्नक की उत्तर होएत? बहरिआक संग के देत? कदाचितो ओ गाम दिस केना वापस होएत?

लोक बुझैत अछि जे ई तँ चालि जेताह, गाममे तँ ओएह रहि जाएत। तेँ समाजो सभ 'हँ' मे 'हँ' मिलाएबे यथोचित बुझैत छथि।

तात्पर्य ई जे जे केओ बाहर भए गेल छथि, तीस-चालिस वर्षक पश्चात गाम लौटए चाहैत छथि, हुनका विकट परिस्थितिक सामना करए पड़ि सकैत अछि। तथापि, कए गोटे गाममे वापस स्थापित हेबामे सफल होइत छथि। गाम-घर छोड़ि सहरमे रहनिहार सभ लोक एक्के रंग भाग्यवान नहि होइत अछि। बढ़िआँ नोकरी करएबला किछु लोक तँ अपन नीक व्यवस्था कए लैत छथि । मुदा गरीब, कम शिक्षित किंवा मजदूर तबकाक लोक पैघ सहरमे रहिओ कए नर्कक जिनगी जीबए हेतु विवश छथि। खोपड़ी बना कए जहाँ-तहाँ रहैत समय कटैत छथि। दिन-राति मारि-गारि सहैत-सुनैत रहैत छथि। स्वास्थ्य, शिक्षाक अवसरसँ धिया-पुता वञ्चित रहि जाइत अछि किंवा स्तरीय सुविधा तँ नहिए भेटि पबैत छैक। सहरक लोक हुनका एकटा भार बुझैत अछि। मान-अपमान सहिओ कए जँ ओ जीविओ जाइत छथि तँ मोनमे गाम-घरक टीस रहिते छैक। मुदा गाम घुरताह तँ कतए आ केना? ओहिठामक परिदृश्य सेहो कालक्रमे अरूचिकर भए गेल रहैत अछि।

एहिमे कोनो दू मत नहि भए सकैत अछि जे गाम-घरक अपेक्षा पैघ सहरमे जीवन-यापनक सुविधा बेहतर छैक। गाम-घरमे खेती-बाड़ीसँ उपार्जन होइत छलैक । मुदा आब सेहो नहि भए पाबि रहल अछि। लोकक जमीन परता रहि जाइत अछि। जतबो पूजी लागत लगैत अछि ततबो उपार्जन नहि भए पबैत छैक।

अधिकांश लोकक जमीन बटाइ रहैत अछि। जे किछु अन्न-पानि भेटि गेलैक ओहीसँ संतोख कए लैत अछि। जे बहरिआ छथि हुनका ओतबो अन्न-पानि सम्हारब कठिन होइत अछि आ औने-पौने दाममे उधारियो सही, ओकरा बेचि गामसँ बिदा भए जाइत

छथि। आ जिनका जमीन-जत्था अछिए नहि, ओ गामसँ पहिने हटि गेल छथि। महानगर सभमे मजदूरी किंवा मिस्त्रीक काज कए जीवन-यापन करैत छथि। उपरोक्त परिस्थितिमे गामसँ सहरक पलायनक क्रम बढ़िए रहल अछि। गाममे लोकक संख्या क्रमश: कम भेल जा रहल छैक। तैओ गाममे रहनिहारकेँ एहि बातक आभास नहि भए पाबि रहल छैक जे काल्हि भए कए हुनको धिया-पुता बहरिआ भए जेतनि आ ई गाम ओकरो लेल ओहिना भए जाएत। अस्तु, गामसँ बहराएल प्रवासी लोकनिक गाम-घरसँ भावनात्मक सम्बन्ध बनल रहैक, से गामपर रहनिहारोक हितमे अछि। मुदा ताहि हेतु दूर दृष्टि चाही।



ढाकक तीन पात

बाल जीवनक तँ बाते अलग होइत अछि। जखन लॉडस्पीकरसँ प्रचारित कएल जाइत जे आइ दरभंगा वा मधुबनीमे कोनो बड़का आदमीक अबाइ छैक, तँ मोनमे भाव उठैत छल जे ओकरा अबश्य देखक चाही। पता नहि, ओ बड़का आदमी १० हाथक होएत कि बीस हाथक..? एकबेर स्वर्गीय बिनोबा भावे मधुबनी आएल छलाह। वाटसन स्कूल- मधुबनीमे बच्चा सभहक बीचमे प्रवचन केने रहथि। हुनका देखि आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ जे आखिर ई बड़का आदमी केना भेलाह? कद-काठीमे तँ छोटे रहथि। तहिना एकबेर स्वर्गीय गुलजारी लाल नन्दाकेँ देखबाक हेतु मधुबनी सुरी स्कूलपर गेल रही। फेर ओएह बात...। आखिर एकरा लोक बड़का आदमी किएक कहैत छैक? हमरे गामक लोक जकाँ पाँच फीटक आदमी तँ ईहो अछि। तखन पैघ कथीक भेल? एहि प्रश्नक उत्तर ताकए-मे जिनगी निकलि गेल। पैघ के अछि? पैघत्वक प्रयासमे तँ सौंसे दुनिआ लागल अछि, मुदा सभहक अकार-प्रकार तँ ओहिना-क-ओहिना रहि जाइत अछि।

गाममे चौराहा सभपर घन्टो गप्प करैत लोकक दृश्य सामान्य बात छल। एमहरसँ एक गोटे आएल, ओमहरसँ केओ आएल आ गप्प शुरू भए गेल। हमहु सभ अपन दोस्त सभसँ अहिना गप्प करैत रहि जाइत छलहुँ। कएक बेर हम अरियाति कए हुनका ओहिठाम दए अबिअनि आ कएक बेर ओ हमरा। हाटपर, चौकपर तँ गप्पक गोष्ठी चलिते रहैत छल। रस्तामे केओ भेटि गेल तँ गप्प केने बिना केना चलि जाएत? आश्चर्य ई लगैत अछि जे आखिर लोक सभहक

काज धन्धा केना चलैत छल। असलमे लोकक जीबाक अन्दाज दोसर रहैक। सभ वस्तुमे, गप्प -सप्पमे, गरीबीमे, जीवन-संघर्षमे आनन्द ताकि लैत छल। जँ से नहि रहितैक तँ बोनि कए एकसंझू भोजन करए बला बोनिहार सभ निचैन भए कए खेतमे गीत नहि गबैत, भोरे उठि कए परातीकेँ स्वर नहि दए सकैत आ आठ बजिते चैनसँ सुति नहि जाइत।

सहरक संघर्षमय आ प्रतिस्पर्धात्मक जीवन-शैली गाम धरि नहि पहुँचल छल। लोक स्वत: स्फूर्त नैसर्गिकतासँ ओत्-प्रोत् छल। धन, एश्वर्य लोकक अवचेतन मोनपर तते हाबी नहि छल जे श्रेष्ठताक प्रयत्नमे वर्तमानकेँ नर्क कए लिअए।

परिवर्तन जीवनक संकेत थिक। जे काल्हि बच्चा छल ओ आइ जबान भए गेल, तहिना जबान प्रौढ़ आ क्रमश: बुढ़ भए गेल। ई प्रक्रिया तेहन निरन्तर ओ सतत अछि जे बुझएमे नहि आबि सकैत अछि, जे की भए रहल छैक, केना भए जाइत छैक। सेहो तेहन जे जँ पाछू उनटि ताकब तँ तकिते रहि जाएब। आइसँ चालीस वा तीस साल पूर्व जे सभ गाममे कहबैका छलाह, धन, प्रतिष्ठासँ ओत्-प्रोत् छलाह, आइ तिनकर नामो निसान नहि अछि। गाम ओएह अछि, स्थान ओएह अछि, घरो ओएह अछि, मुदा लोक गाएब अछि।

ककरा लग बैसब, ककरासँ कहबैक मोनक गप्प, ककरासँ सहानुभूतिक अपेक्षा करब, ककरा उपलब्धिक समाचार लए कए जाएब। तकलोपर केओ नहि भेटत। एक-एक-कँे सभ गुजरि गेल, आ गुजरलो जा रहल अछि। तथापि, वातावरणमे दम्भ, अहंकार आ प्रतिशोधादिक प्रवृति ओहिना देखल जा सकैत अछि। फल्लाँ

हमर पुरखाक अहित केलाह, अपमानित केलाह, आब हमहु देखा देबइ... । ऐहन चक्करमे पुस्त-दर-पुस्त लोक परेसान अछि।

पतझड़ अबिते गाछसँ पात सभ खसि पड़ैत अछि। गाछ सुन्न भए जाइत अछि। ठूठ गाछकेँ देखि कए छगुन्ता लागि जाइत छैक। लोक ठिठकि जाइत अछि। परन्तु, प्रकृति आगू बढ़ैत अछि। क्रमश: एक-एक डारिमे हजारो नव पम्ही निकलैत छैक। हरियरी फेरसँ ओहि गाछकेँ आवृत कए लैत अछि। हरियर कंचन नव-नव पल्लवसँ सम्पूर्ण नव कनियाँ जकाँ प्रकृति ओहि गाछकेँ एश्वर्यमयी कए दैत अछि। गामोमे सएह होइत अछि। पुरान-पुरान लोकसभ क्रमश: गुजरि गेल। नव-नव लोक घरे-घर पसरि गेल। प्रवासी लोक जखन गाम जाइत छथि तँ अपने गाममे अनचिन्हार भए गेल छथि। मुदा ई समयक प्रभाव अछि। जाहि एकपेरिया पर चलैत बच्चामे दोस्त सभसँ झगड़ा भए जाइत छल, जाहिठाम बैसि घन्टो गप्प करैत रहैत छलहुँ, जाहिठाम जाइते अपनत्वक बोध होइत छल ओ सभटा आइ लुप्त भए गेल। रहि गेल अछि मोनमे ओहि सभहक एकटा सुखद स्मृति।

गाममे कामरेड सभ तूफान केने रहैत छलाह। गामक आन्दोलनक ने जड़ि छल ने फुनगी। व्यक्तिगत ईर्ष्या-द्वेषकेँ ठेकाना लगेबाक एकटा साधन छल ओ आन्दोलन। किछु युवक सभ अपने टोलक सुखी परिवारक जमीनपर तरह-तरह केर फसाद करैत रहैत छलाह। ओ नीक छलाह, खराप छलाह, जे छलाह मुदा ओहि आन्दोलनक किछु परिणाम नहि भेल, किछु लोक तंग जरूर भेल। जमीनमे उपजावारी कम भेल, गामक वातावरण दुषित भेल। आ अन्तमे ढाकक तीन पात। ओ युवक सभ अन्तत: गाम छोड़ि रोजी-

रोटीक प्रयासमे बाहर चलि गेलाह। गाम फेरसँ शान्त भए गेल, पुरनका रस्तापर चलए लागल।

बात-बातमे दुगोला कए लेब, खएन-पीन बन्द कए लेब आम बात छल। हम सभ जखन बच्चा रही तँ आधा गामसँ बेसी दुगोला रहैक। कहि नहि, कखन कोन बातपर मतान्तर भेल आ भए गेल दुगोला। दुगोलाक ततेक प्रभाव रहैत जे लोकसभ एक्के गाममे फराक-फराक रहैत छल। हमर सभहक घरक पछुआरमे किछु घर अछि, मुदा बच्चामे कहिओ आपसी आवागमन नहि देखए-मे आएल। ओहिठाम एकटा इनार रहैक जकर पानि बहुत स्वादिष्ट छलैक। पानि भरए लोक ओतए जाइत छल, हमहु कएबेर गेल रही, मुदा आन सम्पर्क नहि छलैक। एहि तरहक स्वत: घोषित प्रतिवन्धित क्षेत्रक यथार्थमे मनुक्खक अहंकार, ईष्या-द्वेष, प्रतिशोध रहैत अछि। एहि तरहक निषेधात्मकताक कोनो सुखद परिणाम कतए होइत? गाममे रहितो छी आ नहिओ छी।

बहुत दिनक बाद जा कए केना-ने-केना आपसी सहमति भेल। किछु युवक सभहक प्रयाससँ गाममे एकगोला भेल। सभ केओ एक-दोसरक ओहिठाम नौत-पेहानी शुरू केलक। कमो-बेसी अखनो एकगोला चलि रहल अछि। मुदा आब तँ एकगोलाक अछैतो गामक परिदृश्य बदलि गेल अछि। आपसी सम्पर्क कम भए गेल अछि।

३५-४० वर्ष पूर्वक ई घटना थिक। हम अपन घरक ओसरापर बैसल रही कि अबाज भेल ‘तर्राक तर्राक..!’ एक वृद्ध व्यक्तिपर एक पहलवान टाइपक व्यक्ति तर्रातर लाठी बरसा रहल छल। हे राम! केओ ओकरा रोकैत नहि छल। की भए गेलै एहि

गामकेँ..? कहए लेल सभ गौवें अछि। कोनो-ने-कोनो तरहेँ एक-दोसरसँ जुड़ल अछि, एक-दोसरक सम्बन्धी अछि, तखन एहन दृश्य। भए सकैत अछि ओहि वृद्धसँ किछु गलती भए गेल होइक, मुदा तकर प्रतिफल एहन हिंसात्मक तँ नहि होएबाक चाही। मुदा की होएबाक चाही आ की भए रहल अछि? देखैत रहू, चुप रहू नहि तँ ई लाठी छटकि सकैत अछि...। आठ-दस लाठी खेलाक बाद केना-ने-केना ओ भागि सकलाह कि लोक बँचा देलकनि से तँ आब मोन नहि अछि, मुदा एहि घटनाकेँ बिसरलो नहि भए रहल अछि। लाठी चलओनिहार व्यक्ति आब दुनिआमे नहि छथि, लाठी खेनिहार सेहो नहि छथि, मुदा ओ दृश्य पता नहि कतए-कतए आ ककरा-ककरा दिमागपर अंकित अछि।

हम बच्चा रही, युवक भेलहुँ आ पढ़लहुँ-लिखलहुँ। रोजी-रोटीक जोगारमे लोक गामसँ बहराएल। तैओ लोक अबैत-जाइत तँ रहबे करए। मुदा क्रमशः ई रफ्तार कम भेल। गामक परिवेश बदलैत रहल। गामक-गाम प्रवासीक एकटा जबरदस्त हुजुम भए गेल। आब गाम जा कए ओ सभ किंकर्तव्यविमूढ़ भए जाइत अछि। जे गाममे रहि गेलाह से बाबा वैद्यनाथ जकाँ तेहन कए जमि गेल छथि जे हुनका उखाड़ब कोनो रावणक बसक नहि रहि गेल अछि। तमसा कए औंठा गाड़ि देबै तँ गाड़ि दिऔक, ओ धँसि जेताह । मुदा उखड़ता नहि। अपनाकेँ अहाँ कतए ठाढ़ करब? अहाँ लग के रहत? अहाँसँ ककरा की लाभ हेतइ?

“अहाँ तँ चलि जाएब। फेर तँ हमरा एहिठामक लोकसँ निपटक अछि” ।

अही अन्तर्द्वन्दसँ अभिभूत गाममे अपनो लोक बहरिआसँ

कात भए जाइत अछि।

एहि प्रसंगमे किछु दिन पूर्व एकटा खिस्सा पढ़एमे आएल जे बहुत प्रासंगिक लगैत अछि। एकटा हंसक जोड़ा राति भेलापर एकटा गाछपर रहि गेल। ओहि गाछक खोधरिमे एकटा उल्लू रहैत छल। रहि-रहि कए ओ अबाज निकालैक। हंसक जोड़ा राति भरि ओहि कर्कस अबाजकेँ सुनैत-सुनैत तंग भए गेल। ओकरा बुझेबे नहि करैक जे ई उल्लू एतेक अबाज किएक कए रहल अछि। भोर भेने हंसक जोड़ा गाछपर सँ बिदा होइत छल कि उल्लू आगू आबि कए रस्ता छेकि लेलकैक आ कहलकैक-

“खबरदार जँ आगाँ बढ़लह! ई हंसिनी हमर अछि। ई हमरे संगे रहत।”

हंसकेँ ठकविदोर लागि गेलैक। जोरसँ चिचिआ उठल। उल्लूकेँ चेतओलक। मुदा उल्लू टस-सँ-मस नहि भेल। कहलकैक जे पंचैती करा लएह। हंस एहि बातसँ सहमत भए गेल। पंचायतमे सभ पंच सर्व सम्मतिसँ फैसला कए देलक जे हंसिनी, उल्लूक पत्नी अछि आ ओकरे संगे रहत। हंस अवाक् ..।

अन्तमे ओकरा उल्लू बुझौलकै-

“देखलहक कहेन गाम छैक? एहि ठामक पंच ओएह कहतैक जे हम चाहबैक। कारण हम एहिठाम रहैत छी। तूँ परदेशी छह। कनीकालमे उड़ि जेबह। तेँ तोहर संग के देतह? उचित-अनुचितक चक्करमे के पड़त? अही दुआरे हम तोरा राति भरि चिकरि-चिकरि कए कहैत छलिअह जे एहि गामसँ दूर चलि जाह। एहि ठाम तोहर केओ नहि हेतह। मुदा तूँ नहि बुझलह। आबो भागि जाह।” ई कहि उल्लू हंसिनीकेँ मुक्त कए देलक आ हंस हंसिनीकेँ लए ओतएसँ

तेना भागल जे फेर उलटि कए नहि तकलक।

गाम घरमे दियादीमे कोनो मतान्तर भेल कि दियादनीकेँ डाइन घोषित कए देल जाइत अछि। तकर बाद तँ एकर तेहन चक्रव्यूह बनैत अछि जे ओहि तथाकथित डाइनक जीवन नर्क भए जाइत अछि। अपनो लोकसभ ओकरासँ कन्नी काटए लगैत अछि। ओकरा हाथे चाहो-पानि पीबएमे संकोच होमए लगैत अछि। जतहि बैसू एहि बातक कानाफुसी। तरह-तरह केर अबलट सभ सुनबामे आएत। फँल्लीं तँ गाछ हँकैत अछि! राति-के नँगटे नचै छैक। ओकरा तँ ब्रह्म-पिचास पोस छैक, इत्यादि। तरह-तरहक अफवाह निरन्तर चलैत श्रृँखलाक ने आदि होइत अछि आ ने अन्त। एहि तरहक अफवाह ओ दोषारोपणक कोनो अन्त नहि अछि। ककरो पेटमे दर्द भेलैक तँ डाइन कए देलकैक, ककरो बच्चा दुखित भेलैक तँ डाइन अगिनवान फेक देलकैक। माने जतेक जे कष्ट भेलैक से ओएह कए देलकैक। एहि वैज्ञानिक युगमे लोक कतए-सँ-कतए चल गेल । मुदा अपन ग्रामीण समाज अखनो सैकड़ो साल पूर्वक मानसिकतासँ मुक्त नहि भए सकल।

गाममे ककरो घरमे चोरी भए गेल रहैक। चोरकेँ पकड़बाक हेतु बट्टा चलाओल गेलैक। मूसक बिलसँ निकालल गेल माटिकेँ मंत्रा कए बट्टापर फेकल जाइक, आ ओझा-गुनी ओहि बट्टाकेँ कटकटा कए धेने रहैक। मंत्रक प्रभावसँ बट्टा शुर्र-दे चलए लगैक, चोरक दिस । लोक सभ, खास कए बच्चा सभ पाछू-पाछू भागैत। बट्टाक चालि देखि अनुमान लगाओल जाइत जे चोर केमहर गेल। गाममे सभहक माथा अपना-अपना तरीकाक होइत अछि। जकरे कहबैक जे ई सभ फुसि थिक, अहींक उपहास करए लागत। बट्टा

चला कए चोर पकड़ब आ झाड़-फूक कए साँपक जहर उतारब आम बात छल। एकबेर हमहु अपन अनुजक संग दस बजे रातिमे साँपक जहर झाड़ैबला कैँ (चटिवाह कहल जाइए) बजबए कलमे-कलम तकैत रहलहुँ । बाबूजीकेँ साँप काटि लेने रहनि। बहुत प्रयासक बाद ओ भेटलाह, उलटन्त बेग पलटन्त बेग.., साँपक मंत्र पढ़ि-पढ़ि बाबूजीक टाँगपर चाटी-पर-चाटी पड़ल । ई तँ संजोग छल जे ओ बँचि गेलाह। संभवतः ओ ढोढ़ साँप रहल होएत।

हाइस्कूलक कोठरीमे तीन गोटेकेँ पुलिस पकड़ि कए बन्द कए देने रहैक। गाम-गामसँ लोक करमान लागि गेल छल। जेना-तेना केबाड़सँ लटकि कए, खिड़की बाटे, देबालक फट्ठाक भूरसँ ओकरा सभकेँ लोक एक बेर देखए चाहैत छल। असलमे बात ई भेल छल जे तीनू मिलि कए एकटा युवतीक बलात्कारक बाद हत्या कए देने छल। ओ युवती आसेपासक छलि । घास कटबाक हेतु घरसँ खुरपी ओ छिट्टा लए निकलल छलि । रातिओ भेलापर घर वापस नहि गेल, तँ खोज-पुछारि शुरू भेल। प्रात:काल चरबाहसभकेँ कलममे ओकर लास देखेलैक । चारूकात गर्द पड़ि गेल। पुलिस-थाना भेल आ शीघ्रे तीनू अपराधी पकड़ल गेल। ओहिमे दूटा तँ ओहि महिलाक टोलेक छल आ तेसर अधवयसू कण्ठीधारी पड़ोसी टोलक छल जे घटनाक समय ओतए आबि गेल छल आ दुर्भाग्यवश ओहि अपराधमे सहयोगी भए गेल। तीनूकेँ आजन्म कारावास भेल। साले-साल ई दृश्य हमरा मोनमे उभरैत रहल, कचोटैत रहल जे केना एकटा निर्दोष महिलाक अकाल मृत्यु भए गेल। ओहि महिलाक पिता मजदूर छल। हमरा गाममे बरोबरि मजदूरी करए अबैत छल। अपन कन्याँक हत्या दुखसँ सालो ओ शोक-सन्तप्त रहल। आजन्म कारावास काटि कए ओ सभ फेर घुरि

आएल। फेरसँ अपन रोजी-रोटीमे लागि गेल । मुदा ओहि बापकेँ बेटी वापस नहि आएल। ई घटना आइसँ पचास साल पूर्वक अछि, मुदा लगैत अछि जे ओकर माए-बाप अखनो ओहि स्कूलपर ओहिना छाती पीट रहल हो, ओकर करुणामय चीत्कार जेना परोपट्टामे पसरि गेल हो।

हम सभ मैट्रिकक परीक्षा देबए गेल रही तँ एक्के संगे कएगोटा डेरा लेने रही। ओहिमे एक गोटे रहिका उच्च विद्यालयक छात्र हमरे सभहक संगे रहथि। कारी, सुगठित शरीर, मझौल कद-काठी। जहन नौकरी करैत इलाहावादमे रही तँ छुट्टीमे गाम आएल रही। बहुत दिन बाद फेर हुनकासँ भेँट भेल रहए। आसेपासक गाममे ओ प्राइमरी स्कूलमे शिक्षक रहथि। कोनो बात लए कए गौंआँ सभसँ मतभेद भए गेलनि। गौआँ सभ हुनका स्कूलेमे घेर लेलकनि। अपन जान बँचबए हेतु ओ कोठरीकेँ अन्दरसँ बन्द कए लेलाह। मुदा भीड़ बढ़िते गेल। हुनका ओ सभ मारि देत, एहि डरसँ ओ एकटा बच्चाक गर्दनिपर छुरी धए कए लोककेँ डराबए लगलखिन। लोकसभ पुलिसकेँ बजओलक। पुलिस आबि कए हुनका कोठरी खोलबाक लेल कहलकैक आ आश्वासन देलकैक जे हुनका किछु अहित नहि होएत। पुलिसक आश्वासनक बाद ओ कोठरी खोलि देलखिन। कोठरी खुजिते इएह-ले,ओएह-ले सैकड़ो लोक पुलिसक सामने हुनका पीटए लागल आ ततेक पीटलक जे ओ ओही ठाम बेहोस भए कए खसि पड़लाह आ अस्पताल जाइत-जाइत हुनकर देहावसान भए गेल। सम्भवत: ग्रामीण सभसँ हुनकर विवाद पढ़ाइ-लिखाइ किंवा धिया-पुताक बात लए कए भेल रहए, मुदा ओ विवाद बहुत आगू बढ़ि गेल आ असमयमे हुनकर जान चलि गेलनि।

कहुना कए जीवन-यापन करबाक प्रयासमे तत्पर एकटा युवकक एहन दुखद अन्त मनुष्यतापर प्रश्नचिन्ह अछि। निश्चित रूपसँ ओ अपराधी प्रवृतक लोक नहि छल। अनुशासनमे विद्यार्थी सभकेँ राखए चाहैत छल। गलत सही किछु विवाद भए गेलैक। ओकरासँ घबराहटमे गलती भेलैक जे बच्चाक गर्दनिपर छुरी रखि कए आत्मरक्षा करबाक व्योंत तकलक । मुदा बच्चाकेँ कोनो क्षति नहि केलकैक। मुदा जकर कल्पनो असम्भव एहन घटित भए गेल।

किछु दिन पूर्व गाममे रही तँ बरियाती आएल रहैक। हमरा जेबाक इच्छा भेल । मुदा हकार नहि अएलैक। एहि तरहें सम्पर्ककेँ सीमित कए शान्ति स्थापनाक प्रयास गामक मौलिकतापर आधुनिकताक जबरदस्त आधात अछि।

जीवन-यापन फिराकमे गाम-घर छोड़ि सालक-साल परदेश रहए पड़ल। पहिने गाम जेबाक क्रम बेसी रहैत छल जे क्रमश: कम होइत चल गेल। गाम जाइत काल कतेक मनोरथ रहैत छल। अपन गाम जा रहल छलहुँ। महिनोसँ ओकर तैयारी होइत छल। मुदा गाम जाइते होइत जे कखन वापस चली। गाम जाइते तरह-तरह केर अपेक्षा, उपेक्षाक संग सामंजस्यक अन्तर्विरोध बढ़ैत गेल। अपनत्वपर अपेक्षा भारी होइत गेल। सभ किछु होइते पू. माएकेँ हँसैत, आनन्दित ओ भावनापूर्ण दर्शनक संग यात्राक सन्तुष्टिवोध होइत छल । मुदा आब तँ ओहो नहि रहलीह! ने हमर दोस्त सभ रहलाह। एकटा घनिष्ट मित्र सालो पूर्व गुजरि गेलाह। किछु गोटा हमरे जकाँ प्रवासी भए गेलाह। किछु गोटे जे बाँचल छथि, सेहो गुम्म पड़ि गेल छथि..!

क्रमश: असगर होइत जीवन यात्रामे गामकेँ बिसरि जाएब

आसान नहि अछि, मुदा समयक ततेक पैघ अन्तराल बीचमे बीति गेल जे अपने गाम 'अनचिन्हार' भए गेल। युवक सभहक परिचय हेतु ओकर बाबाक नाम पूछए पड़ैत अछि। परिवेशक जटिलताक संगहि अपनत्वक परिभाषा बदलि गेल अछि। सही बात बजनिहार नहि रहि गेल अछि। एहि सभहक अछैत हम गाम अबैत-जाइत रहैत छी। मुदा आन-आन लोक जकरा अपेक्षा कम वा नहिए रहैत छैक, ओ भेँट भेलापर कएक बेर अद्भुत आनन्द दैत अछि। एहने उदाहरण एक बेर गाम अबिते भेल। गाममे प्रवेश केने रही की एकटा गामक हलुआइ भेटल। मिठाइ बना कए जाइत रहए। तुरंत मिठाइ निकालि कए आग्रह करए लागल, हाल-चाल पूछए लागल। ओकर सिनेह सदिखन मोन पड़ैत रहैत अछि। कहाँ भेटत आब एहन लोक?



श्राद्धक वर्तमान स्वरुप

नियतिक आगाँ ककरो नहि चलैत अछि। कालक्रमे सभ एहि संसारमे अबैत अछि आ समय पूरा होइते चलि जाइत अछि। जखन ओ समय आबि जाइत छैक, सभहक माथा ओहने भए जाइत अछि। नियतिकेँ के बदलि सकैत अछि। मृत्युक उपरान्त लोक अहिना बजैत, सोचैत अछि। आओर कोनो विकल्पो नहि..! राजा, रंक, फकीर सभ एहि संसारसँ बिदा भए जाइत अछि। तेँ एहि संसारकेँ मृत्युलोक सेहो कहल जाइत अछि।

१२ नवम्बर २०१६ (कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी)क साँझ सात बजे हमर वयोवृद्ध चौरानबे वर्षीय माता दयाकाशी देवीक देहावसान भए गेलनि। ओ जाँघक हड्डी टुटि गेलाक कारण पछिला दू वर्षसँ कष्टमे छलीह। नाना प्रकारक उपचार भेल । परन्तु, ओ पछिला तीन माससँ लगातार गड़बड़ाइते गेलीह आ अन्ततोगत्वा, कालक अपराजेय हाथे हुनक प्राण देह छोड़ि देलकनि। ओहि समयमे हमहु ओही ठाम रही। माएक अन्तिम संस्कारमे सम्मिलित होएबाक हेतु किछु गोटे बाहरसँ आबि रहल छलाह, ताहि हेतु प्रतीक्षा कएल गेल ओ प्रात भेने १२ बजे हमरा लोकनि संस्कार हेतु प्रस्थान केलहुँ। माएक इच्छानुसार एहि अवसरपर धू-धू बाजाक ओरियान कएल गेल छल। संगे किछु गोटे रस्तामे पैसा उड़बैत रहलाह। संस्कार स्थल गामसँ उत्तर-पूब हमरा लोकनिक आमक गाछी छल। ओहिठाम सभटा व्यवस्था पहिनेसँ हमर अनुज केने छलाह। लगेमे पोखरि आ चापाकल छल। हम चापाकलपर स्नान करए चाहलहुँ, मुदा से ओहिठाम उपस्थित लोक सभकेँ पसिंद नहि

भेलैक आ स्नान पोखरिमे केलहुँ। पोखरिक पानि बहुत खराब छल। कहुना-कहुना डुबकी मारलहुँ आ नव वस्त्र पहिर कोहामे पानि भरि संस्कार स्थलपर पहुँचलहुँ।

मंत्राच्चारक संग चितामे आगि लगेलहुँ। क्रमशः आगि पजरल, पजरैत धधकल। धधरा बढ़ैत गेल आ हमर पूजनीया माएक शरीर धू-धू कए जरए लागल। हम चुपचाप एहि दुखद दृष्यकेँ देखैत रहलहुँ। बीचमे तीन खेप चिताक परिक्रमा करबाक हेतु कहल गेल। ओहि क्रममे ई कहक रहैक जे 'जल्दीसँ जरि जाउ, सभ छोड़ि कए जा रहल अछि।' जाहि माएक बिना एक्को क्षण बच्चा फराक नहि रहए चाहैत अछि, ओहि माएकेँ अपने हाथे अग्निकेँ समर्पित कए दैत अछि। ई संसारक विचित्रता अछि। दू घन्टासँ अन्तिम संस्कारक कार्यक्रम चलि रहल छल। तखन किछु गोटे बजला जे संस्कार भए गेल। सभ केओ आमक डारिक पँच-पँचटा टुनगी बनओलाह। हम आगाँ आ सभ केओ पाछू, सारासँ उन्टा-मुहेँ ठाढ़ भेलहुँ। मंत्रोच्चारक संग ओहि टुनगीकेँ पाछू फेक देल गेल आ लोकसभ बिना पाछू तकने हमर पाछू-पाछू बिदा भेलाह।

एहिसँ पूर्व स्नान कतए हो, ताहि पर चर्चा भेल। किछु गोटेक प्रस्ताव छल जे काली-मन्दिर लगक पोखरि चलल जाए, मुदा से सभकेँ पसिंद नहि भेलनि। अधिकांश लोक नवका पोखरिमे स्नानक पक्षधर छलाह। अन्ततोगत्वा, नवके पोखरि दिस सभ केओ बिदा भेलाह। ओहि क्रममे ई ध्यान राखल गेल जे लौटबाक मार्ग अएबाक मार्गसँ भिन्न होइक। एहि नियमक पालन हेतु दूटा युवक हमरा संगे मार्गदर्शन करैत तेहन रस्ता चुनलाह जकरा मोन पाड़ैत रोमान्चित भए जाइत छी। थाल-कादो, काँट-कुश, जंगल-झाड़

बाटे होइत हम आगाँ-आगाँ आ शेष लोक पाछू चलैत रहलाह। बादमे पता लागल जे किछु लोक गोटे दोसर रस्ता पकड़ि बढ़लाह।

सभ गोटे अन्ततोगत्वा, नवका पोखरिपर पहुँचलहुँ। पोखरिक पानि, घाटक हालत बहुत खराप। पानिमे नहेला पश्चात बेसी अशुद्धे भए जेबाक सम्भावना बुझना गेल । तथापि, जन-भावनाकेँ ध्यान रखैत हम ओहि पोखरिमे स्नान कएल आ शेष लोक सेहो। सभ केओ बेराबेरी स्नान कए घर दिस बिदा भेलहुँ। गामक पुरान रस्ता सभ बन्द भए गेल अछि। जतए रस्ता छल पहिने ततए आब लोक घर बना लेलक। रस्ताक हेतु रस्ता नहि रहल। जेना-तेना छड़पैत, थाल मखैत घर वापस अएलहुँ।

घर आबि कए लोकसभ आगि, पानि, लोह, पाथर छुबि अपन-अपन घर चलि गेलाह। तकर पश्चात प्रारम्भ भेल नाना प्रकारक विध-विधान। कर्ताक ऊपर नाना प्रकारक पाबन्दी। जेना ओ घरमे नहि, बाहरे रहता। हाथमे करचीक डण्टा, डाँरमे वा आसपास लोहक चक्कू। अलग आसन-बासन। प्रेतकेँ डाबामे पानि चढ़ाएब। गरुड़ पुराण सुनब। एकसंझा करब आदि आदि।

यद्यपि श्राद्ध-कर्मक उद्देश्य पूर्णतः मृत आत्माक प्रति श्रर्द्धांजलि व्यक्त करब थिक, परन्तु, एकर प्रारूप आओर प्रक्रिया अतिशय दुरुह आओर कष्टकारी थिक जाहिसँ कर्त्ताक संग परिवारक अन्य सदस्यक स्वास्थ्यक संकट उत्पन्न भए सकैत अछि। कलकत्तामे हमर एकटा सम्बन्धीक श्राद्धक क्रममे एहन घटना घटि चुकल अछि। पिताक श्राद्ध करैत-करैत हुनक पुत्र बहुत तेज बोखारमे पड़ि कए आगूक श्राद्ध करबामे असमर्थ भए गेलाह आओर मजबूरीमे उतरी अनका दए श्राद्ध-कर्मक क्रिया आगू बढ़ल।

आइ-काल्हि अधिकांश लोक गामसँ बाहर रहैत छथि आओर पोखरिमे नहेबाक अभ्यास नहि छैक, संगे पोखरिक पानि साफ, शुद्ध नहि रहैत अछि। अधिकांश पोखरिक पानि जमकल रहैत अछि।

एक दिन एक वृद्ध महिला हमर पत्नीकेँ तरह-तरहसँ प्रश्न करए लगलीह। कर्ताक हेतु भोजन केना बनबै छी? चुल्हि केहन अछि? माटिक बरतन फोरै छिऐक की नहि? कर्त्ता कतए रहैत छथि? चौकीपर, दाइ-गे-दाइ! चौकीपर कहीं कर्त्ता रहलैए! मच्छरदानी नहि होएबाक चाही। कर्त्ता नीचाँमे माटिपर पटिया ओछा कए रहक चाही..! हद तँ तखन भए गेल जे एकादशा दिन कर्त्ता की खाथि अहि लेल जबरदस्त विवाद भेल। अन्तमे, हमर भातिज पण्डितजीकेँ बजा अनलाह। ओ सभकेँ सुना कए घोषणा केलखिन –

'कर्त्ता चूरा-दही खेताह।'

एहिसँ पूर्व पात्रजी सेहो सएह कहने रहथिन। दस दिनसँ अकर-बकर खाइत-खाइत हम तंग भए गेल रही ओ फेरसँ ओएह सभ खेबाक हेतु तैयार नहि रही, तेँ अपन पसिन्दक निर्णय सुनि मोन प्रसन्न भेल। हम चूरा-दही खेलहुँ। मुदा बात एतबेपर समाप्त नहि भेल।

एकटा महिला जोरसँ चिकरलीह-

"दाइ-गे-दाइ कर्त्ता आइ चूरा-दही नहि खाइत अछि। आइ तँ दही-भात खेबाक चाही!"

अपने कहल जाउ जे एहिमे कोन धार्मिकता? सहा-सहा कए, अनुना कए कर्त्ता आओर ओकर परिवारकेँ सता देब कतए केर धर्म

थिक? कहि नहि,मृतात्माकेँ एहिसँ केना सुख वा शान्ति भए सकतनि..!

घरसँ श्राद्ध स्थली (काली मन्दिर) धरि हम चप्पल पहिर कए जाए लगलहुँ तँ महापात्रजीक संग-संग आरो गोटे तकर विरोध केलनि। आपसीमे चप्पल दोसर व्यक्ति पहिर कए आएल आ हम ओहिना अखरे पएरे अबैत रहलहुँ। श्राद्धक उपरोक्त जखन अपन पैर देखिलहुँ तँ विश्वास नहि भेल जे ई हमरे पैर अछि! सौंसे तरबामे मारि चट्ट पड़ि गेल छल। कारी पैरकेँ उज्जर करबामे कएक दिन लागि गेल।

लोक मृतक प्रति श्रद्धाभाव रखैत सभ किछु करैत रहैत छथि। मुदा एहि सभ प्रक्रियाक वैज्ञानिकता आओर समयानुकूल प्रासांगिकतापर विचार होएबाक चाही। मृतक आत्माक शान्ति हेतु कोनो प्रयास कम अछि। सन्तान, समाजक दायित्व अछि जे हुनका प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करए। एहिमे दू मतक कोनो प्रश्ने नहि उठैत अछि। मुदा ई जरूर विचारणीय अछि जे वर्तमानमे चलि रहल श्राद्ध प्रक्रियाक धार्मिक आ समाजिक की औचित्य अछि? विद्वान लोकनि एहिपर उचित विचार कए सकितथि तँ हमरा हिसावे ओ समाजक हेतु बहुत कल्याणकारी होइत। वर्तमान व्यवस्थामे कर्त्ता, हुनक पत्नी आ अन्य भाए लोकनि द्वादशा धरि अनूना करैत छथि। कर्त्ताक हेतु मृतात्माक हेतु भोजन संगे बनैत अछि। ओ नित्य एकसंझा करैत छथि। गाहे, वगाहे फालादि खाइत छथि। हुनकर सभ किछु फराक रहैत अछि। नित्य महापात्र कर्म करबैत छथिन। कर्म करएसँ पूर्व पोखरिमे स्नान, कर्मक पश्चात स्नान। दसम दिन केस कटैत अछि। तदुपरान्त एकादशा द्वादशाक विधान अछि।

महापात्रजीकेँ नित्य दछिना चाही।

गरुड़ पुराणक खिस्सा सभ सुनैत-सुनैत कएक बेर हँसियो लागि जाइत छैक। नाना प्रकारक नर्कक वर्णन अछि। ओहिमे किछु विशेष नर्क सभ अछि। जेना केन्द्रीय कारागार होइत अछि। मृतात्माकेँ रस्तामे केहन कुटिल मार्गसँ जाए पड़ि सकैत अछि। तकर वर्णन भेटत। कथानक केर मूल उद्देश्य नीक बुझाइत अछि, मुदा जाहि प्रकारक तथ्य आओर कथाक समावेश एहिमे अछि, ताहि पर विचार आवश्क बुझाइत अछि। नीक कर्म केलासँ सद्गति भेटत,अधलाह करब तँ कष्टकारी नर्क भेटत, सारांश एतबे।

तात्पर्य आस्थामे प्रश्न-चिन्ह लगाएब नहि अछि । अपितु, वर्तमानमे प्रचलित श्राद्ध व्यवस्थाकेँ समयानुकूल वैज्ञानिक आओर विकसित करब अछि। मृतात्माकेँ श्रर्द्धांजलिक आदर सहित अबश्य आयोजन होएबाक चाही। परमात्माक प्रार्थना, भजन, कीर्तन सेहो होएबाक चाही जाहिसँ मृतात्माकेँ शान्ति होनि, हुनक परिवारकेँ आत्मसंतोष होनि । परन्तु, वर्तमान प्रक्रिया उपयुक्त अछि कि नहि- एहिपर विचार होबक चाही। कहि सकैत छी जे १२-१३ दिनक बात छैक, माए-बाप कोनो रोज-रोज तँ मरैत नहि छथि। जे होइत अछि, जेना होइत अछि निपटि ली। आ अही कारणसँ एहि समाजिकताक निर्वाह लोक करैत अछि।

मुदा एकर आकार, प्रकार आओर वैज्ञानिकतापर विचार करबामे कोनो दिक्कत नहि होएबाक चाही। उदाहरणस्वरूप वृषोत्षर्ग श्राद्धकेँ पंचदानसँ श्रेष्ठतर बुझल जाइत अछि । परन्तु, विचारणीय प्रश्न थिक जे एकटा निर्दोष बाछाकेँ लोहा धीपा कए दागि देल जाइत, एहि हद धरि जे ओ भोखरैत, चिकरैत रहए,

ओकर चमरी ओदरि जाइत, आ कहल ई जाइत जे मृतक एहिसँ स्वर्ग जेताह, अमानवीय लगैत अछि। ततबे नहि, ओ बाछा गाम-गाम वौआइत रहैत अछि आ जजाति चरि जाइत अछि, जाहिसँ गौंआँ सभ परेसान रहैत छथि। कोनो युगमे ई प्रयोग लाभकारी रहल होइ ,मुदा आब तँ ई उचित नहि लगैत अछि।

श्राद्धक क्रममे महापात्र लोकनि एक्के मंत्रकेँ बेरबेर दोहरबै छथि। जतेक प्रकारक बरतन, सामग्री दान होएत, सभकेँ बेराबेरी दान कएल जाइत अछि। एक्के मत्र-सभकेँ बीसो बेर पढ़क प्रक्रिया कष्टकारी अछि। एक्के बेरमे सभ दानक सामग्रीक हेतु मंत्र पढ़बामे कोन दिक्कत छैक? ओहिना १४ मासिक कर्म करएमे बेरबेर एक्के प्रक्रियाकेँ दोहरओल जाइत अछि, जाहिमे १२ दिन लगभग सहैत कर्ताकेँ कष्ट होएब स्वभाविक थिक। मंत्रकेँ एहन संशोधित कएल जा सकैत अछि जे २-३ बेरमे सभ मासिक श्राद्ध सम्पन्न भए जाए। परन्तु, समस्या तँ अधिकसँ अधिक दछिनासँ जुड़ल अछि। जतेक मासिक श्राद्ध हेतैक ततेबेर दछिना कबुलनामा हेतैक। आमक गाछ दान करू, मोनक मोन वर्षकृत्य हेतु अन्न दान करू। हँसी तखन लागल जे महापात्रजी मोटर साइकिल दान करबाक हेतु, कहैत कहलाह जे हुनकर पुत्र एहि हेतु प्रेरणा दए रहल छनि। विद्वान लोकनिकेँ एहि समस्या सभ पर विचार करब जरूरी बुझाइत अछि, जाहिसँ वर्तमान परिवेशमे श्राद्धक परम्पराक निर्वाह सुगम होइत, जाहिसँ अगुओ ई चलैत रहए।

कोनो पितर वा मृतात्मा नहि चाहताह जे हुनकर नामपर हुनके सन्तानकेँ कष्ट होनि। अर्थिक बरबादी होनि । प्रश्न श्रद्धा आओर आस्थाक अछि, एहि हेतु कहल जा सकैत अछि जे एहिपर

चर्चा व्यर्थ अछि। परन्तु, यदि अहिना आँखि मुनि परम्पराकेँ निर्वाह होइत रहत तँ भए सकैत अछि जे क्रमश: ई व्यवस्था विलुप्त भए जाइक कारण अधिकांश लोक आब प्रवासी भए गेल छथि। गामसँ सम्पर्क क्षीण भए गेल छनि । सहरमे ओ सुविधा, वातावरण नहि अछि। तथापि, लोक वर्तमान व्यवस्थाकेँ चला रहल अछि, मुदा अन्य समाजमे एहन टेँढ़ व्यवस्था नहि अछि। अस्तु, श्राद्ध व्यवस्थाक औचित्यपर प्रश्न चिन्ह लागत?

अपना इलाकामे श्राद्ध भोज आम बात अछि। एकादशा आओर द्वादशा, दुनू दिन ब्राहमण -भोजनक व्यवस्था अछि। सम्भवत: एगारह गोट व्राह्मण-भोजन एहि हेतु पर्याप्त अछि । परन्तु, व्यवहारमे बात भिन्न अछि। लोक गामक गाम भोज करैत छथि जाहिमे लाखो रूपैआ खर्च होइत अछि। एकादशामे सिद्ध अन्न आओर द्वादशामे असिद्ध अन्न, जेना पुरी, मिठाइ आदि-आदि। रसगुल्ला, छेना तँ अनिवार्य भए गेल अछि। पहिने पुरी, जिलेबीक भोज होइ तँ गामक गाम सोर भए जाइ छल । मुदा आब हालत बदलि गेल। लोकक जेबी भरल छैक। जबार नोतब आम बात भए गेल अछि। समाजिकता आओर मनोरंजनक द्दष्टिए एकरा पसिन्द कएल जा सकैत अछि । परन्तु, एकर धार्मिक कर्मकाण्डीय औचित्यपर विचार उचित अछि। बढ़िआँ होइत जे एहि अर्थ शक्तिक प्रयोग वयोवृद्ध आओर असक्य लोकनिक सेवा वो संरक्षणमे होइत। हम एहि प्रकारक चर्चा गाममे केलहुँ, गाहे-वगाहे पहिनौं करैत रहलहुँ । परन्तु, लोक लीकसँ हटि कए करबा हेतु तैयार नहि होइत छथि। सोचै छथि जे खूब भोज कए देलासँ दिवंगतक प्रति अपूर्ण रहि गेल दायित्वक एहि तरहेँ सम्भरण भए जाएत । मुदा से सही नहि अछि। आब भोज खेनिहार लोको सभ

तंग भए गेल छथि आ लोकमे भोजक प्रति वो उत्साह नहि देखल जाइत अछि जेना पहिने रहैक। लोकसभ भोज खाइत-खाइत तंग भए जाइत छथि । तथापि, समाजिक दायित्व बुझि एहि परम्पराक निर्वाह कए रहल छथि।

कहल जा सकैत अछि जे हम वर्तमानमे चालू परम्परामे गलतीएटा देखा रहल छी । मुदा किछु विकल्प नहि प्रस्तुत कए रहल छी। ई बात सर्वविदित अछि जे श्राद्धक व्यवस्था धार्मिक आस्था आओर मृतक प्रति श्रद्धासँ जुड़ल अछि आओर सभ धर्म, जाति, समाजमे विद्यमान अछि। सही मानेमे श्राद्धक उद्देश्य मृतक प्रति सम्मान आओर श्रद्धाक अभिव्यक्ति अछि। मृत्युपरान्त जीवन, पुर्जन्म, श्राद्धक कारण पितर-लोकनिक कल्याण, ई सभ विषय गम्भीर अन्वेषणक अपेक्षा रखैत अछि आ लोक अपन-अपन दृष्टिसँ एकर समाधान कए सकैत छथि । परन्तु, एतावत ई तँ बुझाइत अछि जे श्राद्धक वर्तमान व्यवस्था बोझिल, जटिल आओर बहुत अधिक यांत्रिक अछि आओर एहिमे सुधारक पर्याप्त गुंजाइश अछि। उदाहरणस्वरूप श्राद्धक कार्यक्रम १२ दिनक अपेक्षा ४ वा ५ दिनमे समेटल जाए। दोसर दिन केसकट्टी आ तेसर, चारिम दिन श्राद्ध भए सकैत अछि। पाँचम दिन माछ-भात। उपरोक्त समय-सारणीक अनुसार श्राद्ध व्यवस्थामे संशोधन भए सकैत अछि आ हेबाको चाही। हमर आग्रह अछि जे एहि विषयक विद्वान पण्डित लोकनि आपसी चर्चा कए संशोधित व्यवस्था पंचाग आओर अन्य प्रकारेण प्रकाशित, प्रचारित करथि। ई आत्यावश्यक अछि। तखने अपन समाजक एहि संस्कारक जीवन्त रहबाक सम्भावना रहत अन्यथा कालक्रमे सभ अपने-आप एहि व्यवस्थाकेँ तिलांजलि दए देथि तँ कोनो आश्चर्य नहि।

हमरा लोकनि स्मार्टफोन, फोरजीक युगमे रहि रहल छी। संचार व्यवस्थाक संगे जीवनक समस्त आयाममे आधुनिकताक समावेश भए रहल अछि। विश्व एक परिवार बनि गेल अछि। दुनिआक कोनो भागमे रहैत हमरा लोकनि आधुनिक संचार, व्यवस्थाक सहयोगसँ अपन संस्कार, संस्कृतिसँ जुड़ाव रहि सकैत अछि । मुदा ताहि लेल जरूरी अछि जे हमर परम्परामे वैज्ञानिकता, आधुनिकताक समावेश होअए।

हमर विचार अछि जे श्राद्धक वर्तमान व्यवस्थामे सुधारक सम्भावना आओर आवश्यकता अछि। श्रद्धा, विश्वास आ आस्थाक रक्षा करैत व्यवहारिकता आओर आधुनिकताक समावेश होएबाक चाही आओर समयानुकूल सर्वसुलभ पद्धति विकासक हेतु विद्वान लोकनिकेँ प्रयास करक चाही।



भोजक परम्परा

गुरु नानकक एकटा कथा बहुत प्रचलित अछि। यात्राक क्रममे गुरु नानक एक बेर पाकिस्तानक सैदपुर गाममे रहनिहार भाए लालोक ओहिठाम तीन दिन रहलाह। भाए लालो हुनकर बहुत सेवा केलक। ओही समयमे ओहि क्षेत्रक मालिक, भागो नामक मुसलमान जमीन्दार भोज केलक। ओहिमे सभ साधु-सन्तकेँ आमंत्रित कएल गेल। मुदा गुरु नानक ओतए नहि गेलाह। जखन भाए भागोकेँ ई बात पता लागल, तँ ओ बहुत तमसाएल आ गुरु नानक लग आबि पुछलकनि-

“अहाँ हमर भोज किएक नहि खेलहुँ? की एहि दरिद्रक भोज हमरा ओहिठामसँ बढ़िआँ अछि?”

गुरु नानक बजलाह तँ किछु नहि ,मुदा दुनू गोटाक ओहिठाम बनल रोटीकेँ हाथमे लेलाह आ दुनू गोटाक समक्षे, भाए लालोक ओहिठाम बनल रोटीकेँ दबओलाह तँ ओहिसँ दूध निकलए लागल, जखन कि मालिक भागोक ओहिठाम बनल स्वादिष्ट पकवानसँ खून टपकए लागल..!

..तात्पर्य, परिश्रम ओ इमान्दारीक कमाइसँ अर्जित धनसँ बनाओल भोजने सही मानेमे खाद्य भए सकैत अछि। अर्थात् जेना-तेना धनोपार्जन कए मात्र अहंकारक प्रदर्शन आओर अहं तुष्टिक हेतु कएल गेल भोजमे कोनो धर्मिकता नहि भए सकैत अछि, पितरक मुक्तिक तँ प्रश्ने नहि उठैत अछि... । समस्त यज्ञक तात्पर्य समाजमे शुभ कर्मक प्रचार थिक। जँ कर्म ठीक नहि अछि, अन्याय द्वारा धनोपार्जित कए धर्मक उपार्जनक प्रयास व्यर्थ थिक।

जन्मसँ लए कए मृत्युपर्यन्त अनेकानेक अवसरपर व्राह्मण भोजन करेबाक प्रचलन अछि। उपनयन, एकादशी यज्ञ, पितृपक्ष, आओर श्राद्ध सन यज्ञ कार्य व्राह्मण-भोजनक बिना अधूरा मानल जाइत अछि। पितृपक्षक दौरान व्राह्मण भोजन पूर्वजक आत्माक शान्ति आओर सन्तुष्टिक हेतु कएल जाइत अछि। जाहि पूर्वजक मृत्यु जाहि तिथि कए भेल रहैत छैक, तिनका निमित्ते ओहि तिथि कए व्राह्मण भोजन कराओल जाइत अछि।

असलमे पितृपक्षक आयोजन पूर्वज लोकनिक प्रति श्रद्धा ज्ञापित करबाक हेतु कएल जाइत अछि। कहल जाइत अछि जे पूर्वज सभ एहि समयमे अपन सन्तानक ओहिठाम अबैत छथि आओर हुनका स्मरणमे कएल गेल व्राह्म्ण-भोजन, दान-पुण्य आदि करैत देखि बहुत प्रसन्न होइत छथि, खुसी होइत छथि आओर अपन सन्तानकेँ आशीर्वाद दैत छथिन।

कहल जाइत अछि जे कर्ण जखन मृत्योपरान्त स्वर्ग गेलाह तँ ओहिठाम हुनका नाना प्रकारक वस्तु सभ भेटलनि। चूँकि ओ महादानी छलाह, अस्तु, हुनका द्वारा दान कएल गेल वस्तु सभकेँ ओतए जाइते कएक गुणा बेसी कए हुनका वापस कए देलकनि। मुदा अन्न, पानि किछु नहि भेटलनि, जाहिसँ ओ बहुत परेसानीमे रहथि। पश्चात ओ धर्मराजसँ चौदह दिनक हेतु पृथ्वीपर पठाबक आग्रह केलखिन। से बात धर्मराज मानि लेलखिन। कर्ण १४ दिनक लेल मृत्युलोक आबि कए पर्याप्त मात्रामे अन्न जल दान केलनि, आ १४ दिनक बाद जखन ओ वापस स्वर्ग गेलाह तँ हुनका पर्याप्त मात्रामे अन्न आ जल प्राप्त भेलनि। तहिएसँ आश्विन कृष्ण-पक्षमे पितृपक्षक आयोजन होइत आबि रहल अछि।

पूर्वजक प्रति श्रद्धाक अभिव्यक्ति लोक तरह-तरहसँ व्यक्त करैत अछि । कहल जाइत अछि जे पितृ-ऋृणसँ उद्धारक लेल श्राद्ध, तर्पण, व्राह्मण-भोजन आदि बहुत सहायक होइत अछि। यदि सन्तान नीक काज करैत छथि, वंशक कीर्तिकेँ बढ़बै छथि तँ पितर हुनकासँ प्रसन्न होइत छथिन आओर हुनकर शुभ कार्यक सफलतामे सभ प्रकारसँ सहयोग सेहो करैत छथिन।

मनुक्ख मरि कए, कतए जाइत अछि, फेर जन्म लैत अछि की नहि, जन्म लैत अछि तँ कतए, केना आ कोन-कोन रूपमे..? एहि सभ विषयपर हजारो सालसँ चर्चा होइत रहल अछि । मुदा अखनो धरि कोनो तेहन सटीक जवाब नहि ताकल जा सकल जे सभ गोटेपर माने सभ व्यक्तिपर लागू भए सकए किंवा सभकेँ सन्तुष्ट कए सकए। एतावत ई तय अछि जे मुइला बाद मनुक्खक वर्तमान शरीर नष्ट भए जाइत अछि। ओकर चेतना समाप्त भए जाइत छैक आ शरीरकेँ व्यर्थ भए जेबाक कारण ओकरा अपन-अपन रीति-रिवाजक अनुसार जरा देल जाइत अछि, किंवा गाड़ि देल जाइत अछि। किछु गोटेक धारणा छैक जे मृत्युक बाद शरीर नष्ट भए जाइत अछि, मुदा आत्मा अजर-अमर थिक, आत्मा नष्ट नहि होइत अछि। आत्माक पुनर्जन्म होइत छैक, ओकरा नवीन शरीर भेटि जाइत छैक। शरीर भेटिते ओकर आकार-प्रकार पूर्व कर्मपर निर्भर करैत अछि।

गीतामे कहल अछि जे जाहि भावकेँ ध्यानमे राखि लोक मरैत अछि, तदनुसार ओकरा अगिला जन्म भेटैत छैक। गरुण पुराणक अनुसार मृत्युक १३ दिनक पश्चात यमलोकक यात्रा प्रारम्भ होइत अछि, जाहि यात्रामे १७ दिन लगैत छैक। तकर बाद ११

मासक धरि ओ यमलोकमे रहलाक बाद यमराजक दरबारमे पहुँचैत अछि। ओहि क्रममे ओकरा भोजनक एकमात्र साधन सन्तान द्वारा देल गेल पिण्डदान होइत अछि। अस्तु, मृत्युक उपरान्त साल भरिक श्राद्धकर्म बहुत महत्वपूर्ण होइत अछि।

मुदा प्रश्न अछि जे जीवनक आ जीवनक पश्चात ई प्रक्रिया की आनो धर्मक लोक सभपर लागू होइत अछि? पारसी, मुसलमान वा क्रिश्चनक धार्मिक विश्वास अलग-अलग अछि। की ओकरा सभपर जीवन-मृत्युक विधान अलग-अलग होएत? की ओकर सभहक मृतात्माकेँ शान्ति नहि हेतैक? की ओकरो यमलोक जाए पड़तैक किंवा मृत्युक बादो धर्मानुसार अलग-अलग व्यवस्था होएत? मनुक्खसँ हटि कए श्रृष्टिमे विद्यमान अनेकानेक जीव-जन्तु सेहो अछि, ओहो जीवन-मृत्युसँ जुड़ल अछि, ओकरो मृत्यु होइत छैक। मृत्युक बाद ओकर की हेतैक?

अस्तु, ई सोचएमे अबैत अछि जे जीवनक अन्त कतहु-ने-कतहु होइते अछि। समस्त जीवक शरीर नष्ट भए जाइत अछि। तकर बाद की होइत अछि? जे होइत अछि से होइत अछि । मुदा हम सभ एहिपर विचारे किएक करैत छी? एही लेल नहि जे मृत्युसँ हमर भावुक लगाव रहैत अछि। मुदा नित्य प्रति जे हजारोक संख्यामे लोक मरैत अछि, तकरा प्रति हम कोनो संवेदनशीलता कहाँ राखि रहल छी? लोक मरि जाइत अछि तकर बाद ओकर स्मृति शेष रहि जाइत अछि। ओकरा प्रति लोकक खास कए अपन लोकक अनुराग बनल रहि जाइत छैक, ओकरा द्वारा कएल गल उपकारक प्रति कृतज्ञताक भाव मोनमे उमरैत रहैत छैक, आ ओहि भावक अभिव्यक्तिक माध्यम श्राद्ध भए सकैत अछि। मुदा ओकरा

कर्मकाण्डसँ जोड़ब, नाना प्रकारक विध-विधानसँ जोड़ब किंवा ओहि निमित्ते गाम-गामक भोज करब ई समाजिक परम्पराक अंग भए सकैत अछि, जे कालक्रमे एकटा नियम बनि गेल अछि।

स्वेच्छासँ जे व्यक्ति श्रद्धापूर्वक एकर निर्वाह करैत छथि, तिनका लेल तँ ओकर औचित्य भए सकैत अछि, मुदा कोनो परम्परा विशेषकेँ अनिवार्यताक हद धरि आनि देब, वैज्ञानिक सोचक अनुकूल नहि कहल जा सकैत अछि। जीवन, मृत्युक समस्त सिद्धान्त सभ जाति आ सभ धर्मक लोकपर समान रूपसँ लागू होइत अछि। राजा हो, रंक हो, कोनो जातिक हो, कोनो धर्मावलंवी हो, सभ बच्चासँ युवक, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्थाक उपरान्त क्रमशः मृत्युकेँ ग्रहण करबे करैत छथि। तात्पर्य हमर ई अछि जे जीवनक समस्त क्रिया जखन एक्के रंग अछि, तँ जीवनक बादोक क्रियामे वैज्ञानिकता, समानता हेबे करतैक। हमरा लगैत अछि जे एहि सभ प्रश्नक वस्तुनिष्ठ उत्तर कठिन अछि, कारण ई लोकक भावनासँ जुड़ल अछि। निश्चय लोक अपन धार्मिक विश्वासक अनुरूप चलैत अपन लोकक मृत्युक बादक स्थितिक हेतु प्रयत्न कए सकैत अछि, मुदा एहिमे वैज्ञानिक सोचक समावेशसँ कोनो अहितक सम्भावना नहि अछि।

मनुक्ख अपन-अपन कर्मानुसार जीवन किंवा ओकर बादो सुख-सुविधा प्राप्त करैत अछि। नीक काज केनिहार लोक चाहे ओ कोनो धर्मक होथि, मृत्युक बादो बेहतर स्वरुपमे रहत तकर अनुमान कएल जा सकैत अछि। धार्मिक अनुष्ठान किंवा कर्मकाण्डक एतबा महत्व तँ निश्चित अछि जे ओ मृतक परिवारक लोककेँ श्रद्धांजलिक अभिव्यक्तिक अवसर प्रदान करैत अछि।

एहि सभ विषयमे लोकक मान्यता सामान्यत: लीकसँ हटि कए चलबासँ मनाही करैत अछि। एक केलक, दोसर केलक, गाममे सभ केलक, आ करिते चल गेल। परन्तु, शास्त्रमे जे बात सभ नहि अछि, सेहो लोक श्रद्धापूर्वक अपनओने रहैत अछि आ कालक्रमे ओ एकटा समाजिक कानूनक रूप धए लैत अछि। श्राद्धक भोजमे सेहो सएह भए रहल अछि। जतेक गामक भोज हेतैक ततेक बेसी मृतककेँ पैठ हेतनि, हुनका स्वर्गमे बेसी सुख हेतनि। एहन कतेको लोक छथि जे दबावमे किंवा भावनाक आवेशमे गामक-गाम भोज करैत गेलाह, खेत-पथार बेचि-बेचि कए भोज केलाह आ तकर बाद कर्जा सधबैत रहलाह । निश्चित रूपसँ एहि सभ विषयपर विचार करबाक प्रयोजन बुझाइत अछि, मुदा विलाड़िक गरामे घण्टी बान्हत के?

हमरा एकबेर एकटा सरदारजी भेटलाह। ओ कोनो सरकारी विभागमे उच्च अधिकारी छलाह। भेँट होइते जखन गप्प-सप्प भेल तँ ओ कहलाह जे हुनका सभमे बिआहक अलगसँ शुभ दिन नहि ताकल जाइत अछि। रवि दिनक दिनेमे गुरुद्वारामे बिआह भए जाइत अछि। जँ ओ दिन ग्रहक हिसाबे होइत तँ कोनो सरदार जीवित नहि रहितथि। मुदा देखिते हेबैक जे सरदारजी सभ केहन हृष्ट-पुष्ट होइत छथि। कहक माने जे नीक काज करैत रहू, सभ ग्रह अहाँक अनुकूले रहत। अपना सभमे कनिकोटा किछु होइए कि लोक भदवा, दीर्घशूल, नीक दिनक विचार करए लगैत अछि।

अपना एहिठाम श्राद्धक अलावा उपनयन , एकादशी यज्ञ आदि-आदि अनेको अवसरपर सेहो भोज करबाक परम्परा अछि। उपनयनमे दू वा तीन दिन बेर भोज होइत अछि। असलमे

उपनयनक मूल उद्देश्य तँ पाछू रहि जाइत अछि। आर-आर तरहक आडंवरपूर्ण तरीकासँ एकरा मना कए लोक सन्तुष्ट भए जाइत अछि। उपनयनक मूल उद्देश्य बच्चामे नीक संस्कार देव थिक। मुदा आब तँ ओ एकटा उत्सवक रूप लए लेने अछि। एहि अवसरपर लोक भोज-भात, गाना-बजौना करैत अछि। जकरा जतेक आडंवर पार लगलैक से केलक आ भए गेल उपनयन। ककरो केओ कहबो की करत? ओना जाहि तरहेँ लोक जहाँ-तहाँ पसरि गेल अछि,हुनका सभकेँ एहि सभ तरहक अवसर भेटने अपन लोक-वेदसँ आपसमे भेँट-घाँट होइत छैक। ताहि हिसाबे एहि सभहक समाजिक महत्व तँ अछिए। मुदा आब तँ बिआह-दान, उपनयन आदि आनो-आन काज सभ लोक सहरेमे सम्पन्न कए लैत छथि, कारण ओहिठाम व्यवस्था करब असान रहैत अछि। गाम-घरसँ क्रमश: सम्पर्क कम भेल जा रहल अछि। गाम जा कए काज करब तँ खर्चा ओ झंझट दुनू बेसी भए जाइत अछि, तेँ लोकसभ एहिसँ बँचबाक प्रयास करैत रहैत छथि।

प्रचुर मात्रामे भोज आनन्दक अभिव्यक्तिक प्रमुख साधन अछि। तौर-तरीका चाहे जे हो, मुदा भरिपोख भोजन करब ओ कराएब सभ दिनसँ सुखद रहल अछि। आखिर हमरा लोकनि जे एतेक परिश्रम करैत छी, नौकरी कए धनोपार्जन करैत छी, किंवा तरह-तरहक व्यवसाय करैत छी, से किएक? अही लेल जे नीकसँ जीबी, प्रतिष्ठा अर्जित करी आ जे अभिलाषा अछि तकर पूर्ति करी।

भोजन करब जीवन रक्षाक हेतु अनिवार्य अछि। जकरा बहुत छैक ओ तरह-तरहक भोजन कए सकैत अछि आ जे गरीब, कम साधनबला लोक अछि, सेहो कहुना खेबे करत। नहि खाएत

तँ मरि जाएत। सही मानेमे भोजन जीवनक पर्याय थिक। इएह कारण थिक जे जँ किछु मौका भेटैत छैक तँ लोकसभ भोजन विन्यासमे लागि जाइत अछि।

बच्चामे भोज खेबाक जबरदस्त जिज्ञासा रहैत छल। एक दिन पहिनेसँ गाममे गर्द पड़ि जाइत छल जे फल्लाँ बाबूक ओहिठाम सबजाना भोज छैक। भोर भेने घरे-घर नौत देल जाइक। बच्चा सभक उत्सुकता बढ़ल जाइक। दिन बीतैत-बीतैत बिझो होइत आ लोकसभ भोज खेबाक हेतु बिदा भए जाइत। ओहि समयमे पूरी-जिलेबीक भोज चर्चाक विषय भए जाइत छल। केओ-केओ खाजा वा मुंगबा सेहो जोड़ि दथि।

हम सभ जखन हाइ स्कूलमे रही तँ गाममे पुरी-जिलेबीक भोज रहैक। मास्टर साहेबकेँ कहि कए सबेरे स्कूलसँ छुट्टी लए लेने रही। अपना गामक चारि-पाँचटा विद्यार्थी सभ उत्साह पूर्वक स्कूलसँ गाम बिदा भेल रही- भोज खेबाक हेतु। भोजमे बिजहो भेल। हम सभ सही समयपर गाम आबि गेल रही। उत्साह पूर्वक अपन संगी सभहक संगे भोजमे बैसलहुँ। आँजुर भरि-भरि जिलेबी परसल जाइत देखि जे आनन्द होइत छल से की कहूँ...।

जिलेबी खाइत-खाइत जखन लोक थाकि जाइक तँ खाजा, मुंगबा उठाओल जाइक। भूख बाँचल रहैत नहि । तथापि, अपना भरि लोक प्रयास करए। केओ-केओ भोज खाएमे माहिर होइत छलाह, से अन्तिम लेल भूख बँचा कए राखथि, जाहिसँ कोनो नीक अवसर हाथसँ नहि निकलि जाए। सभसँ अन्तमे दही, चीनी, नून, आदि-आदि परसल जाइत छल। खाइत-खाइत लोक नकसका जाइत छल। जतेक लोक खाइत छल, ओहिसँ बेसी पातपर छुता

जाइत छल। एहि कात-सँ-ओहि कात धरि पात सभपर कतेको मधुर, दही, तरकारी, पुरी सभ ऐंठमे पड़ल रहि जाइत छल। लगैत जेना कोनो भयानक युद्धक दुखद अन्त भेल हो। जे होइक, से होइक, मुदा अपव्यय तँ होइते छल। जाधरि समान छुटा नहि जाइत ताधरि जेना खेनिहारकेँ सन्तोषे नहि होनि।

आब तँ बिना रसगुल्लाक गाममे कोनो भोज होइते नहि अछि। गाममे लोकक अभाव भए गेल अछि। सभ गाम छोड़ि सहर धए लेलक तेँ भोजक पाँतिमे एकछाहा बुढ़ वा बच्चा भेटत। मुदा भोज चलिए रहल अछि। जबार भोज करब आब आम बात भए गेल अछि।

गाम सभमे अखनहु नाना प्रकारसँ भोजक आयोजनमे निरन्तर खर्चा होइत रहैत अछि । यद्यपि एहि तरहक आयोजनक तात्कालिक प्रभाव भए सकैत अछि। लोकमे चर्चा भए सकैत अछि, मुदा एकर कोनो दीर्घकालीन प्रभाव नहि होइत अछि। एहि तरहेँ व्यय होइत धनशक्तिक उपयोग जँ गामक कल्याणमे कएल जाए तँ गामक नक्शा बदलि सकैत अछि। गाममे सार्वजनिक महत्वक काज जेना बेहतर चिकित्सा व्यवस्था, वृद्ध लोकनिक सेवा केन्द्र, बच्चा सभहक हेतु उत्तम शिक्षा व्यवस्था कएल जा सकैत अछि।

हम ई कदापि नहि कहि रहल छी जे मान्य परम्परामे एकदमसँ रोक लगा दिऔक, से सम्भवो नहि अछि, मुदा क्रमश: ओकर रूपान्तरण कएल जाए। भोजोकेँ अपना स्थानपर अपन महत्व छैक, मुदा गामक-गाम नोतल जाए, एहि चक्करमे जे हम ककरोसँ कम नहि, से बात आब बहुत प्राशंगिक नहि रहि गेल। फेर

जखन गाममे सबजाना भोज होइत छैक तँ स्त्रीगणकेँ किएक नहि निमंत्रित कएल जाए? ओना, कतहु-कतहु- हुनको सभक हेतु खाएक पठेबाक चलन अछि । मुदा ओ पर्याप्त नहि अछि। कतेक बेर तँ खाएक पहुँचैत-पहुँचैत १२-१ राति भए जाइत अछि। सोचल जा सकैत अछि जे ओहि खाएकक बाट के तकैत रहत? ओहो फेकाइते अछि। कहक माने जे जखन भोज करिते छी तँ अपन गामक आधा जनसंख्याकेँ किएक छोड़ि दैत छिऐक? आब युग बदलि रहल अछि, बदलिओ गेल अछि। महिला सशक्तिकरणक युगमे हमरा लोकनि कतेक दिन पछुआइत रहब। जखन गाममे सबजाना होइते अछि, तँ स्त्रीगण सभकेँ सेहो आमंत्रित कएल जाए। हुनका सभकेँ अलग पाँतिमे बैसा सकैत छी वा पहिने स्त्रीगणे सभ खा लेथि तकर बाद दोसर खेपमे शेष लोक खा सकैत अछि, मुदा स्त्रीगणकेँ गामक सबजाना भोजमे कात कए देब अनुचित थिक आ एहि विषयपर विचार अपेक्षित अछि। अपन गामक लोक छुटि जाइत अछि आ आन-आन गामक लोककेँ जबारक चक्करमे नोतल जाइत अछि। अपन समाजमे अनेकानेक विकार सभ अछि जाहिमे भोज- भातक वर्तमान परम्परापर अबिलंब ध्यान देब जरूरी अछि।

देशमे करोड़ो लोककेँ अखनो दुनू साँझ भोजन नहि भेटैत छैक। बच्चा सभ पौष्टिक अहारसँ वञ्चित रहि कुपोषणक सिकार अछि! विद्यालय जेबाक तँ बाते छोड़ू जे सरकारक निरन्तर प्रयत्नक अछैत आवासक सुविधा नहि छैक। सहरी गरीबक हालत तँ आरो दयनीय अछि। सवाल अछि जे एक तरफ सम्पन्न वर्ग जश्न मना रहल अछि, कोनो मौकाटा होएबाक चाही, तरह-तरहसँ पंच सितारा होटलमे पाटी करैत रहैत अछि, साधारणो परिवेशक लोक

समाजिक परम्पराक निर्वाहक हेतु भोज-भात करैत रहैत अछि, दोसर दिस ओहि आसपासक गरीब-गुरबा जीवनक समस्त सुख सुविधासँ वञ्चित महा कष्टमे जीब रहल अछि। अपन छोट-छोट सन्तानक रक्षामे असमर्थ अछि। पढ़ाइ-लिखाइ आ चिकित्सा सभ किछु नदारद छैक। आखिर एहिपर हमर सभहक ध्यान किएक नहि जाइत अछि? अपने समाजक वञ्चित व्यक्तिक उचित सहायता कए ओकर जीवन यात्राकेँ सुगम ओ आनन्दमय बनाबक सहयोगी भए जे आन्तरिक सन्तुष्टि भेटि सकैत अछि, से प्राय: अन्यथा सम्भव नहि।

यद्यपि भोज करबाक परम्परा अति प्राचीन अछि आओर नाना प्रकारसँ लोकक धर्मिक भावनासँ जुड़ल अछि, मुदा वर्तमान समाजिक, आर्थिक परिवेशमे एकर पुनरावलोकन जरूरी अछि। धार्मिक आओर समाजिक पक्षक संग एकर आर्थिक प्रभाव सेहो विचारणीय अछि। यद्यपि गामो-घरमे लोकक आर्थिक स्थिति सुधरल अछि, फूसक घरक स्थान पक्का मकान सभ लेने जा रहल अछि । तथापि, अखनो बहुत रास लोक जीवनक तमाम सुख सुविधासँ वञ्चित छथि। सम्पन्नो घरक विधवा, बुढ़ किंवा स्त्रीगण सभ-तरहेँ सम्पन्न, सुखी नहि रहि पबैत छथि। कतेको कुशाग्र, प्रतिभाशाली बच्चा अखनो उचित सुविधाक मोहताज रहि जाइत अछि आ हुनकर भविष्य वर्तमानक संघर्षमे नष्ट भए जाइत अछि।

हम सभ जँ जनकल्याणक भावनासँ प्रेरित भए अपनो समाज, अपनो गामक ओहन उपेक्षित लोकक कल्याणमे अपनाकेँ जोड़ि सकी तँ निश्चय समाजक स्वरुप बदलि जाएत। धार्मिक अनुष्ठानकेँ ध्यान रखैत समाजक वर्तमान परिस्थितिक अनुरूप

मान्य परम्परामे रचनात्मक सुधार भए सकैत अछि आ हेबाको चाही। समाजिक समरसता आओर पारस्परिक सहयोगक भावनाक निरन्तर विकास होइत रहए आओर जनशक्ति, धनशक्ति आओर राजशक्तिक उपयोग जनकल्याण हेतु भए सकए एहि सँ नीक धर्मिकता की भए सकैत अछि?

बड़का-बड़का सन्त महात्मा लंगर करैत छथि जाहिमे गरीब-गुरबा, सन्त-फकीर सभ भोजन कए अपन प्राण रक्षा करैत छथि। जीवन रक्षार्थ कएल गेल एहन प्रयास स्तुत्य अछि, परन्तु, वाह्य आडंवर किंवा अहंकारक प्रदर्शनक उद्देश्यसँ कएल गेल जबार भोज सभमे जनकल्याणक भावना गौण भए जाइत अछि। अस्तु, समाजमे धन आओर जनशक्तिक उपयोग जन कल्याण हेतु भए सकए, ताहि लेल प्रयास होएबाक चाही।



चाह पीवि लिअ

भोरमे उठिते पहिल चीज जे ध्यानमे अबैत अछि, से थिक चाह। कएक बेर मोन होइत अछि जे भोरुका सभ काज–जेना टहलब, नहाएब छोड़ि दी आ चाह पीवि ली। फेर देखल जेतैक। चाहक आगमोन देखि मोनमे हुलास भए जाइत अछि। चाहक एक-एक घोंट जेना शरीरक भीतर जाइते उत्साहित करए लगैत अछि। नव-नव गप्प मोनमे आबए लगैत अछि। चाहकेँ भफाइत देखि उत्साहसँ मोन भरि जाइत अछि। ई क्रम सालोसँ चलि रहल अछि।

आब तँ भोरक आकर्षणे भए गेल चाह, अर्थात मॉरनिंग टी। चाहक भाफ जेना आगाँ बढ़ि कए कहैत होअए-

“गूड मॉरनिंग।”

चाहक स्वादक वर्णन करब कठिन अछि। ओकर अन्दाज तँ चाह पीलेसँ भए सकैत अछि। चाह पीबू आ टनटना जाउ। कनीकालक लेल चिन्ता-फिकिरसँ मुक्ति भए जाइत अछि, कारण मोन चाहक संगे गप्पमे ओझरा जाइत अछि।

चाह आइ-काल्हिक सभ्यताक अभिन्न अंग बनि गेल अछि। ककरो ओतए जाउ, चाहक आग्रह अबश्य होएत आ जँ से नहि भेल तँ कहक विषय भए जाएत जे चाहो नहि पुछलकैक। कोनो बैसार होउ, ओहिमे चाह अबश्य परसल जाएत।

पहिने गाममे चाहक एतेक प्रचार नहि छल। माने ग्रामीण क्षेत्र एहिसँ बाँचल छल। हमरा गाममे चौकपर दोकान सभपर चाह भेटै आ लोकसभ ओत्तै चाह पीबैत छलाह। गामक अधिकांश घरमे

चाह नहि बनैत छल। मुदा आब समय बदलल। चाह घरक अभिन्न अंग बनि गेल अछि।

बहुत दिन धरि हम चाह नहि पीबैत छलहुँ। बादमे नौकरी पकड़ला पश्चात भोर-साँझ चाह पीबए लगलहुँ। क्रमश: एकर संख्या बढ़ैत गेल। नार्थ ब्लौक, दिल्लीमे पोस्टींगक क्रममे कॉफीक चलन बढ़ल। सस्ता ओ सुलभ रहबाक कारण दिनमे कएक बेर कॉफी भए जाइत छल। संगे टी बोर्डक चाह सेहो उपलब्ध छल। दूध, चीनी, चाह फराक-फराक देल जाइक। अपन रूचिक अनुसार चाह बना लिअ। चीनी कम दिअ, पत्ती कम पड़ि गेल, आदि-आदि झंझटसँ मुक्ति।

हमर एकटा अधिकारी (आइ.ए.एस.) चाहक बड़ सौखीन छलाह। हुनकर कार्यालयमे चाह बनेबाक पूरा सरंजाम रहैत छल। आध-आध घन्टापर ओ चाह पीबथि। हुनका लगमे तरह-तरह केर चाहक पत्ती रहैत छलनि। कोन समयमे केहन चाह बनत सभ तय छल। जे केओ ओहि समयमे पहुँचि गेल, तिनका सेहो ओहि चाहमे स्वत: भागी बनाओल जाइत छल।

कालक्रमे दुपहरियाक बाद चाह पीअब हम छोड़ि देलहुँ। तकर कारण रातिक निन्नक दिक्कत छल। कएक ठाम पढ़लहुँ जे चाहमे कोकीन होइत अछि, जकरा पचबामे बारह घन्टा लागि जाइत अछि आ ओ निन्नमे बाधक भए सकैत अछि। ई बात कतेक सही अछि से नहि कहि, मुदा हम दुपहरियाक बाद चाह पीअब छोड़ि देलहुँ। मुदा भोरमे बहुत पैघ कपसँ चाह पीबए लगलहुँ। एक्के कपमे सामान्य कपक चारि- पाँच कप आबि जेतैक। एकबेर हमर ग्रामीण ओहि कपसँ चाह पीबैत देखि अबाक् रहि गेलाह। मुदा

कालक्रमे चाहक मात्रा कम भए गेल।

चाह कम कए देला पश्चात बैसार सभमे किंवा कोनो आगन्तुक संगे चाह नहि लेब निर्विवाद रूपसँ चर्चाक विषय भए जाइत अछि। "चाह किएक नहि पीबैत छी। कनिक्के पीवि लीअ। चाह तँ नीक चीज छैक।" ककरा-ककरा बुझैबैक जे हम चाह मात्र भोरुके पहरटा मे पीबैत छी। दुपहरियाक बाद नहि पीबैत छी। कारण, निन्नमे दिक्कत भए जाइत अछि।

तकर हम समाधान तकलहुँ । जे केओ चाहक आग्रह करथि से मानि ली। हुनका संगे चाह पीब शुरू करी, आ थोड़े कालक बाद राखि दी। हँ, एहिमे चाहक बरबादी तँ होइत छल । मुदा एकटा सद्य: लाभ होइत छल जे विवादसँ बँचि जाइत। क्रमश: लोकसभ ई बात बुझि गेल आ हमरा संग चाहक आग्रह कम भए गेल। चाहसँ निन्नक कमी होइत अछि की नहि, मुदा हम चाह पीअब कम कए देलहुँ। मुदा कते गोटेकेँ सुतबासँ पूर्व चाहक हिस्सक होइत छनि आ तकरबाद ठाठसँ सुतैत देखैत छिअनि। जे होइ मुदा चाह चाहे थिक।

चूँकि चाहक संख्या कम भए गेल छल तैं हमर प्रयास रहैत छल जे चाह नीक सँ नीक होइक। ताहि लेल हम चारूकात चाहक पत्ती तकैत रहलहुँ। किछु दिन तँ हमर एकटा मित्र सिलीगुड़ीसँ चाह अनैत छलाह, मकाइवाड़ीक चाह, जकर सुगन्ध अद्भुत ओ आनन्ददायी होइत छल। बादमे हुनकर स्थानान्तरण भए गेलनि । ओ चाह ताकबाक हेतु हम कतेको प्रयास केलहुँ। कनाट पलेस दिल्लीक कतेको दोकानपर कतेको प्रकारक चाह अनलहुँ। ओही क्रममे केपचु रेडलेवल चाह तकलहुँ। ओहि चाहक स्वाद आओर

सुगन्ध हमरा सभकेँ पसिंद भेल आ बहुत दिन धरि ओ चाह चलल। बादमे ओहि चाहक अभाव रहए लागल। दोकान सभपर कएक बेर भेटिते नहि छल। ताहि क्रममे लोदी कालोनीक मेन मार्केट स्थित चाहक थौक विक्रेताक पता लागल। ओ चाह विक्रेता योग्य व्यक्ति छलाह आओर मधुबनी सहित इलाकाक आन-आन स्थानक जानकारी सेहो रखैत छलाह। हुनकर दोकानपर चाह कीनबाक क्रममे गप्प-सप्प होइत छल जाहिसँ बुझाएल जे ओ बहुत योग्य व्यक्ति छलाह आओर दुनिआक अनेको देश घुमल छलाह। किछु दिनक बाद जखन हम फेर चाह लेबए ओतए गेलहुँ तँ पता लागल जे ओ गुजरि गेलाह। अचानक हृदयाघात भेलनि आ ओ नहि बँचि सकलाह। एहि घटनासँ बहुत दुख भेल। तकर बादो हम ओहि दोकानपर जाइत रहलहुँ । मुदा बादमे लोदी कालोनीक डेरा छुटलापर ओहिठाम आवागमन कम भए गेल आ तकर बाद केपचु छुटि गेल।

पानिक बाद चाह दुनिआमे सभसँ बेसी प्रचलित पेय अछि। आम धारणा अछि जे चाह कएक प्रकारक बिमारीसँ मुक्ति दए सकैत अछि। कहल जाइत अछि जे चाह रक्त चाप कम करैत अछि। हृदयक हेतु ई नीक अछि। चाह प्रतिआक्सीकारक(एन्टीऑक्सीडेन्ट) सेहो होइत अछि। मुदा चाहपर भेल अनुसन्धानमे पाओल गेल जे एहिमे कीटनाशक औषधिक मात्रा सामान्यत: अधिक रहैत अछि। बहुत रास चाहक पत्तीकेँ नीकसँ धोल नहि जाइत अछि आ डिब्बामे बन्द कए देल जाइत अछि, जाहिसँ कैंसर होएबाक डर रहैत अछि। कएक बेर चाहकेँ सुगन्धित करबाक हेतु हानिकारक रसायन मिला देल जाइत अछि। कएक बेर चाह पुड़ियामे राखल रहैत अछि। ओहि पुड़ियाकेँ

गरम पानिमे डुबा कए चाह बनाओल जाइत अछि। ओहि क्रममे चाहमे प्लास्टिकक पुड़ियासँ हानिकारक तत्व मिलि जाइत अछि। किछु अवगुणक चर्चाक अछैतो चाहक प्रेमीक संख्या अपार अछि।

चाहक समाजिक-सांस्कृतिक योगदान ककरा नहि बुझल अछि। कोनो बैसार बिना चाहक नहि होइत अछि। चाह परक चर्चा तँ प्रसिद्ध भए गेल अछि। चाहक कतेको प्रकार अछि। हरियर, कारी किंवा औषधीय (हर्वल) चाह। अपन-अपन पसिंदक अनुसार लोक एकर चुनाओ करैत अछि। कारी चाह पिलासँ दाँतमे खोधरिसँ बँचाव होइत अछि। हरियर वा कारी चाह पिलासँ हृदयाघातक सम्भावना कम भए जाइत अछि। एक वा दू कप कारी चाह पीबएबला व्यक्तिकेँ टाइप टू मधुमेह होएबाक सम्भावना कम भए जाइत अछि। कारी चाह तनाव बढ़बए बला हारमोन कम करैत अछि। एहिमे विद्यमान अल्कलामाइन एन्टीजेन रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़बैत अछि। कहल जाइत अछि हरियर चाह कारी चाहसँ बेसी गुणकारी होइत अछि। तकर कारण एकर बनबक क्रियामे किण्वन (फरमेन्टेसन- एकटा रासायनिक कृया) नहि होएब थिक। हरियर चाहमे प्रतिआक्सीकारक(एन्टीऑक्सीडेन्ट) आओर पोलीफेनोल अधिक रहैत अछि। कहल जाइत अछि जे चीनक द्वितीय राजा सेन तुँग सन् २७३७ इसा पूर्व चाहक अविष्कार केलनि। उबलैत पानिमे संयोगसँ किछु पत्ती उड़िया कए पड़ि गेलैक। ओ पीवि कए हुनका बहुत नीक स्वाद लगलन्हि।

दुनिआ भरिमे करीब-करीब १५०० प्रकार चाह उपलब्ध अछि जे मूलत: छह प्रकारक पत्तीसँ बनाओल जाइत अछि। अमेरिकामे कारी चाहकेँ लाल चाह कहल जाइत अछि।

१७०० ईस्वीक आसपास ब्रिटेनमे चाह लोकप्रिय पेय भए गेल। अफगानिस्तान आओर इरानक राष्ट्रीय पेय चाह थिक। दुनिआमे सभसँ बेसी चाह आयरलैंडमे पीअल जाइत अछि।

प्रतिवर्ष औसतन तीन कड़ोर टन चाहक उपज होइत अछि। ब्रिटिश इस्ट इण्डिया कम्पनीक प्रभाव बढ़िते भारतमे चाहक व्यापारिक उत्पादन बढ़ल। ओहि समयमे बहुत रास उपजाउ जमीनकेँ चाहक उत्पादनमे लगा देल गेल। टी वोर्ड द्वारा सन् १९२० ईस्वीक आसपास चाहक विज्ञापन जोर-सोरसँ कएल गेल। आइ-काल्हि भारत दुनिआक सभसँ अधिक चाहक उपज करएबला देशमे सँ एक अछि। देशमे उपजल ६० प्रतिशत चाह एतहि खपत भए जाइत अछि। विश्व प्रसिद्ध आसाम आओर दार्जिलीग चाह सेहो अहीठाम उपजैत अछि।

मनीराम देवान (१८०६-१८५८) प्रथम भारतीय चाह उत्पादक छलाह आओर आसामी चाहक व्यापारिक उत्पादनक श्रेय हुनके जाइत अछि। दार्जिलीगमे चाहक उत्पादन१८४१ ईस्वीमे आर्थर कैम्पवेल द्वारा प्रारंभ भेल। ओ सिविल सार्जन छलाह। काठमाण्डूसँ १८३९ ईस्वीमे हुनका स्थानान्तरण दार्जिलीग भए गेल। १८४१ ईस्वीमे ओ चीनक चाहक बीज दार्जिलीगमे लए गेलाह आ क्रमश: ओकर व्यापारिक उत्पादन प्रारंभ भेल।

चाहक स्तुतिमे तरह-तरहक बात कहल गेल अछि। विलियम एवार्ट ग्लैडस्टोनक निम्नलिखित पाँति उद्धरणीय अछि-

"If you are cold, tea will warm you

If you are too heated, it will cool you,

If you are depressed, it will cheer you,

If you are excited, it will calm you."

कहक माने जे चाह सर्वगुणी अछि। चाह कोनो दुख दूर कए सकैत अछि। सुखक वर्षा कए सकैत अछि। The book of Tea केर लेखक जापानी विद्वान आओर कलाकार Okakura Kakuzo कहैत छथि-

"Tea is a religion of the art of life"

कहक माने जे चाहक चुस्कीक संग जीवनक रंग बदलि सकैत अछि। जीवनक समस्याक समाधान भए सकैत अछि।

रूसक विद्वान उपन्यासकार Fyodor Melehalouich Postyevaky कहने छथि-

"I say let the world go to hell, but

I should always have my tea."

जे हेतैक से हेतैक, मुदा पहिने चाह पीवि ली।

उपरोक्त कथानक सभ चाहक उपयोगिताकेँ प्रमाणित करैत अछि। गरीब, धनीक, गाम, सहर सभठाम भोर होइते चाहक सुमार होइत अछि। दरभंगा टावर हो वा तिरुपतिक धर्मशाला, सभठाम भोरे-भोर चाह उपलब्ध भए जाइत अछि।

एतेक प्रसिद्ध आओर सर्वव्यापी चाहक बिक्री केनिहार अधिकांश व्यक्ति गरीब परिवेशसँ अबैत छथि। गाम-घरसँ भागि अपन भविष्यक निर्माण हेतु पैघ सहर जेना- दिल्ली, मुम्बई, अबैत छथि। सालो फुटपाथपर चाह बेचैत छथि । मुदा हुनकर आर्थिक स्थितिमे सुधार नहि भए पबैत अछि। ई अलग बात अछि जे भारतक वर्तमान प्रधानमंत्री बचपनमे चाह बेचैत छलाह । मुदा

एहन भाग्यवान कम होइत छथि। दिल्लीक आइ.टी.ओ.क आसपास रोडक कातमे सालोसँ चाह बेचनिहार श्री लक्ष्मण राव केर कथा फराक अछि। चाहक दोकान करैत ओ लगातार लेखनक काज सेहो करैत रहैत छथि। एखन धरि २४ टा पोथी लिखि चुकल छथि।

चाह बेचनाइक संग अपन लिखल पोथी सेहो बेचैत रहैत छथि। ओ मैट्रिक पास कए चाह बेचनाइ प्रारंभ केलाह। फेर एम.ए. केलाह। निरन्तर लिखैत रहलाह । मुदा चाहसँ हुनक लगाव बनल रहल। मुदा अधिकांश चाह विक्रेता अहिना भाग्यवान नहि होइत छथि। जीवन पर्यन्त चाह बेचैत-बेचैत ओ जहिना-तहिना रहि जाइत छथि।

जीवन अद्भुत अछि। कहि नहि जीव कतए-सँ आएल आ कतए जाएत? कहि नहि पुनर्जन्म होएत कि नहि? स्वर्ग जाएब वा नर्क सेहो ठेकान नहि। आ जौं स्वर्ग चलिए गेलहुँ तँ कहि नहि ओतए चाह हेतैक कि नहि? तैं जाबत जीवन अछि एकरा नीकसँ जीवि लिअ। आनन्द बना लिअ। जँ भए सकए तँ ओरियान कए लिअ जे स्वर्गोमे चाह भेटैक । हम अपन माएक श्राद्धमे चाह-चिन्नीक संग चाह बनेबाक सभ सामग्री जेना गैसबला चूल्हि आदि-आदि, दान कएल। दानक वस्तु हुनका देल जे चाहक प्रेमी छलाह। माए हुनका कतेको बेर ,चाह पीवि लिअ, कहितथि। चाहक एहि आग्रहमे बहुत जान होइत छल। हुनका लग लोकसभ अबैत जाइत रहैत छल। ओ सदिखन प्रसन्न रहैत छलीह, मारफत चाह। अस्तु, हमहु-अहाँ चाहक पक्का ओरियान राखी आ प्रयत्न करी जे स्वर्गोमे चाह भेटैत रहए।

हिन्दू महिलाक सम्पत्तिमे अधिकार

भारतीय समाज मूलत: पुरुष प्रधान रहल अछि। हजारो-हजार वर्षसँ पुरुषकेँ चल आओर अचल सम्पत्तिपर वर्चस्व छल। सम्पत्तिपर अधिकारक मामिलामे पत्नी, बेटी वा विधवा केओ पूर्ण अधिकार सम्पन्न नहि छल। स्त्रीगणकेँ सम्पत्तिपर अधिकार सीमित छल आ जतए कनी-मनी छलैहो, सेहो ओकर जीवन-यापन हेतु जीवनकाल धरि रहैत छल, तकर बाद ओ मूल श्रोतकेँ वापस भए जाइत छल। एहि सभहक मूल उद्देश्य समाजमे स्त्रीगणपर स्वामित्व राखब छल। सम्पत्तिमे अधिकार भेलापर स्त्रीगणकेँ स्वतंत्र आस्तित्व बोध होएत जे तत्कालीन समाजकेँ स्वीकार नहि छल।

हिन्दू संयुक्त परिवारमे एक पूर्वजसँ जन्मल लोकसभ होइत छथि। एहिमे सभहक पत्नी, अविवाहित बेटी सामिल होइत छथि। मुदा हिन्दू संदायदाता (Coparcenary) ओहिसँ बहुत सीमित होइत अछि। ओहिमे बेटा, पौत्र, ओ प्रपौत्र सामिल होइत अछि। हिन्दू उत्तराधिकार (संशोधन) कानून २००५क संशोधनक बाद बेटी सेहो एहिमे सामिल अछि। स्त्री, माए वा विधवा अखनो एहिमे सामिल नहि अछि। व्यक्ति विशेषक हिस्सा कोनो सदस्यक मृत्युसँ बेसी किंवा नव सन्तानक जन्मसँ कम भए सकैत अछि।

संयुक्त परिवारक सम्पत्तिक विभाजनक बादे कोनो हिस्सेदार अपन हिस्साक सम्पूर्ण मालिक होइत अछि। संयुक्त परिवारक सम्पत्ति हिन्दू उत्तराधिकार कानूनक उपज थिक आओर एकर अधिकारीकेँ संदायदाता कहल जाइत अछि।

सम्पत्तिक उत्तराधिकार कानूनमे बारम्बार प्रयुक्त कानूनी शब्दक सही समझ भेलासँ एहि कानूनकेँ बुझबामे सुविधा होएत। अस्तु, संक्षेपमे किछु शब्दक व्याख्या कए रहल छी।

उत्ताराधिकारी (Heir) निर्वसीयत सम्पत्तिमे हकदार पुरुष वा स्त्रीकेँ उत्तराधिकारी कहल जाइत अछि।

निर्वसीयत (Intestate) स्वअर्जित सम्पत्ति किंवा अन्य कोनो प्रकारसँ प्राप्त सम्पत्ति जाहि पर ओहि व्यक्तिक पूर्ण अधिकार हो, केँ ओहि व्यक्तिक मृत्युक बाद हस्तांतरणक दस्ताबेजी व्यवस्था जेना दान (Gift), इच्छा पत्र (Will) नहि केने हो।

पैतृक(संदायदाता) सम्पत्ति (Coparcenary Property) पूर्वजसँ प्राप्त सम्पत्ति जाहि पर अविभाजित हिन्दू परिवारक पटिदार(संदायदाता)क हिस्सा हो।

दस्ताबेजी हस्तांतरण (Testamentary Disposition) एहिमे हस्तांतरणकर्ताकेँ ओकर जीवन भरि सम्पत्तिपर अधिकार बनल रहैत अछि आओर ओकर मृत्युक बाद ओहि दस्ताबेजी व्यवस्थाक अनुसार सम्पत्तिक हस्तांतरण होइत अछि, जेना दानमे देल गेल सम्पत्ति।

सन् १९३७ सँ पूर्व स्त्रीगणक सम्पत्तिमे अधिकारक सम्बन्धमे कोनो स्पष्ट व्यवस्था नहि छल। एहि तरहक विवाद भेलापर स्थानीय परम्पराक अनुसार मामिला तय होइत छल। सन् १९३७ मे पहिल बेर हिन्दू महिलाक सम्पत्तिमे अधिकार कानून लागू भेल। एहि कानून द्वारा विधवाकेँ ओकर पतिक सम्पत्तिमे सीमित अधिकार देल गेल। सन् १९३८ क संशोधन द्वारा ओहि सीमित अधिकारकेँ

आओर क्षीण करैत कृषि भूमिसँ विधवाक अधिकार समाप्त कए देल गेल। एहि कानूनक अनुसार विधवा संयुक्त परिवारक सम्पत्तिमे अपन पतिक हिस्साक मालिक तँ भए जाएत । मुदा ओकर मृत्युक बाद ई सम्पत्ति ओकर उत्तराधिकारीकेँ नहि हेतैक, अपितु, अन्तिम पुरुष मालिक वा स्त्रीधनक मामिलामे अन्तिम महिला मालिकक उत्ताधिकारीकेँ हस्तान्तरित भए जाएत।

हिन्दू उत्तराधिकार कानून १९५६ मूलत: हिन्दूक निर्वसीयत सम्पत्तिमे उत्तराधिकार निर्धारित करबाक हेतु भारतीय संसद द्वारा पारित भेलाक बाद १७ जून १९५६ क राष्ट्रपतिक स्वीकृतिक बाद लागू भेल। निर्वसीयत सम्पत्तिक माने ओहि सम्पत्तिसँ अछि जकर मालिक सम्पत्तिमे पूर्ण अधिकारक अछैत कोनो दस्ताबेजी हस्तान्तरण बिना केने स्वर्गवासी भए जाइत छथि। एहन सम्पत्ति उपरोक्त कानूनक सूचीमे वर्ग ए मे देल गेल उत्तराधिकारी (माने बेटा, बेटी, विधवा पत्नी, माए आओर एहि वर्गमे उल्लिखित अन्य व्यक्ति) मे बरोबरि-बरोबरि कए बाँटल जाएत। वर्ग एकक उत्तराधिकारीक अभावमे वर्ग दू, तकरो अभावमे क्रमश: मृतक पुरुष रक्त सम्बन्धी अन्यथा महिला रक्त सम्बन्धी (Cognate) केँ ओ सम्पत्तिक अधिकार भए जाइत अछि।

सन् १९३७क कानून द्वारा सीमित अधिकारक धारणा हिन्दू उत्तराधिकार कानून १९५६ द्वारा समाप्त कए देल गेल। सम्पत्तिमे हिन्दू महिलाक अधिकारक क्षेत्रमे ई एकटा प्रगतिगामी प्रयास छल। एहि कानूनकेँ लागू भेलापर हिन्दू महिलाकेँ ओकर सम्पत्तिमे पूर्ण स्वामित्व प्राप्त भेल। उपरोक्त कानूनकेँ धारा १४ द्वारा महिलाक सम्पत्तिमे पूर्ण अधिकारक अयोग्यता समाप्त कए देल

गेल आओर ओकर सीमित अधिकारकेँ पूर्णत: मालिकाना हकमे बदलि देल गेल। कानूनमे उपरोक्त परिवर्तन भूतप्रभावी भेल। एहि तरहें हिन्दू महिलाक सम्पत्तिमे अधिकारसँ सम्बन्धित विद्यमान समस्त, नियम, कानून ओ परंपराकेँ समाप्त कए ई सुनिश्चित कएल गेल जे कोनो प्रकारक परंपरा, वा व्यवहारिक अवधारणाक कारण सम्पत्तिमे हुनकर अधिकारपर ग्रहण नहि लगाओल जा सकत।

एहि तरहेँ हिन्दू महिलाकेँ प्राप्त सम्पत्तिपर (उपरोक्त कानूनक धारा १४क अनुसार) पूर्ण अधिकार भए जाइत अछि। एहि तरहें प्राप्त सम्पत्ति महिला द्वारा निर्वसियत रहि गेलापर उपरोक्त कानूनक धारा १५ आओर १६ द्वारा हस्तान्तरित होइत अछि, जाहिमे ओकर बेटा आओर बेटी आओर पतिकेँ बरोबरि-बरोबरि हक भेटैत अछि।

उपरोक्त कानूनक धारा १४ हिन्दू महिलाक सम्पत्तिमे सीमित अधिकारकेँ पूर्ण अधिकारमे परिवर्तित करैत अछि। पतिसँ प्राप्त सम्पत्तिकेँ बेचि सकैत अछि आ क्रेताकेँ ओहि सम्पत्तिमे पूर्ण स्वामित्व प्राप्त भए जाइत अछि। पहिने ओ सम्पत्तिकेँ मात्र परिवारिक आवश्यकता आओर पतिक धार्मिक अनुष्ठानक हेतु बेचि सकैत छल। धारा १४ मे सम्पत्तिक विस्तारसँ व्याख्या भेल अछि। एहिमे उत्तराधिकार, परिवारिक विभाजन उपहार किंवा कोनो प्रकारसँ प्राप्त चल आओर अचल सम्पत्ति सामिल अछि। बिना वसीयतक मृत्यु भेलापर एहि कानून द्वारा बेटाक माए, अतिरिक्त विधवा, बेटीकेँ संयुक्त परिवारक सम्पत्तिमे अधिकार प्राप्त भेल।

यद्यपि १९५६क कानून द्वारा हिन्दू महिलाक सम्पत्तिक अधिकारमे निश्चित रूपसँ बढ़ोत्तरी भेल आ एहि तरहेँ कहल जाए तँ ई एकटा क्रान्तिकारी प्रयास छल, मुदा बेटीक मामिलामे ई कानून बहुत हितकारी नहि छल। किछु राज्य एहि विषयमे अलग कानून बना कए बेटीक अधिकार देलक । मुदा ई सर्वव्यापी नहि छल।

हिन्दू उत्तराधिकार (संशोधन) कानून २००५क अनुसार बेटीकेँ पिताक सम्पत्तिमे बेटा जकाँ बरोबरिक हिस्सा होएत, माएक सम्पत्तिमे सेहो हिस्सा होएत। उपरोक्त संशोधनसँ निम्नलिखित व्यवस्था भेल-

१. बेटा जकाँ बेटी संयुक्त परिवारक सम्पत्तिक हिस्सेदारी होएत।

२. ओकर अधिकार ओहिना होएत जेना बेटा भेने रहैत।

३. बेटे जकाँ बेटिओकेँ ओहि सम्पत्तिसँ जुड़ल जिम्मेदारी होएत।

४. बेटाक बरोबरि बेटीक हिस्सा निर्धारित होएत।

हिन्दू उत्तराधिकार कानूनमे २००५क संशोधनक बाद संयुक्त परिवारक सम्पत्तिक बँटवारा आओर ओहिमे बेटी सभहक हिस्सेदारी लए कए यत्र-तत्र जबरदस्त विवाद प्रारम्भ भेल। कारण कानूनसँ अधिकार भेटलाक अछैत एकर समाजिक स्वीकृतिमे प्रश्नचिन्ह लागल रहल। नैहरसँ सम्बन्ध खराप नहि हो, तेँ कतेको बेटी अपन अधिकारक बलिदान कए देलनि, मुदा एहनो बहुत रास मामिला उठल, जे बेटी सभ अपन अधिकारक बहाली हेतु न्यायालयक शरणमे चलि गेलीह।

न्यायालयमे मामिला जेबाक कएटा कारण छल। केओ

कहलक जे सन २००५क कानूनी संशोधनक लाभ ९ सितम्बर २००५ क बाद जन्मल कन्याकेँ भेटतैक। ककरो अनुसार ई कानून १९५६ सँ लागू होएत। देशक विभिन्न उच्च न्यायालय उपरोक्त विवादस्पद विषय सभपर अलग-अलग फैसला देलक। अन्ततोगत्वा, ई मामिला भारतक उच्चतम न्यायालयमे पहुँचि गेल।

उच्चतम न्यायालयक न्यायमूर्ति ए.आर.दवे आओर न्यायमूर्ति ए.के. गोयलक संयुक्त पीठ १६ अक्टूबर २०१५क अपन फैसलामे उत्तराधिकार कानून उपरोक्त विवादक पटाक्षेप करैत कर्णाटक उच्च न्यायालयक फैसलाकेँ पलटि देलक। कर्णाटक उच्च न्यायालय फैसला देने छल जँ पिताक देहान्त ९ सितम्बर २००५ सँ पहिने भए गेल तखनो बेटीकेँ ओकर सम्पत्तिमे बेटाक बरोबरिक हिस्सा भेटत। मुदा उच्चतम न्यायालय एकरा पूर्णत: निरस्त कए देलक। प्रकाश आओर अन्य बनाम फुलवती आओर अन्यक मामिलामे उच्चतम न्यायालय व्यवस्था देलक जे उत्तराधिकार कानूनमे २००५क संशोधन भूतप्रभावी नहि अछि। ओ कानूनमे उपरोक्त संशोधन लागू होएत वशर्ते ओहि दिन पिता ओ पुत्री दुनू जीबैत रहल हो।

१६ अक्टूबर २०१५ क उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रकाश आओर अन्य बनाम फुलवती आओर अन्यक मामिलाकेँ मूल निर्णय बिन्दु छल जे २००५ क सम्पत्तिमे अधिकारक कानूनक संशोधन भूतप्रभावी अछि की नहि? विभिन्न उच्च न्यायालय एहि विषय परस्पर विरोधी आओर भिन्न-भिन्न मत व्यक्त केने छल। एहि मामिलामे फुलवती उत्तराधिकारमे ओकर पिता द्वारा प्राप्त सम्पत्तिमे हिस्साक मांग केने छल। १८ फरवरी १९८८क ओकर

पिताक देहान्त भए गेल।

न्यायालयमे विचाराधीन मामिलामे संशोधन करैत फुलवती संशोधित कानूनक अनुसार पिताक सम्पत्तिमे हिस्साक मांग केलक। कर्णाटक उच्च न्यायालय निर्णय देलक जे चूँकी मामिला न्यायालयमे विचाराधीन छल, अस्तु, एहि कानूनकेँ आगूसँ लागू होएबाक अछैत, एकर लाभ फूलवतीकेँ भेटत। उच्च न्यायालयक एहि फैसलाक चुनौती उच्चतम न्यायालयमे कएल गेल-

१. एहिमे फुलवतीकेँ हिस्सा मात्र पिताक स्वअर्जित सम्पत्तिमे होएत।

२. फुलवतीक पिताक देहान्त २००५ क संशोधित कानून लागू हेबासँ पूर्व १८ फरवरी १९८८ क भए गेल, तेँ फुलवतीकेँ एहि कानूनकेँ लागू होएबाक समय पैतृक सम्पत्तिक वारिस नहि मानल जा सकैत अछि।

३. संशोधित कानून एहि मामिलामे लागू नहि होएत। संशोधित कानून लागू हेबासँ पूर्व हिन्दू उत्तराधिकार कानूनक धारा ६ केर मुताबिक बेटीकेँ एहन सम्पत्तिमे अधिकार नहि होएत।

उच्चतम न्यायालय अपन फैसलामे स्पष्ट केलक जे कानूनकेँ प्रथम दृष्ट्या पढ़लासँ स्पष्ट होइत अछि जे ई संशोधन कानून लागू होएबाक तिथिसँ लागू होएत, कारण एहिमे कतहु एहन संकेत नहि अछि जाहिसँ एकरा भूतप्रभावी कएल जाए। अतएव संदायदाता सम्पत्तिमे बेटीक हिस्सा तखने भेटत जखन कि कानून लागू होएबाक दिन यानी ९ सितम्बर २००५ क पिता ओ पुत्री दुनू जीवित हो।

अन्य प्रमुख न्यायिक फैसलामे उच्चतम न्यायायल द्वारा सन्

२०१२ मे तय गंदूरी कोटेश्वरम्मा वनाम च्रकी यनादिमे कहल गेल जे-

नव धारा ६ संयुक्त परिवारक सम्पत्तिमे ९ सितम्बर २००५ वा ओकर बाद पुरुष वा महिलाक अधिकारमे समानता अनलक अछि। एहि कानून द्वारा बेटीक पक्षकेँ मजगूत केलक ,एकर बाद बेटी स्वयंमे बेटा जकाँ पैतृक सम्पत्तिमे हिस्सेदार बनल। एहि तरहें ९ सितम्बर २००५ सँ बेटी पैतृक सम्पत्तिमे बेटा जकाँ उत्तराधिकारी भेल आओर ओकरा बराबर हक सेहो भेटल। उपरोक्त मामिला नीचला आदालतमे विचारणीय रहिते २००५क संशोधन भेल। नीचला अदालत संशोधित कानूनकेँ लागू करैत बेटीक बेटाक बरबैर हिस्सा निर्धारित केलक जकरा उच्च न्यायालय पलटि देलक। अन्ततोगत्वा, मामिला उच्चतम न्यायालय पहुँचल, जतए बेटीक जीत भेल आओर बेटीकेँ बेटाक बरोवरि हिस्सा भेटल।

माननीय उच्चतम न्यायालय न्यायमूर्ति अरुण मिश्रक अध्यक्षतामे तीन जजक बेंच विनीता शर्मा बनाम राकेश शर्मा(सिभिल अपील नंबर(डायरी नंबर 32601/2018)मे ११ अगस्त २०२०क निर्णय देलक जे बेटीक जन्म चाहे कहिओ भेल होइक, भने ओकर पिता ९.९.२००५सँ पहिने मरि गेल होथि, ओकरा बेटे जकाँ संयुक्त परिवारक पैतृक संपत्तिमे बरोबरिक हिस्सेदार मानल जाएत । सारांश जे माननीय उच्चतम न्यायालय उपरोक्त निर्णय द्वारा प्रकाश आओर अन्य बनाम फुलवती आओर अन्यक मामिला मे देल गेल निर्णय जे बेटीकेँ उपरोक्त अधिकार हेतु ९ सितम्बर २००५ क पिता आ पुत्री दुनूकेँ जीबित रहब जरूरी

छल, तकरा हटा देलक। एहि तरहेँ पूर्वमे माननीय उच्चतम न्यायालय आ अन्य न्यायालय द्वारा एहि मामिलामे देल गेल विरोधाभाषी निर्णयसँ उत्पन्न दुविधाकेँ समाप्त कए संयुक्त परिवारक पैतृक संपत्तिमे बेटीक अधिकारकेँ स्पष्ट रूपसँ सुरक्षित कए देलक ।

एकटा एहने मामिलामे सुजाता शर्मा वनाम मनु गुप्ता आओर अन्यमे दिल्ली उच्च न्यायालय दिल्ली द्वारा व्यवस्था देल गेल जे संयुक्त परिवारमे जँ बेटी सभसँ पैघ जीवित हिस्सेदार अछि तँ ओ कर्ता भए सकैत अछि। माननीय न्यायालयक कहब जे उपरोक्त संशोधित कानून बेटीकेँ ओ सभ कानूनी हक दए दैत अछि जे बेटाकेँ पहिनेसँ प्राप्त अछि। मा. उच्च्तम न्यायालय त्रिभुवन दस हरि भाई तामबोली वनाम गुजरात राजस्व अधिकरण आओर अन्यक मामिलामे निर्णय दए चुकल अछि जे संयुक्त परिवारक वरिष्ठतम सदस्य कर्ता होएत। अस्तु, बेटीकेँ कर्ता होएबाक क्रममे कोनो भांगठ नहि अछि।

सन् २००५क हिन्दू उत्तराधिकार कानूनमे संशोधनक बाद परिवारक बेटीकेँ पैतृक सम्पत्तिमे हिस्सेदारी तँ भेटि गेल, मुदा ओहि संशोधनक आधारपर प्राप्त अधिकारकेँ कतेको प्रकारसँ पुत्र लोकनि द्वारा चुनौती देल गेल। समाजिक स्तरपर ओकर पुरजोर विरोध देखबामे अबैत अछि। हालत ओहिना अछि जेना दहेज विरोधी कानूनक अछि। कानूनक अछैत दहेज कोनो रूपे समस्त भारतमे चलिए रहल अछि। कानून ईहो अछि जे व्यस्क युवक, युवती स्वेच्छासँ बिआह कए सकैत छथि, मुदा कतेको ठाम एकर

विरोध एहि हद धरि होइत अछि जे युगल जोड़ीक हत्या धरि भए जाइत अछि। कहबाक माने जे कानूनमे बदलाव संगे समाजिक सोचमे परिवर्तन जरूरी अछि, जन जागरण जरूरी अछि। सही मानेमे महिला तखने अधिकार सम्पन्न भए सकैत छथि।

जमीनक किछु समाजमे खास कए दिल्लीक किंवा आन-आन पैघ सहरक आसपासक क्षेत्रमे बहुत प्रमुखता अछि। जमीन परिवारक प्रतिष्ठासँ जुड़ल अछि। जमीनपर पुरुषक वर्चस्व कम होइ, भाएक संगे बहिनो एकर हिस्सेदार हो, ई बात लोककेँ पचि नहि रहल अछि।

जहिना प्रेमी लोकनिक खिलाफ खाप पंचायत काज करैत अछि ओएह हाल पैतृक सम्पत्तिमे अपन हिस्साक मांग केलापर बेटी सभहक भए रहल अछि। हुनकर गप्प छोड़ू, माए, बाप सेहो ओकर संग नहि दैत छथि। एहन कतेको दृष्टान्त आएल अछि जे जमीनमे अपन हिस्साक मांग करिते बेटीक गाममे प्रवेशो कठिन भए जाइत अछि, भाए सभ गप्प छोड़ि दैत छैक आ माए-बापक मुँह लटकि जाइत अछि, जे ओकर बेटी जमीनमे अपन हक मागि कए ओकर सभहक नाक कटा रहल अछि।

बेटी अपन हक नहि माँगि सकए ताहि लेल कतेको पिता अपन जीबैत अपन सम्पत्ति पोता किंवा पुत्रकेँ हस्तान्तरित कए दैत छथि। ततबे नहि, भाए सभ दबाव बना कए बेटीसँ बहिनसँ ओहि सम्पत्तिसँ अपन अधिकार छोड़बाक हेतु राजीनामा लिखा लैत छथि। सारांश जे कानूनसँ प्राप्त अधिकारकेँ समाज देबए-मे पुरजोर विरोध कए रहल अछि। हुनका लोकनिक धारणा अछि जे बेटीक देल गेल दहेज उत्तराधिकारमे प्राप्त होमए-बला सम्पत्तिक

एवजमे पर्याप्त क्षतिपूर्ति अछि। एक सर्वेक अनुसार मात्र १३% बेटी अपन पैत्रिक सम्पत्तिमे अधिकार लए पबैत छथि। सम्पूर्ण देशमे लागू २००५ क कानूनसँ पूर्व पाँच राज्य (ऑन्ध प्रदेश, कर्णाटक, महाराष्ट्र, तामिलनाडू आ केरल)मे बेटीकेँ पैत्रिक सम्पत्तिमे पहिनेसँ अधिकार प्राप्त अछि।

परिणामत: बिहार आओर मध्य प्रदेशक तुलनामे आन्ध्र प्रदेशमे चारिगुणा अधिक महिलाकेँ उत्तराधिकारमे सम्पत्ति प्राप्त भेल। आन-आन राज्य सभहक तँ ई हाल अछि जे ६९% महिलाकेँ एहन कोनो जानकारी नहि छैक जे एहि कानूनसँ लाभान्वित होइत पैतृक सम्पत्तिमे हकदार भेल हो। जकरा ककरो एहि कानूनक जानकारी छैहो, सेहो जमीनमे अपन हक नहि मंगै छथि।

भारत वर्षमे दुर्गाक रूपमे स्त्री शक्तिकेँ सम्मानित कएल गेल अछि। जगत जननीक रूपमे हुनकर आराधना कएल जाइत अछि। सत्य ई अछि जे बेटी काल्हि जा कए माए बनैत अछि ओहि रूपमे ओ ओहि परिवारक सृजन करैत अछि, पालन करैत अछि, पल प्रतिपल रक्षा करैत अछि।

हमर संस्कृति इतिहासक कोन कोनामे जा कए पुरुष वर्चस्वक प्रधानताक स्वीकार करैत स्त्रीगणके द्वैम दर्जा स्वीकार केलक, ई एकटा दुखद आओर विचारणीय प्रसंग अछि। मुदा देरियेसँ सही, समाज जागि जाएत से उमीद अछि आ कानून द्वारा देल पैतृक सम्पत्तिमे उत्तराधिकारक सहर्ष पालन भए सकत। यत्र नारीपुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता, तखने सार्थक भए सकत।

कानूनी आतंकवाद
(भारतीय दण्ड संहिता धारा- ४९८ 'ए', IPC 498 'A')

परंपरागत रूपसँ परिवारिक जीवनमे स्त्री अपन पतिक सहायकक रूपमे काज करैत छल। समस्या तखन बढ़ि गेल जखन पति-पत्नीक आपसी सम्बन्धक कटुता परिवारक चौकैठसँ आगू बढ़ल। सहैत-सहैत महिलाक जीवन व्यर्थ ओ दुष्कर होमए लागल, आ ओहि परिस्थितिसँ मुक्तिक एकमात्र उपाय आत्महत्या बुझि पड़ए लगलैक। कतेको महिला द्वारा एहि तरहेँ आत्महत्या केलाक बाद समाजक आत्मा आइपीसी- धारा- ४९८ 'ए' सन हिंसक कानूनक जन्म देलक।

एहि कानूनकेँ लागू भेलाक बाद गलत वा सही महिला द्वारा आरोपक प्राथमिकी थानामे दर्ज भेला पश्चात पति आओर ओकर परिवार–अर्थात् वयोवृद्ध माता, पिता आओर छोट-छोट बच्चा सभ सेहो–पुलिसक कृपापर एहि हद धरि निर्भर भए जाइत छलाह जे जखन हुनका पुलिस चाहत तँ जेलमे बन्द कए दैत।

सन् १९८३ मे फौजदारी कानूनमे संशोधन कए भारतीय दण्ड संहिता (आई.पी.सी.)मे अनुच्छेद ४९८ 'ए' जोड़ल गेल जाहिमे मूलत: निम्नलिखित प्रावधान छल-

१. जखन कखनो पति वा ओकर सम्बन्धी महिलाक संग क्रुड़ता करत तँ अपराधीकेँ तीन साल धरिक जेल होएत, संगे जुर्माना सेहो भए सकैत अछि।

एहि अनुच्छेद हेतु क्रुड़ताक अर्थ अछि-

(क) जानि कए कएल गेल एहन व्यवहार, जाहिसँ सम्बन्धित

महिला आत्महत्या करबाक स्थितिमे पहुँचि जाए किंवा महिलाकेँ शारीरिक वा मानसिक स्वास्थ्यकेँ गंभीर क्षति पहुँचैक।

(ख) सम्बन्धित महिला वा ओकर निकट संबंधीसँ सम्पत्ति वा कोनो मूल्यवान वस्तुक गैर कानूनी मांग करब आ एहन मांग नहि पूरा भेलापर वा ताहि हेतु प्रतारणा करब।

भारतीय दण्ड संहिताक धारा ४९८ 'ए' संज्ञेय, गैर जमानती आओर अशमनीय अपराध थिक। अपराध संज्ञेय आओर असंज्ञेयमे विभाजित कएल गेल अछि। कानूनी तौरपर संज्ञेय अपराधक जॉच करब आओर सिकाइति दर्ज करब पुलिसक कर्तव्य थिक। ४९८ 'ए' एकटा संज्ञेय अपराध थिक। अपराध जमानती वा गैर जमानती भए सकैत अछि। ४९८ 'ए' गैर जमानती अछि। एकर माने भेल जे न्यायिक दण्डाधिकारी (मजिस्ट्रेट) केँ जमानत देबाक किंवा आरोपित व्यक्तिकेँ न्यायिक वा पुलिस हिरासतमे पठा देबाक अधिकार छैक। चूँकि ४९८ 'ए' अशमनीय (non compundable) अपराधक श्रेणीमे अबैत अछि, अस्तु, याचिकाकर्त्ता एकरा वापस नहि लए सकैत छथि। (मुदा जँ सम्बन्धित पक्ष मामिलाकेँ आपसमे सोझराबक लेल न्यायालयसँ आवेदन करैत छथि, तखन न्यायालय मामिलाकेँ वापस लेबाक अनुमति प्रदान कए सकैत अछि।)

कानूनक उपरोक्त प्रावधानमे क्रुड़ताक प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितिमे कएल गेल अछि-

एहन व्यवहार जाहिसँ महिला आत्महत्या हेतु प्रेरित हो।

एहन व्यवहार जाहिसँ महिलाक जीवन, शरीर वा स्वास्थ्यपर गंभीर समस्या उत्पन्न भए जाइक।

महिला वा ओकर सम्बन्धीक सम्पत्ति लेबाक उद्देश्यसँ कएल गेल प्रतारणा।

महिला वा ओकर सम्बन्धी द्वारा आओर पैसा वा सम्पत्तिक हिस्साक मांग नहि मानबाक कारण प्रतारणा।

यद्यपि एहि कानूनकेँ लागू करबाक उद्देश्य विवाहित महिलाकेँ दहेज-लोभी पति आओर ओकर परिवार द्वारा प्रतारणासँ रक्षा करब छल, मुदा व्यवहारमे एकर ततेक दुरुपयोग भेल जे उच्चतम न्यायालय सुशील कुमार शर्मा बनाम भारत सरकारक मामिलामे आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' केँ कानूनी आतंकवादक रूपमे निन्दा केलक।

उपरोक्त कानूनसँ पुलिस द्वारा लोकक मौलिक अधिकारक उल्लंघनक सम्भावना बढ़ल। एहिसँ निर्दोष लोक कानूनी घनचक्करक सिकार भेल आओर मजबूर भए कए सालक-साल कोट-कचहरीक दरबज्जा खटखटबैत रहल। ततबे नहि, ऊपरसँ पुलिसक धनबल, राजनीतिक हस्तक्षेप, किंवा समाजमे प्रभावशाली वर्गक लिप्तता सेहो ताहि रूपे काज करए लागल जे पति आओर ओकर परिवारक भगवाने मालिक..!

कतेको मामिलामे एहि कानूनक दुरुपयोग विवाहित महिला द्वारा बर पक्षसँ अधिक-सँ-अधिक पैसा ओसूलब, किंवा एहन परिस्थिति निर्माण करब रहैत अछि जाहिसँ जान छोड़ेबाक लेल बर पक्षक लोक महिला पक्षक अनुचितो मांग मानए लेल बेबस भए जाइत छथि।

दहेज निषेध अधिनियम १९६१क धारा २ केर अनुसार दहेज लए कए माने बिआहसँ पूर्व, बिआहक समय वा बिआहक बाद

कहिओ देल गेल सम्पत्ति मूल्यवान धरोहरसँ अछि-

(१) जे बिआहक एक पक्ष द्वारा दोसरकेँ देल जाइत अछि।

(२) माता-पिता वा कोनो आन व्यक्ति द्वारा देल गेल।

मुदा मुस्लिम बिआह कानूनक अधीन देल गेल मेहर एहिमे सामिल नहि अछि। बिआहक समय कोनो पक्ष द्वारा देल गेल नगदी, गहना, कपड़ा वा अन्य कोनो वस्तु दहेज नहि मानल जाइत अछि बसर्ते ई वस्तु सभ बिआहक सर्तक अधिन नहि देल जाइत हो।

एहिमे मूल्यवान धरोहरक अर्थ भारतीय दण्ड संहिता (आइपीसी)क धारा ३०क अनुकूल अछि।

आइपीसी- धारा ४९८ 'ए' मात्र पत्नी, पुतोहु वा ओकर सम्बन्धी द्वारा लागू कएल जा सकैत अछि। उच्चतम/उच्च न्यायालय बारम्बार ई स्वीकार केलक अछि जे कानूनक उपरोक्त धाराक अधीन अधिकांश मामिला झूठ रहैत अछि। अधिकांश मामिलामे एकर दुरुपयोग वैवाहिक जीवनमे विवादक स्थितिमे पत्नी वा ओकर निकट सम्बन्धी द्वारा पति वा ओकर निकट सम्बन्धीकेँ ब्लैकमेल करबाक हेतु कएल जाइत अछि। एहन परिस्थितिमे सिकाइतिकर्ता प्रचुर मात्रामे पैसाक उगाहीक प्रयास करैत छथि।

एहन अनगिनित उदाहरण सामने आएल अछि जाहिमे बिना जाँच-पड़ताल केने पुलिस बुजुर्ग माता-पिता, अविवाहित बहिन, गर्भवती भौजी आओर छोट-छोट बच्चाकेँ गिरफ्तार कए लेलक। एहि तरहक मामिलामे निर्दोष लोक मानसिक यातना आओर उत्पीड़नक सिकार भए जाइ छथि। सामान्यत: एहन मोकदमा ५-६ साल चलैत अछि आ मात्र २० प्रतिशत लोककेँ सजा होइत

अछि। एहनो भेलैक जे जेलसँ छुटि कए पति वा आरोपित माता-पिता आत्महत्या कए लेलक।

चन्द्रभान बनाम राज्यक मामिलामे दिल्ली उच्च न्यायालय कहलक जे एहिमे कोनो संदेह नहि अछि जे अधिकांश एहन सिकाइति छोट-छोट बातपर आपसी अहंक टकरावक कारण तामसमे कएल जाइत अछि जकर सभसँ गंभीर खामियाजा परिवारक छोट-छोट बच्चा सभ भोगैत अछि। अस्तु, न्यायालय पुलिसकेँ निम्नलिखित आदेश देलकः-

प्राथमिकी (एफआइआर) हरकठ्ठे (रूटिनमे) पंजीकृत नहि कएल जाए। पुलिसक प्रयास होएबाक चाही जे मामिलाकेँ गंभीर जॉच-पड़तालक बादे प्राथमिकी दर्ज करए। आइपीसी- धारा ४९८ ‘ए’/४०६ क अन्तर्गत कोनो मामिला बिना डीसीपी (उपायुक्त पुलिस) आओर अतिरिक्त डीसीपीक आदेशक दर्ज नहि होएत। प्राथमिकी (पंजीकृत करबासँ पूर्व आपसी समझौताक सम्भव प्रयास कएल जाए आ जौं समझौताक कोनो आश नहि रहि जाइक तँ सभसँ पहिने स्त्रीधन आ दहेजक वस्तुकेँ सम्बन्धित महिलाकेँ वापस कराओल जाए।

मुख्य अभियुक्तक गिरफ्तारी एसीपी (सहायक आयुक्त) अथबा डीसीपी (उपायुक्त)क स्वीकृतिसँ मामिलाकेँ पूरा जाँच-पड़तालक बादे कएल जाए।

संपार्श्वक अभियुक्त (जेना सासु-ससुर)क मामिलामे मिसिल मे डीसीपीक स्वीकृति जरूरी अछि।

एहि मामिलामे न्यायालय ईहो आदेश देलक जे महिलाक उत्थान हेतु कार्यरत स्वयंसेवी संगठन आओर अन्य कानूनी संस्था

सभ एहि बातक पूरा प्रयास करए जे सम्बन्धित पक्ष सभकेँ आपसी सहमति बनि जाइक। मामिलाकेँ न्यायालय पहुँचलाक बादो एहि बातक लेल न्यायालय प्रयास करए। चाही तँ ई जे बिना बाहरी हस्तक्षेपक सम्बन्धित पक्ष मामिलाकेँ आपसमे सोझरा लेथि। टी.आर. रमैयाक मामिलामे मद्रास उच्च न्यायालसँ एहि तरहक निर्देश दैत स्पष्ट केलक जे एहन मामिलामे पुलिसिया कार्रवाइ छान-बीनक बादे कएल जाएत।

ललिता कुमारी बनाम राज्यक मामिलामे उच्चतम न्यायालय एहि बातपर विचार कए रहल अछि जे एहन मामिला उपस्थित भेलापर पुलिस द्वारा प्राथमिकी दर्ज करब अनिवार्य अछि किंवा ताहिसँ पहिने प्राथमिक पूछताछ जरूरी अछि। चूँकि ई मामिला विचराधीन अछि अस्तु, विभिन्न उच्च न्यायालय द्वारा देल गेल आदेश/निर्णयक सन्दर्भमे पुलिस कार्रवाइ करैत अछि।

एहि कानूनसँ भयक वातावरण तँ बनल ,मुदा एकर दुरुपयोग बेसी होमए लागल। कनिको निर्दोष लोककेँ लोभ, किंवा प्रतिशोधक आवेशमे फँसा देल गेल। कएक बेर तँ पति आओर ओकर परिवारकेँ एहि लेल फँसा देल गेल जे सम्बन्धित विवाहित महिला ओहि वैवाहिक जीवनसँ हटि कए प्रेमीक संग बिआह करए चाहैत छलीह।

कतेक बेर एहनो भेल जे पति-पत्नी बादमे अपन-अपन गलतीक अहसास करैत सोलह करए चाहैत छल, मुदा ताधरि अपराधिक मोकदमाक जालवृत्तिमे फँसि चुकल छल, मुदा ओहिसँ निकलत केना? कारण ई कानून अशमनीय अपराध (Non Compoundable) अछि माने सिकाइतिकर्ता स्वयं चाहिओ कए

एकरा वापस नहि लए सकैत अछि। एहि सभ परिस्थितिमे मामिला कतेको बेर उच्च न्यायालय आओर उच्चतम न्यायालय पहुँचल जाहिठाम विचारणीय प्रश्न छल जे आखिर एहि तरहक मामिला चलबैत रहबाक की औचित्य अछि, खास कए जखन कि पति-पत्नी वापसमे बातकेँ सलटि कए आपसी सहमति बना सुखी परिवारिक जीवन जीबए चाहैत होथि? आखिर एहन मोकदमा जँ चलितो रहल तँ एहिमे सँ किछु निकलत नहि, कारण सिकाइतिकर्ता अपन बातसँ मुकरि जाएत। मामिला कमजोर पड़ि जाएत, चाहे निरस्त भए जाएत। मुदा एकर दोसरो पक्ष छल जे कतेको बेर समझौताक आडम्बर कए गरीब आओर कमजोर महिलाकेँ अपन सिकाइति वापस लेबाक हेतु अनुचित दबाव बनाओल जा सकैत अछि। मामिला वापस लैतो फेरसँ यंत्रणाक नबीनीकरण भए सकैत अछि।

एहि सभ प्रश्नपर विभिन्न न्यायालयमे बारंबार विचार भेल। बिआह सम्बन्ध विच्छेदक प्रक्रियामे लम्बित मामिलामे दुनू पक्षकेँ मौका पबैत आपसी सहमति बनएबाक अवसर न्यायालय प्रदान करैत अछि।

तहिना आइपीसी ४९८ 'ए'सँ सम्बन्धित अपराधिक मामिलामे यदि दुनू पक्ष आपसमे बातकेँ सोझराबए चाहैत अछि, सलटि लेबय चाहैत अछि तँ उच्च न्यायालय सीआरपीसीक धारा ४८२क अधीन अपन विशेषाधिकारक प्रयोग करैत मामिलाकेँ रद्द कए देबाक आदेश दए सकैत अछि। उपरोक्त विषयसँ सम्बन्धित मामिला उच्चतम न्यायालयक समक्ष जीतेन्द्र रघुवंशी आओर अन्य बनाम बबीता रघुवंशी आओर अन्यमे आएल। (जाहिमे पूर्वमे उच्चतम न्यायालय द्वारा बी.आर. जोशी बनाम हरियाणा सरकारक

निर्णयकेँ बहाल राखल गेल।) जाहिमे कहल गेल छल जे सीआरपीसीक धारा ४८२ क अधीन उच्च न्यायालय न्यायक हितमे अपराधिक प्रक्रिया वा प्राथमिकी रद्द कए सकैत अछि आ सीआरपीसीक धारा ३२० एहिमे बाधक नहि होएत।

प्रीति गुप्ता बनाम झारखण्ड सरकारक मामिलामे उच्चतम न्यायालय आइपीसी- धारा ४९८'ए' केर अधीन कएल गेल सिकाइति दुरुपयोग आओर बढ़ैत ममलाकेँ ध्यानमे रखैत केन्द्र सरकारकेँ उपरोक्त कानूनक समीक्षा करबाक हेतु कहलक।

तदनुसार भारत सरकारक आग्रहपर विधि आयोग एहि विषयमे गंभीरतासँ विचार करैत अपन २४३म प्रतिवेदनमे संस्तुति केलक जे एहि अपराधकेँ न्यायालयक आज्ञासँ शमनीय अपराध (Compoundable) बना देबाक चाही । मुदा आयोग एहि अपराधकेँ गैरजमानती बनओने राखए चाहलक ताकि समाजक दूरगामी कल्याणकेँ ध्यान रखैत एहि कानूनक धार भोथ नहि होइक।

आयोगक कहब जे गिरफ्तारी सम्बन्धी लागू कानूनी निर्देश आओर मामिलाक गहन छानबीन केलासँ आओर हिंसा सन गंभीर परिस्थितियेमे गिरफ्तारी केलासँ एहि कानूनक दुरुपरोगसँ बँचल जा सकैत अछि।

जुलाइ २०१४ मे न्यायमुर्ति सीके प्रसाद आओर पी.सी. घोषक उच्चतम न्यायालयक बेंच द्वारा देल गेल निर्णयमे स्पष्ट कएल गेल जे धारा ४९८ 'ए' केर अधीन बिना मजिस्ट्रेटक आदेशक गिरफ्तारी नहि होएत। उच्चतम न्यायालयक कहब छल जे अधिकांश एहन मामिलामे महिला एहि कानूनक दुरुपयोग करैत

पति, सासु, ससुर आदिसँ बदला लैत छथि। एहि तरहक प्रकरणमे बहुत कम लोककेँ सजा होएबाक बातक ध्यानमे रखैत माननीय न्यायालय राज्य सरकार सभकेँ आदेश देलक जे पुलिस क्रीमिनल प्रोसीड्योर कोड (सीपीसी) क धारा ४१मे वर्णित मानकक अनुसरण करए आओर अपवादिक मामिलामे अत्यावश्क भेने आरोपित व्यक्तिक गिरफ्तारी करए। सम्बन्धित मजिस्ट्रेट सीपीसीक धारा ४१ क अधीन पुलिस द्वारा प्रेषित प्रतिवेदनक विवेचना करैत व्यक्तिगत रूपसँ सन्तुष्ट भेलाक बाद आओर तकर औचित्यक लिखित आधार बनबैत गिरफ्तारीक स्वीकृति प्रदान करए।

उपरोक्त मामिलामे फैसला दैत माननीय न्यायाधीशगण कहलथि जे सन् २०१२ मे दू लाख व्यक्ति एहि कानूनक अन्तर्गत गिरफ्तार भेलाह। जे सन् २०११क संख्यासँ ९.४ प्रतिशत अधिक अछि। जाहिमे लगभग एक चौथाइ (४७९५१) महिला छलीह। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे आरोपित पतिक माए, बहिनकेँ सेहो गिरफ्तार कए लेल गेल। उपरोक्त कानूनक तहत आरोप पत्रक दर ९३.७ प्रतिशत अछि जखन कि मात्र १५ प्रतिशत लोककेँ अन्ततः दण्डित कएल जा सकल।

माननीय उच्चतम न्यायालयक कहब छल जे गिरफ्तारी व्यक्तिगत स्वतंत्रताक हनन तँ करिते अछि, संगे ई अपमान-जनक सेहो अछि। स्वतंत्रताक छह दशक बादो पुलिस एखन धरि उत्पीड़नक साधनक रूपमे जानल जाइत अछि, जनताक मित्र तँ नहिए। अतएव उच्चतम न्यायालय गिरफ्तारीमे सावधानीसँ निर्णय लेबाक हेतु मजिस्ट्रेट लोकनिकेँ अगाह केलक।

इन्दरराज मलिक आओर अन्य बनाम श्रीमती सुमिता

मलिकमे दिल्ली उच्च न्यायालय व्यवस्था केलक जे आइपीसी- धारा ४९८ ‘ए’ दहेज निवारण कानूनक धारा ४ सँ एकदम अलग अछि, कारण दहेज कानूनमे मात्र दहेजक मांगसँ अपराध भए जाइत अछि। जखन कि आइपीसी- धारा ४९८ ‘ए’ मे पति तथा पतिक परिवार द्वारा दहेजक मांग संगे-संग क्रुड़ताक व्यवहार जरूरी अछि।

माननीय उच्चतम न्यायालय राजेश शर्मा आओर अन्य वनाम उत्तर प्रदेश राज्य आओर अन्यक मामिलामे आदेश देलक अछि जे प्रत्येक जिलामे ओहि जिलाक जिला न्यायाधीश एकटा समिति बनओताह जे आईपीसीक धारा 498Aक अधीन पुलिस वा मजिस्ट्रेटक ओहिठाम कएल गेल समस्त सिकाइतिक जाँच करत आओर एक मासक अन्दरमे अपन रिपोर्ट देत। तकर बादे कोनो अभियुक्तक गिरफ्तारी भए सकैत अछि। (CA No 1265 OF 2017 arising out of SLP (Crl) NO 2013 of 2017) उपरोक्त निर्णय २७ जुलाइ २०१७ क माननीय न्यायाधीश श्री आदर्श कुमार गोयल आओर श्री उदय उमेश ललितक खण्डपीठ द्वारा देल गेल। माननीय उच्चतम न्यायालयक मुख्य न्यायाधीशक अध्यक्षतामे गठित बृहत्तर बेन्च उपरोक्त निर्णय पर रोक लगा देने अछि आओर एहि विषयपर दोबारा बिचार करत।

आधुनिकीकरण, शिक्षा, वित्तीय सुरक्षा आओर व्यक्तिगत स्वतंत्रतामे वृद्धिक संग कट्टरपंथी महिला सभ आइपीसी- धारा ४९८ ‘ए’कें एकटा हथियारक रूपमे दुरुपयोग कए रहल छथि। कानून बनलाक कतेको सालक बादो एहि कानूनक उचित समीक्षा नहि भेल जाहि कारणसँ एकर दुरुपयोगक मामिलामे लगातार वृद्धि भेल

आ निर्दोष आओर व्यर्थमे फँसाओल गेल पति तथा ओकर सम्बन्धी त्राहिमाम कए रहल छथि।

विभिन्न न्यायालय, गैर सरकारी संगठन सभ एहि विषयपर लगातार मंतव्य दए रहल छथि, कानूनमे संशोधनक हेतु सेहो चर्चा होइत रहैत अछि। मुदा एहिठाम ईहो महत्वपूर्ण अछि जे एक पक्षीय संशोधनसँ कानून बनाबक मूल उद्देश्ये नहि नष्ट भए जाए। एहिमे कोनो दू मत नहि जे कतेको मामिलामे विवाहित महिलाकेँ जीवन ओ सम्मानपर संकट ओकर सासुरमे उत्पन्न भए जाइत अछि आ ओ सभ किछु सहैत अछि। सहैत-सहैत कतेको महिला तंग भए आत्महत्या लेल सेहो विवश भए जाइत छथि। अस्तु, एहि कानूनक दुरुपयोगसँ उत्पन्न समस्याक समाधान हेतु बीचक रस्ता निकालबाक चाही जाहिसँ निर्दोष लोककेँ फँसाओल नहि जाइक आ दोषीकेँ उचित दण्डो होइक आ समाजमे सम्मानक संग महिलो जीबथि।

अपन समाजमे कहबी छलैक जे जतए कनिआँक डोली अबैत ओतहिसँ अर्थी उठत। मुदा आब युग बदलि गेल अछि। निष्ठाक समस्त जिम्मा मात्र महिलाक नहि भए सकैत अछि। लोक परिवर्तित परिस्थितिसँ जँ सामंजस्य नहि केलक तँ ई अरारि कतए जा कए थम्हत तकर कोनो ठेकान नहि। शिक्षित बर-कनिआँ सब रोजगार हेतु विश्व भरिमे पसरि गेल छथि। गाम-घरक बात गामेमे सलटा लेब से आब तथ्यपरक नहि रहि गेल। अपनो समाजमे बिआह विच्छेदक चलन बढ़ि गेल अछि। कानूनक रस्ता अख्तियार करैत कतेको परिवार नष्ट भए रहल अछि।

प्रेम ओ सिनेहपर आधारित सम्बन्धकेँ कानूनक कुरहरिसँ

चोट देल जाएत तँ परिणाम की होएत? परिवारिक मर्यादाक रक्षाक हेतु सन्तानक भविष्य बँचेबाक लेल आओर जीवनमे सुख-शान्तिक स्थापना हेतु आवश्यक अछि जे हम सभ भारतीय संस्कारकेँ कटकटा कए पकड़ि ली आ पकड़ने रही। एहि तरहें त्यागक गरिमा जखन जीवनमे लक्षित होएत, सभ अपने ठीक भए जाएत। त्येन त्येक्तेन भुंजीथा:।



दृष्टान्त

पृथ्वीपर एकसँ एक आश्चर्यजनक घटना घटैत रहैत अछि। मनुक्खक पुरुषार्थक परिणाम थिक जे लोक चन्द्रमापर पहुँचि गेल, तरह-तरहक यंत्रक निर्माण करैत सौंसे दुनिआक स्वरूपकेँ बदलि देलक। घरे-बैसल लोक अमेरिका, इग्लैंडक लोकसँ गप्प कए सकैत अछि, ओकरा देखि सकैत अछि। किछु दिन पूर्व धरि साइत जाहि बातक कल्पनो नहि केने होएत से सभ साकार भए रहल अछि। एहन बहुत रास लोक भेलाह अछि जे घोर अभाव आओर कष्टमे अपन संकल्प शक्तिसँ अतुलनीय काज कए गेलाह। एहने किछु व्यक्तिक चर्चा हम एतय कए रहल छी।

१. दशरथ माँझी-

बिहारक गेहलौर पहाड़ी क्षेत्रमे रहनिहार दशरथ माँझीक पत्नीकेँ पहाड़ीपर चढ़ैतकाल चोट लागि गेलनि। डाक्टरसँ देखेबाक हेतु दशरथ माँझीकेँ ७० किलोमीटर पहाड़ीक चारूकात चलए पड़लैक। एहि बातसँ क्षुब्ध भए ओ संकल्प केलथि जे पहाड़ीकेँ आर-पार आवागमन हेतु रस्ता बनाओल जाए। हुनका लगमे तीनटा बकड़ी छल। तकरा बेचि कए छोट-मोट औजार कीनलाह आ असगरे पहाड़ीपर रस्ता बनबएमे लागि गेलाह। १९६० इस्वीसँ १९८२ वाइस सालक निरन्तर प्रयासक बाद ओ एहि काजमे सफल भेलाह। भोरकए खेतमे हरवाही करथि, आ तकर बाद दुपहर राति धरि पहाड़ीकेँ तोड़ि कए रस्ता बनाबक प्रयास करथि। पहाड़ीक चट्टानपर जारनि जरा कए ओकरा गरमा दैत छलाह। फेर ओहिपर पानि ढारि दैत रहथिन जाहिसँ चट्टानमे टूटन भए जाइत छल। तकर

बाद ओ अपन छोट-मोट औजार सभहक सहायतासँ रस्ता बनाबथि।

बिहार सरकार हुनका राजकीय सम्मानक संग अन्तिम संस्कार केलक। आब ओ पूरा दुनिआमे पहाड़ी बाबाक रूपमे विख्यात भए गेल छथि। शुरूमे सभ दसरथ माँझीकेँ पागल कहइ। मना करैक जे ओ काज होमए-बला नहि अछि, मुदा ओ अड़ल रहलाह आ मात्र हथौरी आ छेनीसँ पहाड़ी काटि कए एतेकटा रस्ता बनाबएमे सफल भेलाह।

२. श्री लक्ष्मण राव-

दिल्लीक आइ.टी.ओ.क पास चाह बेचनिहार श्री लक्ष्मण रावक कथा ककरो हेतु प्रेरणादायी अछि।

श्री रावक जन्म २२ जुलाई १९५४क महाराष्ट्रक अमरावतीमे एक साधारण किसान परिवारमे भेल। १९६३ इस्वीमे मुम्बईसँ ओ हिन्दी माध्यममे मैट्रिक पास केलाह। बचपनमे श्री राव एकबेर पानिमे डुबि गेलाह। ओहि घटनाक दर्दनाक अनुभवकेँ लिपिवद्ध करबाक हुनका जबरदस्त इच्छा भेलनि आ ओ लिखए लगलाह। परिस्थितिवश ओ मैट्रिकसँ आगाँ नहि पढ़ि सकलाह। किछु दिन स्थानीय कपड़ा मीलमे काज केलाह।

तकर बाद ४० रूपैआक संग सन् १९६५ इस्वीमे भोपाल चल गेलाह, जतए किछु दिन मजदूरी केलाह । मुदा मोनमे किछु करबाक छटपटाहट हुनका भोपाल छोड़ि दिल्ली लए अनलक। ३० जुलाई १९६५ क ओ दिल्ली आबि गेलाह। रवि दिनकेँ दिल्लीक दरियागंज जा कए ओ पुस्तक आनथि महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, कार्ल मार्क्स, सेक्सपियर आदिक पुस्तक ओ अध्ययन

केलाह। क्रमश: ओ दिल्ली विश्वविद्यालय पत्राचार पाठशालासँ एम.ए. पास केलाह। राव अपन प्रथम उपन्यास 'नयी दुनिआ की नयी कहानी' १९६९ इस्वीमे लिखलाह । मुदा केओ प्रकाशक ओकरा प्रकाशित करबाक हेतु तैयार नहि भेल। अन्ततोगत्वा, ओ स्वयं अपन पुस्तकक प्रकाशन करए लगलाह।

लक्ष्मण रावजी तकर बाद एक-सँ-एक पुस्तक लिखैत गेलाह। हुनक लेखनीसँ प्रभावित भए इन्दिरा गाँधीजी आओर भूतपूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिलजी हुनकासँ भेँट केलकनि। हुनका इन्द्रप्रस्थ साहित्य अकादेमी पुरस्कार सेहो भेटि चुकल अछि।

लक्ष्मण रावजीक पोथी सभ दिल्लीक पुस्तकालय आओर स्कूल सभमे भेटैत अछि। एखन धरि ओ पचीसटा पुस्तक लिखि चुकल छथि। तैओ गुजाराक हेतु ओ चाह-पानक दोकान ओहिना कए रहल छथि। हुनक ई दशा समाजमे रचनात्मकताक अवमूल्यन दिस इंगित करैत अछि।

३. श्री हरेकला हजब्वा-

मंगलुरूसँ २५ किलोमीटर दूरीपर अवस्थित नया पण्डु गामक रहनिहार 'हरेकला हजब्वा'क त्याग ओ उपलब्धिक खिस्सा सुनि केओ सोचबाक हेतु विवश भए जाएत। ओ अनपढ़ छल। फल बेचि कए गुजर करैत छलाह। एक दिन एकटा विदेशी हुनकासँ फलक दाम अंग्रेजीमे पुछलक। ओ पढ़ल नहि छल। अंगरेजीमे पुछल गेल प्रश्नक उत्तर नहि दए सकल। आ ओ ग्राहक चलि गेलैक। एहि बातक ओकरा मोनमे बहुत कचोट भेलैक। ओ ठानि लेलक जे अपन गाममे स्कूल स्थापित करत जाहिसँ केओ गामक बच्चा ओकरा सन अनपढ़ नहि रहि जाए।

फलक बेचबासँ ओकरा रोजाना लगभग १५० रूपैआ आमदनी होइत छल। ओहिमे सँ किछु पाइ बँचा कए तथा किछु कर्जा लए कए स्कूलक हेतु जमीन कीनलक आ क्रमशः ओहिपर मकान बना कए स्कूलक स्थापना भेल। शुरूमे प्राइमरी स्कूल छल जकरा बादमे बढ़ा कए हाई स्कूल बनाओल गेल।

क्रमशः ओकर एहि उपलब्धिक चर्चा बढ़ए लगलैक। सरकार, समाजिक संगठन आ कतेक दानी लोकनि ओकरा मदति करबाक हेतु आगू अएलाह। अखबारमे हजब्बाक काजक समाचार छपल। तकर बाद सरकार एक लाख रूपैआक अनुदान ओहि विद्यालयक घर हेतु देलक। स्थानीय समाचार पत्र 'कन्नद प्रभा' हुनका वर्ष पुरुष घोषित केलक आओर एक लाख रूपैआक पुरस्कार देलक।

तकर बाद कतेको लोक दान देबए लगलाह। सी.एन.एन. आइ.बी.एन. टेलीवीजन चैनल हुनका रियल हिरो पुरस्कार देलक। हजब्बा ओहि स्कूलक विकास समितिक उपाध्यक्ष छथि । परन्तु, कुर्सीपर नहि बैसैत छथि आओर स्कूलमे स्वयं सफाइ करैत छथि।

हजब्बा आब अपन गाममे एकटा कालेजक स्थापना करए चाहैत छथि। एखन गामक बच्चाकेँ कालेजमे पढ़ए लेल सात किलोमीटर दूर स्थित सरकारी कालेजमे जाए पड़ैत छैक। बहुत गोटेकेँ प्राइभेट कालेजमे खर्चा कए पढ़ए पड़ैत छैक। तकर समाधान हेतु ओ गाममे कालेजक निर्माणमे लागल छथि।

४. श्री पोपतराव पवार-

पोपतराव पवारक नाम, सुनने छी की? ५५ वर्षीय श्री पवार त्रियारे पवाह (अहमदनगर, महाराष्ट्र)क सरपंच थिकाह। ओ

असगरे सुखार ग्रस्त गामकेँ पानि, बिजली, शिक्षा आ बेहतर स्वास्थ्य सेवासँ हरल-भरल गाममे बदलि देलाह। ई गाम आत्मवेत्ता आओर स्वशासनक सिद्धान्तरपर काज करैत अछि। सन् १९७२ मे ओ सहरसँ स्नातकक परीक्षा पास कए गाम अएलाह। गाममे ओ सभसँ शिक्षित व्यक्ति छलाह। ग्रामीणक आग्रहपर ओ सरपंचक चुनाओ लड़लाह आ जीति गेलाह। तकर बाद ओ नाना प्रकारक विकास काजमे लागि गेलाह।

सभसँ पहिने ओ गामक स्कूलमे मैट्रिक धरिक पढ़ाइक व्यवस्था केलनि जाहिसँ गामक धिया-पुताकेँ शिक्षाक स्तरमे सुधार भेल। तकर बाद ओ गाममे पानिक सुविधा हेतु ४००० खधिया खुनि कए जल संरक्षणक व्यवस्था केलनि। गाममे नल-कूपक स्थान इनारक उपयोग जोड़ पर देलनि, जाहिसँ भूजलक स्तर बनल रहए। एहन फसल सभ अपनाबक प्रयास भेल जाहिमे अधिक-सँ-अधिक पैसाक आमदनी होइक आ कम-सँ-कम पानिक प्रयोजन।

१० सालक अवधिमे ओ करीब १० लाख वृक्ष लगबओलाह जाहिसँ गामक आबो-हवा बदलि गेल।

सन् १९९५ इस्वीमे आदर्श ग्राम योजना लागू भेलापर रन्हू गामकेँ आदर्श ग्राममे विकसित करबाक हेतु चुनाओ भेल। आई हिवारे बजार गाम प्राय: देशक सभसँ विकसित गाममेसँ अछि। एकर श्रेय कोनो सरकारी प्रयत्नकेँ नहि, अपितु ग्रामसभाकेँ अछि जे ग्राम संसदक नामसँ जानल जाइत अछि, आ जकरा गामक विषयमे समस्त निर्णय लेबाक अधिकार छैक।

बेहतर शिक्षा, सुद्धढ आर्थिक स्थितिक संग निरन्तर विकास कए ई गाम एकटा उदाहरण भए समाजक सम्मुख प्रस्तुत अछि।

एहि गाममे महिला पुरुखसँ अधिक छथि। परिवार नियोजन आओर अन्य प्रकारक आधुनिक चिकित्सा सुविधा सहज सुलभ अछि।

गाममे निरंतर विकासक परिणाम भेल जे एकरा कतेको प्रकारक पुरस्कार भेटल आओर देश विदेशमे एकर चर्चा होमए लागल। एहि गामकेँ १९९५ इस्वीमे आदर्श ग्राम पुरस्कार, २०००मे यशवंत गाम पुरस्कार, २००७ इस्वीमे निर्मल ग्राम पुरस्कार, २००७ मे वनग्राम पुरस्कार, आओर २००७ मे राष्ट्रीय जल पुरस्कार भेटल।

गामक विकास आओर सुविधा देखि गामसँ पलायन कए चुकल लोकसभ फेरसँ गाममे वापस आबि बसि रहल छथि।

एक व्यक्तिक त्याग आ कर्मठतासँ कतेक परिवर्तन भए सकैत अछि, पोपतराव पवार तकर एकटा ज्वलन्त उदाहरण छथि। जे गाम दुर्भिक्ष आ दरिद्रतामे डुबल छल, ताहिमे साठिटा करोड़पति रहि रहल छथि।

५. श्री आलोक सागर-

आइ.आइ.टी. दिल्लीसँ इन्जिनियर (एम.टेक) श्री आलोक सागर अमेरिकाक हाउसटन विश्वविद्यालय टेक्साससँ पी.एच-डी. केला पश्चात आइ.आइ.टी. दिल्लीमे प्राध्यापकक काज प्रारम्भ केलाह। रिजर्व बैंक ऑफ इन्डिया (आर.बी.आई.) क भूतपूर्व गवरनर श्री रघुरमन राजन हुनकर विद्यार्थी छलखिन।

१९८२ इस्वीमे सागरजी नौकरी छोड़ि जमीनी स्तरपर समाज सेवा करबाक उद्देश्यसँ मध्यप्रदेशक वेतुल आओर होसंगावाद जिलामे स्थानीय आदिवासीक सेवामे लागि गेलाह। एहि लेल ओ आदिवासीक अधिकारक हेतु संघर्षरत समाजिक संगठन-

श्रमिक आदिवासी संगठनसँ जुड़ि गेलाह। पछिला ३५ वर्षसँ ओ लगातार आदिवासी लोकनिक सेवा कए रहल छथि, मुदा ककरो कहिओ अपन परिचए नहि देलखिन । पछिला विधान सभा चुनाओक समय जिला प्रशासन हुनका जिला छोड़बाक आदेश देलक तखन हारि कए हुनका अपन परिचए देबए पड़ल।

सागरजी आदिवासी सभकेँ कम मूल्यपर बीआ देल करथि जाहिसँ श्रृष्टिक रचनात्मकताक प्रचार, विकास होइक। ओ मध्य प्रदेशक पेतुल जिलामे पचास हजार वृक्ष लगओलाह। सागरजी समाजसेवक एकटा सही पहचान छथि। एहि देशमे राजनीतिक सभ समाज सेवोक नामपर झूठ-मूठक क्रिया-कलाप करैत रहैत छथि। जिनका योग्यता नहि अछि सेहो झूठ डिग्री बना कए समाजमे प्रचार करैत रहैत छथि जे ओ कतेक विद्वान छथि। मुदा सागरजीकेँ देखू। अद्भुत शैक्षणिक उपलब्धि आओर उच्च स्तरीय नौकरीकेँ तिलांजलि दए आइ कतेको वर्षसँ समाजक निम्नतम स्तरक लोक सभहक कल्याणक हेतु काज कए रहल छथि।

आलोक सागरजी कोचमू गाममे रहैत छथि। ओहि गाममे ७५० आदिवासी छथि। कोचमू गाम दूर-दराजमे अवस्थित अछि। ओहि गाममे बिजली नहि अछि। ओ सरल, साधारण जीवन जीबैत छथि। हुनका लगमे तीनटा कुर्ता रहैत छैक आ साइकिलपर गामे-गाम घुमैत रहैत छथि। ओ स्थानीय भाषा सहित अनेको भाषाक जानकार छथि। हुनकर कहब अछि जे भारतीय समाजमे लोक सभकेँ कतेको गंभीर समस्या सभ घेरने अछि। मुदा लोकसभ तकर समाधान करबाक बजाए अपन मेधाक प्रर्दशन अपन डिग्रीसँ करैत रहैत छथि। त्याग ओ तपस्याक एहन प्रतिमूर्ति एहि युगमे भेटब

असम्भव नहि तँ बहुत कठिन अवश्य अछि।

६. श्री जादव पायंग-

१६ सालक बएसमे जादव पायंग (मोलाइ) ध्यान आस-पास मरि रहल साँप सभपर गेल जे जंगलक अभावमे एहि दुर्दशामे छल। चिड़ै-चुनमुनीक घटैत संख्या आओर अन्य जंगली जीव-जन्तुक पराभवसँ ओ बहुत दुखी भए गेलाह। ई गप्प सन् १९७९क थिक। एहि विषयपर ओ अपन आस-पासक लोक सभसँ गप्प केलाह । मुदा केओ ध्यान नहि देलक। मुदा हुनका चैन नहि भेलनि। ओ ठानि लेलनि जे ओहि क्षेत्रमे नवीन जंगलक निर्माण करताह।

ब्रह्मपुत्र नदीक कछेरमे तथा बीरान क्षेत्रमे नित्य नव गाछ रोपए लगलाह। नित्य प्रति ओ ई काज करए लगलाह। क्रमश: गाछक संख्या बढ़ए लागल आ ओहिमे पानि देब एकटा गंभीर समस्या भेल जाइत छल। तकर उपाय ओ ई केलनि जे प्रत्येक गाछक ऊपर पानिसँ भरल डाबा टाँगि कए ओहिमे भूर कए दथि, जाहिसँ निरन्तर टिपिर-टिपिर पानि खसि ओहि गाछकेँ सिंचित करैत छल।

सन् १९८० मे गोलाघाट जिला जोरहाट अवस्थित अरूना चपोरीक २५० एकड़ क्षेत्रमे वन विभागक वृक्षारोपण योजनामे सामिल भए गेलाह आ पाँच वर्ष धरि ओहिमे काज करैत रहलाह। पछाइत ओ ओहीमे आओर गाछ सभ लगबैत रहलाह जाहिसँ ओहि क्षेत्रमे एकटा नीक जंगलक निर्माण भए सकए।

आसामक मिसिंग जनजातिक श्री पायंग जंगलमे अपन पत्नी ओ तीनटा बच्चाक संग एकटा खोपड़ीमे रहैत छथि। हुनकर मित्र सभ नीक-नीक स्थानपर सहरमे चलि गेलाह। उत्तम शिक्षा आ

उत्तम पद प्राप्त केलाह। परन्तु, ओ जंगलमे वृक्षारोपणमे मगन रहलाह। हुनकर कहब जे पुरस्कार ओ प्रतिष्ठा ओ अर्जित केलाह ओएह हुनक सम्पत्ति अछि आ ओहीसँ हुनका आनन्द भेटैत अछि। २२ अप्रैल २०१२ क जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालयक पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा पुरस्कृत भेलाह। ओहि विश्वविद्यालयक उपकुलपति हुनक नाम भारतक फोरेस्टमैन रखि देलथि। अक्टूबर २०१३ मे भारतीय वन प्रवन्धन संस्थान द्वारा आयोजित वार्षिकोत्सवमे सेहो हुनका पुरस्कृत कएल गेल।

एहि आदमीक इच्छा शक्ति देखि कए केओ व्यक्ति गुम पड़ि सकैत छथि। असगरे तीस सालक अविरल साधना द्वारा एक बीरान १३६० एकर क्षेत्रमे जंगल निर्माण कए देलक। एहि जंगलकेँ ओकर उपनामपर 'मोलाइ' कहल जाइत अछि।

मोलाइ जंगलमे वंगालक बाझ, भारतीय हरिण, गेड़ा तथा सैकड़ो हाथी रहैत अछि। एकर ३०० एकड़ क्षेत्रमे बाँस लागल अछि। एक आदमीक अविरल साधनासँ धारक कछेरपर दुनिआक सभसँ पैघ जंगलक निर्माण सम्भव भेल।

अस्तु, संसार एक-सँ-एक वीर पुरुषसँ भरल अछि जे तमाम कष्ट ओ अभावक अछैत किछु कए गुजरलाह आ आबए बला पीढ़ीक हेतु एकटा दृष्टान्त ठाढ़ कए देलाह। कठिनाइ आओर संघर्ष हुनकर प्रयत्नकेँ करवनो कमजोर नहि कए सकल। आइ ओएह सभ समाजक सामने एकटा दृष्टान्त बनि चुकल छथि। मानव सभ्यताक इतिहासमे प्रकाश स्तंभ जकाँ ओ सदिखन जगमगाइत रहताह, स्मरणीय रहताह।





लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र

पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र

माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी

बएस : ६९ वर्ष

पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह

मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी

वृत्ति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)

स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)

शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक

प्रकाशित कृति :

मैथिलीमे:-

१. ‘भोरसँ साँझ धरि’ (आत्म कथा), २. ‘प्रसंगवश’ (निवंध),

३. ‘स्वर्ग एतहि अछि’ (यात्रा प्रसंग), ४. ‘फसाद’ (कथा संग्रह)

५. `नमस्तस्यै’ (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध)

७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह)

११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)

१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

In English: -

1. The Lost House (Collection of short stories)

2. Life is an art

हिन्दी में –

१.न्याय की गुहार(उपन्यास)

(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ किनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com

ब्लोग : mishrarn.blogspot.com

Mobile -9968502767

एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर

क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.

Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।